



कर्नाटक सरकार

समाज विज्ञान

पाठ्यपुस्तक

हिंदी माध्यम

SOCIAL SCIENCE

Hindi Medium

7

सातवीं कक्षा

भाग - II

कर्नाटक पाठ्यपुस्तक संघ (रजि.)

6 वा क्रॉस, मल्लेश्वरम्, बेंगलूरु - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्रम संख्या	इतिहास	पृष्ठ संख्या
15	सामाजिक और धार्मिक सुधार	1
16	भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (सा. श. 1857-58)	13
17	स्वतंत्रता आंदोलन (सा. श. 1885-1919)	21
18	कर्नाटक एकीकरण और सीमा विवाद	60
19	कर्नाटक का समाजमुखी आंदोलन	69
20	कर्नाटक- आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन	79
21	विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति	85
	नागरिक शास्त्र	
22	न्यायपालिका	95
23	सुरक्षा बल	101
24	भारत और उसके पड़ोसी देश	110
25	विश्वसंस्था	122
	भूगोल शास्त्र	
26	ऑस्ट्रेलिया	131
27	अंटार्कटिका	149



अध्याय 15 सामाजिक और धार्मिक सुधार

पाठ परिचय

पाश्चात्य शिक्षा का अनुष्ठान ने भारतीयों में नई जागृति पैदा की। भारतीय अपने समाज के न्यून्यताओं को जानकार उन्हें सुधारने का मार्ग ढूँढने लगे। इस दिशा में संघ संस्थाओं की स्थापना करके समाज सुधारने में योगदान दिये। सन् 19 वीं शताब्दी के सामाजिक और धार्मिक सुधारकों के कार्यों को हम जानेंगे।

सामर्थ्य

1. 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज की जागृति के कारण और चिंतनशील व्यक्तियों के प्रयत्नों को समझना।
2. समाज में जागृति पैदा करने में संघ संस्थाओं तथा सुधारकों की देन को समझना।
3. सामाजिक सुधार आंदोलन के परिणामों को समझना।

आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा के परिणामस्वरूप भारत में नई जागृति हुई। पाश्चात्य की संस्कृति, वेशभूषा, चाल-चलन, समाज, धार्मिक विचार, विश्वास और अंग्रेजों के सामाजिक आदर्शों का प्रभाव भारतीयों पर पड़ा। भारतीय, विशेष रूप से पाश्चिमात्यो के वैज्ञानिक विचार, मानवतावाद, कार्य सिद्धांतों से प्रभावित हुए। इससे उपनिवेश भारत में नवोदय का जन्म लिया। समानता के आशयों को प्रचार करने की नई चेतना ही नवोदय आंदोलन का मूल कारण बनी। इसे सामाजिक और धार्मिक आंदोलन भी कहते हैं। यह आंदोलन दलितों तथा स्त्रियों का सामाजिक समानता के लिए ज़ोर दिया। अंग्रेजी शिक्षा पाने से भारतीयों का विमोचन होगा, ऐसे बताते हुए अंग्रेज भारत पर उपनिवेश सिद्धांत का बोझ डालते ही गए।

ब्रह्म समाज सा. श. 1828

आधुनिक काल के भारतीय समाज में जागृति पैदा करने वालों में राजा राममोहन राय प्रमुख है। रवींद्र नाथ टैगोर ने इन्हें भारत के 'नवोदय का पितामह' कहा। जब भारतीय समाज में नई चेतना भरने के उद्देश्य से राजा राममोहन राय ने सा. श. 1814 में 'आत्मीय सभा' नामक संस्था की स्थापना की। सा. श. 1819 में इस संस्था को बंद कर दिया गया। बाद में सा. श. 1828 में 'ब्रह्म सभा' की स्थापना की। अगले साल उसे ब्रह्म समाज नाम दिया। राजा



राजा राममोहन राय

राममोहन राय पूर्व तथा पश्चिमी विचारों के समन्वय के प्रतिनिधि थे। सती पद्धति, जाति पद्धति, मूर्ति पूजा, बहुपत्नित्व, बाल विवाह आदि सभी तरह के अंधविश्वासों का ब्रह्मसमाज खूब विरोध किया। राजा राममोहन राय और उनके साथी अर्थहीन सतिपद्धति का निर्मूल करने के लिए अंग्रेज सरकार को निवेदन किया। इसलिए उस समय के गवर्नर जनरल विलियम बेंटिंक ने सतिपद्धति को गैरकानूनी घोषित कर दिया। (सा. श. 1829) पाश्चात्य शिक्षा का प्रतिपादन करके अमानवीय पद्धतियों का निर्मूलन करना चाहता था। विधवा विवाह, एक देवता के पक्ष लेनेवाले राम मोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' पत्रिका द्वारा सामाजिक सुधार आंदोलन प्रारंभ किया।

वैचारिकता के द्वारा हिंदू धर्म को परिशुद्ध करने का प्रयत्न राजा राममोहन राय ने किया। अपने विचारों के समर्थन के लिए पाँच उपनिषदों को संस्कृत से बंगाली में भाषांतर किया।

राजा राममोहन राय अंग्रेजी शिक्षा का प्रतिपादन करने वालों में प्रथम है। अपने खर्च से अंग्रेजी स्कूल चलाते थे। उन्होंने वेदांत कॉलेज की भी स्थापना की। राजा राममोहन राय भारतीय पत्रिकोद्यम के आद्य प्रवर्तकों में एक है। उन्होंने कई नियतकालिक को प्रकट किया।

जीवन भर सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया। उनके समाजमुखी कामों को देवेंद्रनाथ टैगोर और केशवचंद्र सेन आगे बढ़ाए।

आपको ज्ञात रहे : सा. श. 1829 में मुगल बादशाह ने राम मोहन राय को राजा नामक उपाधि दी थी।

प्रार्थना समाज: (सा. श. 1867)

प्रार्थना समाज का आत्माराम पांडुरंगा ने प्रारंभ किया। यह ब्रह्मासमाज के बाद मुंबई प्रदेश में प्रारंभिक प्रमुख संस्था थी। बाल वागले, एन.जी. चंदावर्कर, एम. जी. रानाडे, आदि इसके प्रमुख नायक थे। विधवा विवाह, अंतर्जाति विवाह, स्त्रियों का स्थान मान का उन्नतिकरण तथा शोषित वर्गों की अभिवृद्धि की तरफ उन्होंने ज्यादा जोर दिया। इसके अलावा निर्गतिक और अनाथों के लिए आश्रम का स्थापित किया। विधवाओं के उद्धार के लिए शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की।



महादेव गोविंद रानाडे

सत्यशोधक समाज - (सा. श. 1873)



महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले (सा. श. 1827-1890) से महाराष्ट्र में ब्राह्मणेतर आंदोलन प्रारंभ हुआ। महाराष्ट्र के निम्न वर्गों में जागृति पैदा करने के लिए उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। अछूत, अनाथ, विधवाओं के लिए स्कूल खोला। ब्राह्मण पुरोहितशाही का खंडन किया। उन्होंने 'गुलामगिरी' कृति की रचना करके, उसमें अपने विचारों को संवाद के रूप में व्यक्त किया। पत्नी सावित्रीबाई के साथ मिलकर पूना में लड़कियों का स्कूल खोला। बाल विधवाओं के लिए सा. श. 1863 में पुनर्वसति केंद्र खोलकर, शिशु हत्या रोकने का भी काम किया।

विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया। बी. आर. अंबेडकर ने फुले को अपना तात्त्विक मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया था।

युवा बंगाली आंदोलन :

राजा राममोहन राय के सुधार का धड़कन कई युवा चिंतनशील को प्रेरित किया था। यह युवा बंगाल आंदोलन का प्रेरक बना। आंग्लो इंडियन युवक हेनरी विवियन डिरोजी इस आंदोलन के नेता थे। अपनापन और विवेचन से आलोचना करने के लिए उन्होंने युवाओं से कहा, लेकिन उस समय भारतीयों ने इसे गंभीर रूप से नहीं लिया।

आर्य समाज (सा. श. 1875)



स्वामी दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज (सा. श. 1824-1883) की स्थापना की। उनका पहला नाम मूल शंकर था। उनका आशय था कि जैसे आदर्श समाज भारत के वेद काल में था, वैसे ही समाज की स्थापना आज होनी चाहिए इसलिए दयानंद सरस्वती ने “वेदों की ओर लौटिए” का प्रतिपादन किया। उन्होंने मूर्ति पूजा, अछूत, बाल-विवाह और जाति पद्धति का खंडन किया। अंतर्जातीय तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया। इसके अलावा एक देवताराधन का प्रतिपादन किया।

दयानंद सरस्वती ने अपने विचारों को प्रसिद्ध कृति “सत्यार्थ प्रकाश” में व्यक्त किया। आर्य समाज ने भारतीय शिक्षाभिवृद्धि के लिए प्रयत्न किया और इससे राष्ट्रीय आंदोलन की स्फूर्ति मिली। आर्य समाज के नायक लाला हंसराज ने लाहौर में “दयानंद आंग्लो वैदिक स्कूल” (डी.ए.वी, सा. श. 1886) की स्थापना की। तिलक, लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रीय नायक आर्य समाज के तत्व और चिंतन से प्रभावित हुए थे। दयानंद के शिष्य श्रद्धानंद ने मतांतर हुआ, लोगों को वापस हिंदू धर्म में लाने के लिए दयानंद ने ‘शुद्धि आंदोलन’ प्रारंभ किया।

दयानंद सरस्वती ने जन्म के आधार पर ब्राह्मणों द्वारा अधिकार पाने की प्रथा का विरोध किया। स्त्रियों सहित सभी को वेदों को सीखने के अधिकार की घोषणा की। गोपूजा का प्रतिपादन किया। संक्षेप में आर्य समाज-स्वराज्य तथा स्वदेशी भावनों को जागृत करने का आंदोलन था।



सामाजिक और धार्मिक आंदोलन के केंद्र

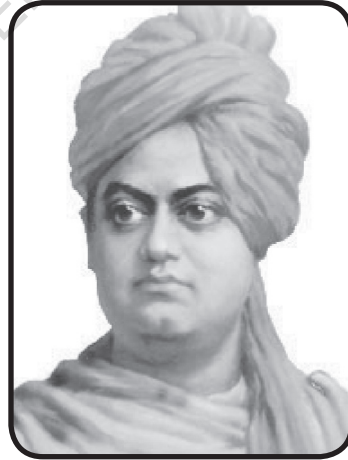
रामाकृष्ण मिशन (सा. श. 1897)

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से कहा कि “उठो जागो, लक्ष्य साधने तक मत रुको।” इनका पहला नाम नरेंद्र नाथ दत्ता था। उनका जन्म कोलकत्ता में 1863 जनवरी 12 को हुआ था। रामकृष्ण के शिष्य बन कर बाद में सन्यास स्वीकार लिया।

राम कृष्ण की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों को मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी इन पर आया। सा. श. 1892 में खेत्री राजा अजितसिंह की सलाह पर नरेंद्रनाथदत्त का नाम ‘स्वामी विवेकानंद’ रखा गया। अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में (सा. श. 1893) हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। वहाँ पर उनसे वेदांत पर दिया गया भाषण उन्हें विश्व विख्यात बना दिया। पश्चिमी संस्कृति के कई उपलब्धियाँ, महिला समानता के विचार अच्छे लगे। भारत में पैदल यात्रा करके विवेकानंद ने भारत का वह समय की स्थिति देखकर चिंतित था। वे कहते थे जब तक लोग भूख, गरीबी, अज्ञान में रहेंगे, तब तक मैं बार-बार जन्म लेकर उसे दूर करूँगा।



रामकृष्ण परमहंस



स्वामी विवेकानंद

पंडित ईश्वरचंद्रविद्यासागर ने ब्राह्मणेतर विद्यार्थियों के लिए संस्कृत कॉलेज खोला। सा. श. 1856 में पहली बार उच्च कुल में कानूनी विधवा पुनर्विवाह कोलकत्ता में विद्यासागर के नेतृत्व में संपन्न हुआ।

मानव हित तथा समाज सेवा निरंतर करने के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्त्रियों के बारे में अपार गौरव रखने वाले स्वामी जी ने कहा, स्त्रियों का उद्धार हमारे राष्ट्र का उद्धार। ‘दरिद्र नारायण’ (गरीब) की सेवा करने पर जोर दिया। उन्होंने भारत की प्रगति का सपना देखा।

स्वामी विवेकानंद को बाल गंगाधर तिलक ने, ‘भारतीय राष्ट्रीयता का ही पितामह’, कहा। सुभाष चंद्र बोस को ही नहीं बल्कि कई राष्ट्रीय आंदोलनकारों को इनके लेखन से प्रेरणा मिली।

स्वामी विवेकानंद विश्व धर्म सम्मेलन जाने से पूर्व मैसूरू आए थे। उस समय का राजा दसवें चामाराज ओड़ियर ने सम्मेलन जाने के लिए उन्हें धन की सहायता दी थी। विवेकानंद की सलाह पर मैसूरू ओड़ियर ने दलितों के लिए तीन प्रत्येक स्कूल खोला।

कार्यकलाप: विवेकानंद से शिकागो के सर्वधर्म सम्मेलन में दिया गया भाषण के बारे में अधिक जानकारी संग्रहीत कीजिए।

थियोसॉफिकल सोसाइटी (सा. श. 1875)

थियोसॉफिकल सोसाइटी (ब्रह्मा विद्या समाज) की स्थापना रूस की महिला मैडम एच. पी. ब्लावट्स्की और अमेरिका के कर्नल एच. एस. ऑल्कॉट ये दोनों ने मिलकर न्यूयार्क में की। भारत आकर चेन्नई के पास अडयार में सोसाइटी का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र कार्यालय प्रारंभ किया। बाद में डॉक्टर एनीबेसेंट इस सोसाइटी की अध्यक्ष बनी थी।

डॉक्टर एनी बेसेंट भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर भगवद्गीता को अंग्रेजी में अनुवाद किया। ‘न्यू इंडिया’ तथा ‘कामनवेल्थ’ नामक पत्रिकाएँ चालू कीं। भारत में थियोसोफिकल आंदोलन का केंद्र शक्ति के रूप में आंदोलन को आगे बढ़ाया।

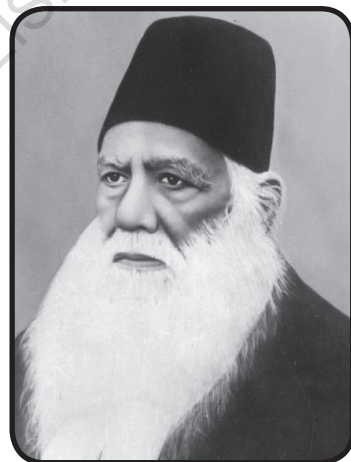
थियोसाॉफिकल सोसाइटी के उद्देश्य :

1. भेदभाव छोड़कर विश्व बंधुत्व को कायम रखना।
2. धर्म, तत्व शास्त्र विज्ञान आदि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्रकृति का रहस्य तत्व और मानव में छिपे शक्तियों के बारे में शोध करना।

एनी बेसेंट ने बनारस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की। बाद में इसका नाम 'बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी' हुआ। उन्होंने आगे चलकर 'होम रूल आंदोलन' भी शुरू किया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता बनी थीं (सा. श. 1917)।

अलीगढ़ आंदोलन और सर सैयद अहमद खान :

ज्यादातर मुसलमान लोग पाश्चात्य शिक्षा को शंका की दृष्टि से देखते थे। वह शिक्षा अपने धर्म के कल्याण के लिए घातक मानते थे। प्रारंभ में नवाब अब्दुल लतीफ ने 1863 में "महमदन लिटररी सोसाइटी" की स्थापना की। इस संस्था द्वारा मुसलमानों में अंग्रेजी शिक्षा प्रसार करने का प्रयत्न किया। इस प्रयत्न को सर सैयद अहमद खान ने आंदोलन का स्वरूप दिया। 1817 दिल्ली में जन्मे अहम्मद खान ब्रिटिश इंडिया कंपनी में न्यायांग अधिकारी के रूप में नियुक्त हुए। वे समझते थे कि मुस्लमान लोग अंग्रेजी शिक्षा से वंचित होकर अपने आर्थिक, सामाजिक अवसर खो चुके हैं। इसलिए इनकी आशा थी कि अंग्रेजी शिक्षा पाकर मुस्लमानों को सरकार में योग्य प्रतिनिधय मिले।



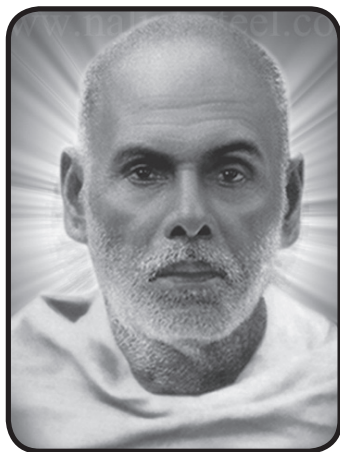
सर सैयद अहमद खान

इस तरह वे समाज सुधारक बनकर पर्दाप्रथा, बहुपत्नी और विवाह विच्छेदन पद्धति का विरोध किया। अंग्रेजों के वैज्ञानिक साहित्य कृतियों का उर्दू में भाषांतरण करने के लिए 'ट्रांसलेशन सोसाइटी' प्रारंभ किया। बाद में इसका नाम 'साइंटिफिक

सोसाइटी' बना। मुस्लिमानों में वैज्ञानिक आलोचना प्रसार करने के लिए 'अलीगढ़ इंस्टीट्यूट गेजेट' नामक पत्रिका आरंभ की। यह पत्रिका अंग्रेजी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकट होती थी।

सर सैयद अहमद खान ने सा. श. 1875 में महमद ने आंग्लो ओरिएंटल कॉलेज आरंभ किया। यही संस्था सन सा. श. 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालय हुई।

श्री नारायण गुरु



श्री नारायण गुरु

श्री नारायण गुरु एक प्रसिद्ध संत तथा समाज सुधारक थे। इनका जन्म सा. श. 1854 में तिरुवांकूर के इलवा समुदाय के परिवार में हुआ। श्री नारायण धर्म परिपालन योगम नामक संस्था की स्थापना सा. श. 1903 में की इसके द्वारा केरल के इलवा सहित पिछड़े समुदायों की सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक वृद्धि के लिए प्रयत्न किया। जाति पद्धति प्राणीबलि का विरोध किया। संस्कृत स्कूल आरंभ करके उसमें सभी लोगों को प्रवेश दिया। उन्होंने लगभग 30 देवालयों का निर्माण करके, केरल के अछूतों सहित सभी लोगों को प्रवेश दिया। उनकी आशा थी कि देवालयों में सभी मत धर्मों के ग्रंथों का ग्रंथालय हो। उन्होंने कहा कि 'भगवान एक है, धर्म एक है और जाति एक है' (One God, One Religion and One Caste) इसमें उनकी चाहत व्यक्त होती है। हम देख सकते हैं कि इनका प्रभाव कर्नाटक पर भी हुआ है। श्री नारायण गुरु की मृत्यु सा. श. 1928 में हुई।

कार्यकलाप : श्री नारायण गुरु जी के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

महिला समाज सुधारक

मेडम् एच.पी. ब्लावटस्की, एनिबेसेंट, सावित्रीबाई फुले, ताराबाई शिंदे, पंडित रमाबाई-आदि भारत के प्रमुख महिला समाज सुधारक थीं ।

सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले भारत का प्रसिद्ध समाज सुधारक, शैक्षणिक सुधारक तथा कवयित्री थी। अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर पूना में लड़कियों के लिए स्कूल खोलकर खुद शिक्षिका बनके काम किया। बाल विधवाओं के लिए पुनर्वसती केंद्र खोलकर, शिशुहत्या प्रकरणों का अंत करने के लिए प्रयत्न किया। जाति पद्धति तथा लिंग-भेद के विरुद्ध भी संघर्ष किया। इसके लिए उन्हें समाज का विरोध झेलना पड़ा।



सावित्रीबाई फुले

पति ज्योतिबा फुले सामाजिक आंदोलनों में कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। ज्योतिबा की मृत्यु के बाद 'सत्य शोधक समाज' को आगे बढ़ाया। प्लेग महामारी रोग के शिकार हुए लोगों की सेवा अपने पुत्र के साथ करते समय वे उसी रोग के शिकार हुईं ।

ताराबाई शिंदे



ताराबाई शिंदे

ताराबाई शिंदे महाराष्ट्र की प्रथम महिला संघर्षकता ज्योतिबा फुले से स्थापित 'सत्यशोधक समाज' का सक्रिय सदस्य बनकर सामाजिक संघर्षों में काम करने लगी। बाल विधवाओं की रक्षा, उनका पुनर्विवाह को प्रोत्साहन दिया। अपनी कृति 'स्त्री पुरुष तुलना' में महिला शोषण के बारे में उग्र विरोध व्यक्त किया है ।

पंडित रमाबाई

पंडित रमाबाई, भारत का प्रसिद्ध ईसाई समाज सुधारक थी। इनका जन्म पश्चिम घाट का गंगामूल में हुआ था। माता लक्ष्मीबाई, पिता अनंतशास्त्री डोग्री थे। तत्काल की सामाजिक परिस्थिति के विरुद्ध शिक्षा पाई। इंग्लैंड में पढ़ते वक्त ईसाई धर्म स्वीकार किया। भारतीय महिला उद्धार के लिए सा. श. 1889 में 'मुक्ति मिशन' संस्था की स्थापन की। यह संस्था विधवा, अनाथ तथा पियक्कड़ों को जीवनोपाय का काम देते हुए, आज भी कार्यशील है।



पंडित रमाबाई

अभ्यास

I. रिक्त स्थान उपयुक्त शब्दों से भरिए :

1. संवाद कौमुदी पत्रिका का आरंभ _____ ने किया।
2. गुलामगिरी कृति की रचयिता _____।
3. लाहोर में दयानंद आंग्लों वेदिक स्कूल प्रारंभ करनेवाले _____।
4. महिलाओं की उद्धार के लिए मुक्तिमिशन संस्था की स्थापना _____ ने की।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :

5. 'भारत का नवोदय पितामह' किसे कहते हैं ?
6. महादेव गोविंद रानडे कौन है ?
7. सत्यशोधक समाज का स्थापक कौन है ?
8. 'उठो जागो! लक्ष्य तक रुको मत' यह किसका कथम था ?
9. डॉ. एनिबेसेंट कौन थी ?
10. अलिघर आंदोलन के नेता कौन थे ?
11. श्री नारायण गुरु ने किस संस्था की स्थापना की ?
12. 'स्त्री-पुरुष तुलना' कृति की लेखिका कौन है ?
13. भारत का प्रसिद्ध ईसाई समाज सुधारक कौन है ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों पर समूह में चर्चा करें और उत्तर दें :

14. राजा राम मोहन राय के सामाजिक और धार्मिक सुधार क्रम को समझाइए ।
15. समाज सुधार के क्षेत्र में ज्योतिबा फुले की क्या देन है ?
16. थियोसोफिकल सोसाइटी के उद्देश्य क्या थे ?
17. मुस्लिम समुदाय के सुधार में सैयद अहमद खान की क्या भूमिका थी ?
18. पिछड़े समुदायों को सुधारने के लिए श्री नारायण गुरु ने क्या कदम उठाया ?
19. महिला सुधार में पंडित रमाबाई की क्या भूमिका थी ?

IV. निम्नलिखित सूची 'ए' से संबंधित सूची 'बी' के विषयों का मिलान करें ।

(ए)

(बी)

- | | |
|--------------------------|------------------------|
| 1. स्वामी विवेकानंद | (अ) अलीगढ़ आंदोलन |
| 2. स्वामी दयानंद सरस्वती | (आ) सत्यशोधक समाज |
| 3. सर सैयद अहमद खान | (इ) थियोसोफिकल सोसाइटी |
| 4. ज्योतिबा फुले | (ई) रामकृष्ण मिशन |
| 5. एनी बेसेंट | (उ) आर्य समाज |

V. चर्चा कीजिए :

“स्त्रियों का उद्धार हमारे राष्ट्र का उद्धार” - स्वामी विवेकानंद का यह कथन क्या आज भी प्रस्तुत है समूह में चर्चा कीजिए।



कार्यकलाप :

महादेव गोविंद रानाडे, ज्योतिबा फुले, राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान और श्री नारायण गुरु की जीवनी पढ़िए।





पाठ का परिचय:

आधुनिक भारत के इतिहास में सा. श. 1857 का वर्ष एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काल है। अंग्रेजों ने सा. श. 1857 की ऐतिहासिक घटना को एक सिपाही दंगा मानें तो, भारतीय राष्ट्रवादियों ने जोर-शोर से इसे भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम नाम से प्रचार किया। यह वास्तव में ब्रिटिश साम्राज्यशाही के खिलाफ घटित एक महान संग्राम था। सिपाही और नागरिक दोनों ने साम्राज्यशाही शासकों को निकालना चाहते थे। प्रस्तुत पाठ में इस घटना के कारण, गति और परिणामों को चित्रित किया गया है।

सामर्थ्य :

1. सा. श. 1857 के महान दंगा या भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणीभूत अंशों को समझना।
2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने वाले प्रमुख नेताओं के संघर्ष को याद करना।
3. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के परिणामों को समझना।

सा. श. 1857 के महान दंगा का स्वरूप:

ब्रिटिश इतिहासकारों ने सा. श. 1857 के भारतीयों के संघर्ष को केवल सिपाहियों का दंगा मात्र माना। लेकिन भारत के राष्ट्रीय इतिहासकारों ने इसे केवल लोगों का महान विद्रोह ही नहीं कहा बल्कि इसे 'भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहा है।

इस संघर्ष को देश की आजादी के लिए घटित पहली लड़ाई कहने वालों में विनायक दामोदर सावरकर प्रमुख है। पट्टाभि सीतारामय्या ने भी इसे भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम के रूप में घोषित किया। सैनिक दंगा अल्पकाल में लोगों के विद्रोह स्वरूप पा लिया है, ऐसा जवाहरलाल नेहरू की राय थी। वह देश के अधिकांश लोगों ने एकत्रित होकर चलाया गया संघर्ष था।

सा. श. 1857 के संघर्ष ने भारत के इतिहास में एक नई राजनीतिक चेतना पैदा की। इसके फलस्वरूप, साम्राज्यशाही विरोधी संघर्ष विभिन्न रूपों में जन्म पाकर पला। इन संघर्षों में शहीद लोग देश में प्रसिद्ध हुए। उनके त्याग, बलिदान हमें अविस्मरणीय है।

सा. श. 1857 के दंगा का कारण:

अंग्रेजों के लंबी प्रशासन से भारत की आर्थिक व्यवस्था कमज़ोर हो गई थी। विभिन्न वर्ग के लोग बहुत संकट में थे। किसान लोग कर के बोझ से दब गए थे। हस्तशिल्प उद्योग पतन होने लगे। परंपरागत कृषि प्रासंगिकता या शक्ति खो गयी, लोग रास्ते में पड़ गयी। इनसे प्रेरित अंशों को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक और सैनिक विभाजन किये जा सकते हैं। इनमें से कुछ प्रत्यक्ष कारण हैं तो, और कुछ अप्रत्यक्ष कारण हैं।

- 1. राजनीतिक कारण :** अंग्रेजों के दिग्विजय और उद्देश्यपूर्वक आक्रमण नीति यहाँ के शासक वर्ग और लोगों की भावनाओं को गहरा आघात पहुँचायी। लॉर्ड वेलेस्ली की सहायक सेना पद्धति और लॉर्ड डालहौजी के आक्रमणों और दत्तक पुत्रों को अधिकार नहीं की नीति से अनेक महाराजाओं और नवाबों को निष्कासित किया गया। सतार, जयपुर, संबलपुर, उदयपुर, झांसी और अवध जैसे क्षेत्रों को डालहौसी ने कब्ज़ा कर लिया। इस संक्रमणकालीन स्थिति के राजनीतिक दबावों के कारण, मुगल सम्राट बहादुरशाह राजनीतिक रूप से सिर्फ नाममात्र का सम्राट बन गया। कुछ राजाओं का विश्रान्ति वेतन, रोक दिया गया। राजाओं की उपाधियाँ रद्द कर दी गई।



बहादुर शाह

- 2. प्रशासनिक कारण :** अंग्रेजों ने सभी नागरिक और सैनिक उच्च पदों को यूरोपियन लोगों के लिए आरक्षित करने के उद्देश्य से अपनी नई शासन प्रणाली की तैयार की। यह व्यवस्था आम जनता की ज़रूरतों को पूरा करने में असफल रही। प्रशासन में मध्यस्थ की भूमिका महत्वपूर्ण थी। कानून के प्रशासन ने सामाजिक श्रेणी व्यवस्था के पतन को मार्ग प्रशस्त किया। फारसी भाषा के बजाय

अंग्रेजी न्यायालय की भाषा थी। यह, लोग और भारतीय शासक वर्ग को अच्छा नहीं लगा ।

3. आर्थिक कारण: अंग्रेजों ने अपने फायदे के लिए अपनी राजनीतिक शक्ति का उपयोग भारत के आर्थिक संसाधन और धन-दौलत को लूटने के लिए उपयोग किया। अंग्रेजों के व्यापारिक हितों से गृहोद्योग और अन्य स्थानीय उद्योगों नाश हुए। भू-कर नीति अत्यंत शोषण थी। अनेक तालुकदार और जमींदारों का स्थानमान और आय का स्रोत छीन लिया गया । बड़े पैमाने से धन का बहाव निर्माण हुआ। कृषि का वाणिज्यीकरण से किसानों की आर्थिक शक्ति कम हो गई। गंभीर अकाल लाखों लोगों का बलिदान का कारण बना। इन सभी अंशों ने भारत को गरीबी में धकेल दिया।

4. सामाजिक और धार्मिक कारण: अनेक सामाजिक और धार्मिक अशों ने भी विद्रोह के प्रकोप के कारण बन गये। अंग्रेज लोग अपनी जनजाति की श्रेष्ठता के नशे में थे। वे 'गोरों पर बोझ सिद्धांत' का आचरण कर रहा थे। भारतीयों को नागरिक बनाने के लिए आए हैं, ऐसे कहने लगे। उन्होंने भारतीयों को संस्कृति और नागरिकता का ज्ञान ना रहनेवाले अनागरिक के रूप में वर्णन किया। वे भारतीयों को 'सुअर', 'काले आदमी' आदि शब्दों से संबोधित करते थे। यूरोपियन लोगों के होटल और क्लबों में भारतीयों को प्रवेश नहीं था। 'कुत्तों और भारतीयों को प्रवेश निषिद्ध' नामफलक को वहाँ लटकाया गया था। सति पद्धति और बाल विवाह का निषेध, विधवा पुनर्विवाह का प्रोत्साहन दिया। परंपराशत भारतीयों को असहनीय हुआ। इसके अलावा ईसाई मत प्रचार समाज में ब्रिटिश विरोधी आंदोलन के जन्म का कारण बना। इतना ही नहीं नए रेलमार्गों और टेलिग्राफतारों के निर्माण कार्य ने भी अंग्रेजों को शंका की नज़र से देखा गया। ।

‘गोरों पर बोझ’का मतलब है कि भारतीय लोग अनागरिक हैं। उन्हें नागरिक बनाने यूरोपियन आए हैं। अनागरिक लोगों को नागरिक बनाना गोरों की जिम्मेदारी है। यह एक उपनिवेश की चाल थी। इस सिद्धांत का रचयिता कवि रूड्यार्ड किप्लिंग ।

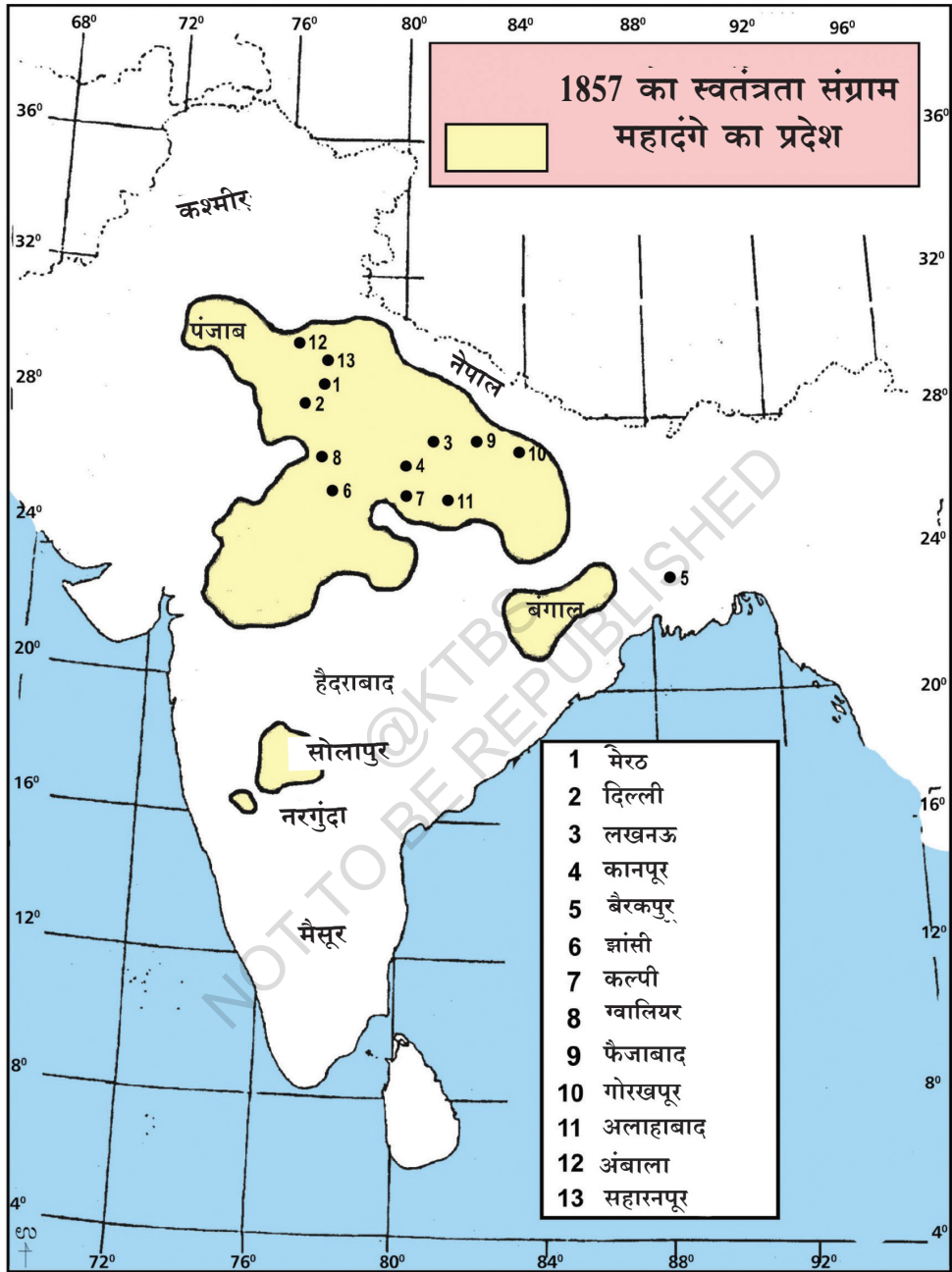
5. सैनिक कारण : भारतीय सिपाहियों में बहुत निराशाएँ थीं। सैनिकों को पारंपरिक रूप से उपयुक्त धार्मिक प्रतीकों और साफ़ा पहनना निषिद्ध था। भारतीय सैनिकों का वेतन बहुत कम था और प्रोन्नति की संभावना भी बहुत कम थी। ब्रिटिश सैनिकों को अधिक वेतन और अन्य लाभ दिए गए थे। भारतीय सैनिकों को दूर स्थानों पर कार्यकारण बिना पूरक वेतन के नियोजन किया गया था। लॉर्ड क्यानिंग के “सामान्य सेनासेवा अधिनियम” के अनुसार, सभी सैनिकों को ब्रिटिश आदेशों के तहत कहीं भी काम करना पड़ता था।

6. तत्काल कारण: जनसमूह के दंगा को सा. श. 1857 का सन्दर्भ परिपक्व था। एक चिनगारी ही उन्हें भड़काने के लिए काफी थी। सा. श. 1857 में, सेना में एक नए प्रकार की बंदूक (एनफील्ड राइफल) ही सिपाही दंगा का कारण है। एनफील्ड राइफल्स बंदूकों में कारतूस भरने से पहले आच्छादित कागज़ को दांतों से फाड़ना था। इस कागज़ को सुअर और गाय की चर्बी का इस्तेमाल किया गया था। यह खबर जंगल की आग की तरह सैनिकों में फैल गई। यह मुस्लिम और हिंदू सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचानेवाली खबर थी। जिन सैनिकों ने उनका इस्तेमाल करने से मना कर दिया उन्हें अंग्रेज सजा देते थे।

दंगे की गति : मेरठ में 10 मई, सा. श. 1857 को दंगा प्रारंभ हुआ। बाद में उत्तर भारत के प्रांतों में व्यापक रूप से तेज फैलता गया। मेरठ में दंगा विस्फोटित होने से पहले बैरकपुर (बंगाल) का एक भारतीय सिपाही मंगलपांडे ने फैट (चर्बी) प्रयुक्त बंदूक उपयोग करने का इनकार किया, खुले आम ब्रिटिश अधिकारी को गोली से मार दी। वह भी मारा गया। मेरठ में दिखनेवाले यूरोपियनों को सिपाहियों ने मार डाला। 'मारो फिरंगी को' (यूरोपियन को मारो) के नारे लगाते उन्मत्त लोग दिल्ली की ओर दौड़ पड़े। दिल्ली में, सिपाहियों ने बूढ़ा और शक्तिहीन मुगल सम्राट दूसरे बहादुर शाह को भारत का सम्राट घोषित किया।



मंगलपांडे



महान विद्रोह के क्षेत्र

फिरंगी (गोरा) : फिरंगी शब्द का मूल फारसी मूल का है। जो उर्दू और हिंदी में यूरोपियन लोगों को हीन सूचित करने के लिए प्रयोग किया जाता था।

कुछ ही समय में दंगा व्यापक रूप से फैल गया। दिल्ली, कानपुर लखनऊ, बरेली, झाँसी और बिहार के आरा, क्रांति के प्रमुख केंद्र थे ।



अंग्रेजों के खिलाफ भारतीयों का संघर्ष

दिल्ली में सेनापति बख्त खाँ, कानपुर में नाना साहब और तांत्या टोपे लखनऊ में बेगम हजरत महल, झाँसी में लक्ष्मीबाई और बिहार में कुँवर सिंह के नेतृत्व में दंगे हुए। अंग्रेजों ने हर एक दंगों का दमन कर दिया। विद्रोह केवल उत्तर भारत तक ही सीमित नहीं था, बल्कि महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, गोवा और पांडीचेरी में भी फैल गया था। कर्नाटक में मुन्डरगी भीमाराव, हलगलि आखेटक जनजाति के सुरपुर के वेंकटप्पा नायक और नरगुंद के बाबासाहेब प्रमुख नायक थे । पूरे उत्तर और दक्षिण भारत में विद्रोह व्यापक रूप से फैलाने पर भी अंग्रेजों ने उसे कम समय में विद्रोह को दबा दिया ।



झाँसीरानी लक्ष्मीबाई

गतिविधि: झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के खिलाफ कैसे लड़ी, इसके तथ्यों को संग्रहीत कीजिए।



कुंवर सिंह



नाना साहब

परिणाम :

यह संघर्ष विफल होने पर भी उससे दूरगामी (दीर्घकालीन) परिणाम हुआ। भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों पर गंभीर परिणाम हुआ। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप, ईस्ट इंडिया कंपनी अंत हो गयी। उनके हाथों से भारत के प्रशासन को अंग्रेजों की रानी ने अपने हाथ में ले लिया। सा. श. 1858 में, ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणा जारी की। इस घोषणापत्र में भारतियों के अधिकार, रीति-रिवाजों और पद्धति का सम्मान करने का वादा किया गया था। इससे स्पष्ट हुआ कि इन लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करेगी।

सा. श. 1857-58 का संघर्ष आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन के उदय का कारण बना। यह अगले स्वतंत्रता संग्राम के लिए निरंतर प्रेरणा का स्रोत बना।

////// अभ्यास ////

I. रिक्त स्थान उपयुक्त शब्दों से भरिए :

1. सामान्य सेना सेवा अधिनियम बनानेवाले _____ ।
2. बैरकपुर में चर्बी लगी बंदूक के उपयोग की इनकार ने वाले भारतीय सिपाही _____ ।
3. बिहार में _____ के नेतृत्व में विद्रोह हुए ।
4. सा. श. 1857 के संग्राम को “भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम” कहनेवाले _____ ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में लिखिए :

1. सा. श. 1857 के संघर्ष का तात्कालीन कारण क्या थे?
2. सा. श. 1857 की महादंगा का परिणाम बताइए।
3. सहायक सेना प्रणाली के अंतर्गत कौन-कौन से राज्य ब्रिटिश शासन के अधीन आये?

III. एक टिप्पणी लिखिए:

1. स्वतंत्रता संग्राम के कारण
2. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई
3. द्वितीय बहादुर शाह



गतिविधि : मंगल पांडे, झाँसी लक्ष्मीबाई, तान्या टोपे, नाना साहब, बेगम हजरत महल, कुँवर सिंह, मुंदरगी भीमराव जैसे क्रांतिकारियों की जीवन गाथा पढ़िए। (देखें: भारत-भारती पुस्तक माला)





पाठ परिचय :

अंग्रेजों की शोषणात्मक नीतियों से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीयता अंकुर हुआ। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त नए शिक्षित वर्ग को ब्रिटिश के शासन का सही उद्देश्य मालूम हो गया। किसान, आदिवासी, और कई वर्ग अंग्रेजों से बहुत तंग आकर, अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की ताक में थे। इस पाठ में भारतीय राष्ट्रीयता का उदय होने के प्रमुख अंशों को, अखिल भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना, और राष्ट्रीय आंदोलन में मंदगामी और तीव्रगामियों की भूमिका आदि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

महात्मा गांधीजी के राजनीतिक, आर्थिक चिंतनों को विश्व भर में मान्यता प्राप्त है। उनके नेतृत्व के राजनीतिक संघर्ष का यह दौर 'गांधीयुग' (सा. श. 1919 से 1947) कहा जाता है। इस पाठ में सा. श. 1919 से 1947 तक की कालावधि के स्वतंत्र आंदोलन का परिचय दिया गया है।

सामर्थ्य :

1. 19वीं शताब्दी में राष्ट्रीयता के उदय का प्रमुख कारण जानना।
2. मंदगामी, तीव्रगामी और क्रांतिकारियों के उद्देश्य, नीतियों को समझना।
3. “फूट डालकर शासन करने की नीति” द्वारा ब्रिटिश लोग, भारत पर कैसे शासन किये इसकी जानकारी प्राप्त करना।
4. गांधीजी के प्रारंभिक जीवन, उनकी अहिंसा तथा सत्याग्रह की नीति की सराहना करके उन पर गर्व करना।
5. गांधीजी के नेतृत्व के गुण, ध्येय, सत्य, सरलता, मानवीयता और विनम्रता को सराहना करना।
6. सुभाष चंद्र बोस और डॉक्टर बी आर अंबेडकर के योगदान की प्रशंसा करना।
7. स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका जानना।
8. स्वतंत्रता के बाद कर्नाटक के विकास में महिलाओं की भूमिका जानना।

राष्ट्रीयता का विकास :

हमारा भारत बहुआयामी या विविध संस्कृतियों का देश है। हमें सुदीर्घ और चारित्रिक परंपरा है। ये 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीयता का विकास के लिए नींव डाले। राष्ट्रीयता का मतलब है - एक निर्दिष्ट भौगोलिक प्रदेश के लोगों के मन में “हम सब एक हैं” एकता की भावना है। साथ ही अपने उस प्रदेश के बारे में गौरव और सद्भावना सम्मिलित है।

सा.श. 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भारतीयों का संघर्ष अलग-अलग था उनमें एकता नहीं थी। एकता की भावना के अभाव से संघर्ष विफल हो गया। इससे शिक्षित भारतीय संगठन के महत्व का ज्ञान प्रदान किया। यह कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। राष्ट्रीयता का विकास के लिए कई अंशों ने प्रेरणा दी। वे इस प्रकार हैं।

1. पाश्चात्य शिक्षा तथा आधुनिक विज्ञान का परिचय : अंग्रेजी शिक्षा पाने वाले भारतीय यूरोपीय चिंतनशील कृतियों को पढ़कर राष्ट्रीय राजनीतिक मनोभावों को बढ़ावा दिया। यूरोप की परिकल्पना स्वतंत्र, समानता और भाईचारा आदि गुणों ने इनको राजनीतिक में प्रेरित किया। इससे उनमें आजादी की आशा को स्फूर्ति मिली। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोग अपना साथ देंगे, अंग्रेजों का यह भरोसा झूठा साबित हुआ।
2. एकरूप शासनात्मक व्यवस्था : अंग्रेजों ने भारत में एकरूप शासन की व्यवस्था की। इससे एक ही तरह के नियमों में बंधे भारतीयों में ‘हम सब समान हैं’ भावना पैदा हुई। उसी तरह से अंग्रेजों से जारी किए हैं जन विरोधी कानूनों का सब मिलकर विरोध करने लगे। यह भारतीयों में राष्ट्रीय भावना पैदा होने में सहायक बना।
3. आर्थिक शोषण: अंग्रेजों की आर्थिक नीति से भारतीयों के व्यापार, कृषि, तथा उद्योगों का नाश हुआ। जमीन को बिकने की वस्तु के रूप में परिवर्तित कर

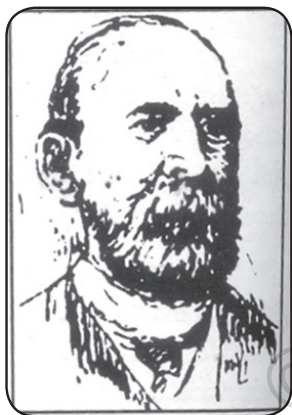
दिया। दादा भाई नवरोजी ने अपनी 'संपत्ति का रिसाव' में प्रतिपादित किया है कि अंग्रेज हमें किस तरह लूटे हैं।

4. परंपरा का परिचय : सर विलियम जोन्स एच.टी. कोल ब्रूक, मैक्स मुल्लर कनिंग हैम, आदि विदेशी विद्वानों ने भारतीय चारित्रिक परंपरा को अपने अध्ययन द्वारा भारतीयों को परिचित कराया। इससे सब को विश्वास हो गया कि भारतीय परंपरा, ग्रीक परंपरा, से कम नहीं है। इस तरह राष्ट्रीयता का जड़ ज्ञान के रूप में और गहराई में उतरने लगा।
5. सामाजिक, धार्मिक आंदोलन : 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज सुधारक राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद आदि ने भारतीय शोषित वर्गों को शिक्षा का, महत्व समझाया। दयानंद जी ने स्वराज तथा स्वदेशी विचारों को और विवेकानंद ने निर्जीव समुदायों में चेतना पैदा करने का काम किया। यह राष्ट्रीय विकास के लिए सहायक बना। शिक्षित भारतीयों को क्रियाशील बनाया।
6. भारत का प्रथम स्वतंत्र संग्राम के लिए स्फूर्ति : इस संग्राम से भारतीय ज्यादा संगठित होकर काम करना सीखा। इसके अलावा इस संघर्ष में शहीद मंगल पांडे, लक्ष्मीबाई, हजरत महल आदि नायकों से अगली पीढ़ी को प्रेरणा मिली।
7. जातिभेदभाव : अंग्रेज अपने आप को श्रेष्ठ मानकर भारतीयों को अनागरिक समझते थे। प्रशासन में उच्चतम पद सिर्फ अंग्रेज के थे। भारत में स्थित अंग्रेज समुदाय इल्बर्ट कानून को (1884) विरोध करना। इसका स्पष्ट निदर्शन है।

इससे एक ही तरह के नियमों में बंधे हुए भारतीयों में 'हम सब एक हैं' भावना आ गई। अंग्रेजों के जन विरोधी कानून को सब ने विरोध किया। इस तरह भारतीयों में एकता का भाव पैदा करने में सहायक हुआ।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सा. श. 1885

निवृत्त अंग्रेज नागरिक सेवाधिकारी एलन आक्टेवियन ह्यूम ने सा. श. 1885 में मुंबई में भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। यह उनका सपना था। उमेश चंद्र बनर्जी कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष बने थे। मुंबई में चला कांग्रेस का पहला अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उनमें ज्यादातर वकील, पत्रकार और समाज के प्रतिष्ठित वर्ग के थे। वास्तव में कांग्रेस, राष्ट्रीय आंदोलन को प्रारंभ करने का पहला मंच था।



एलन आक्टेवियन ह्यूम,
कांग्रेस संस्थापक



उमेश चंद्र बनर्जी
प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्य

- * देश के भिन्न भागों के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच स्नेह संबंध रखना।
- * राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना ।
- * लोगों की मांग सरकार के सामने रखकर जनमत लेना।
- * प्रांतीयता छोड़कर राष्ट्रीयता को अपनाना।

मंदगामियों (नर्मदल) का युग (सा. श. 1885- 1905)

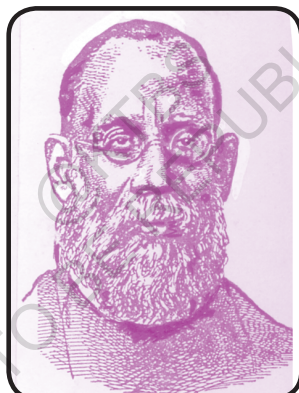
भारतीय राष्ट्रीय प्रारंभिक नायकों को मंदगामी (सौम्यवादी) कहा गया है। सन् सा. श. 1885 से 1905 के मध्य काल को मंदगामियों का काल माना गया है।

संविधानात्मक नीति में विश्वास रखते थे। अंग्रेज शासन पर निष्ठा रखने वाले लोगों ने प्रार्थना माँग और प्रतिरोध नीति का अनुसरण किया। राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में सुधार लाने के लिए अंग्रेजों का मन बदलना चाहा। दादाभाई नवरोजी, सुरेंद्रनाथ बैनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, महादेव गोविंद रानाडे आदि मंदगामियों के नेता थे।

मंदगामी नायकों के संघर्ष के फल स्वरूप भारतीयों को शासन सभाओं में प्रवेश करना संभव हुआ। मंदगामियों के प्रयत्न से मालूम हो गया, कि भारत की गरीबी का कारण अंग्रेज हैं। भारतीय राजनीतिक संघर्ष के लिए प्रशिक्षण लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध पूरे राष्ट्र में संघर्ष प्रारंभ किया।



दादा भाई नवरोजी



सुरेंद्रनाथ बनर्जी



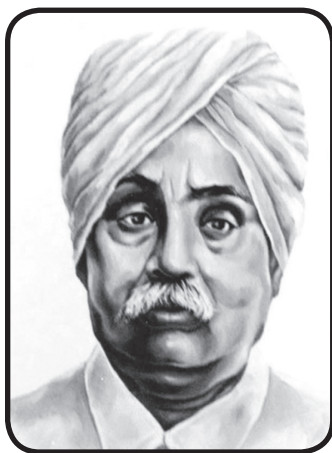
गोपाल कृष्ण गोखले

मंदगामियों की माँग

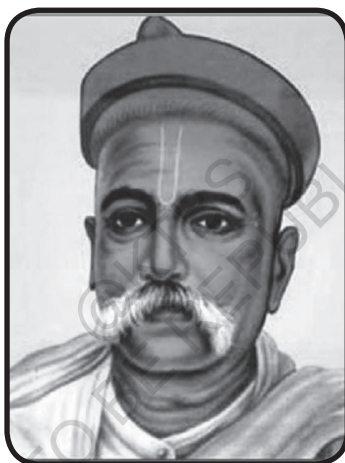
वाक् और मुद्रण स्वातंत्र्य, कार्याग से न्यायांग को अलग करना, सेना बल के खर्च में कमी, प्राथमिक-प्रौढ तथा तकनीकी शिक्षा का लागू करना, शस्त्रास्त्र निषेध कानून रद्द करना, बैंकिंग, सिंचाई, वैद्यकीय तथा स्वास्थ्य सुविधा, नमक पर कर रद्द करना, भारत और इंग्लैंड में एक ही समय पर आई, सी, एस, परीक्षा आयोजन करना, केंद्र तथा प्रांतीय शासन सभाओं में भारतीयों को प्रतिनिधित्व, उच्च पद पर भारतीयों की नियुक्ति आदि।

तीव्रगमियों (गर्मदल) का युग (सा. श. 1905 -1919)

मंदगामी जनता से दूर ही रहे।उनकी प्रार्थना, माँग आदि नीतियों को तीव्रवादियों ने 'भीख माँगने की नीति' (पॉलिसी ऑफ मेंडिकेंन्सी) कहा। इन नीतियों से युवा वर्ग आकर्षित नहीं हुए। इनकी इंतजार विधि को प्रश्न करने वाले नए-नायकों का एक समूह कांग्रेस में जन्म लिया। इन्हीं को तीव्रवादी कहते हैं। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्रपाल, ये तीव्रवादी समूह के नायक थे। ये लाल, बाल, पाल, नाम से ख्यात हुए। सा. श. 1905 - 1919 के कलावधि को तीव्रगामी राजनीति काल माना जाता है।



लाला लाजपत राय



बाल गंगाधर तिलक

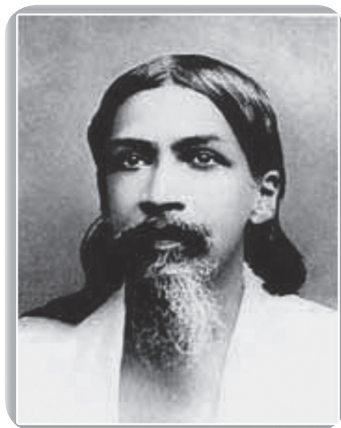


बिपिन चंद्र पाल

तीव्रगमियों के विकास के कारण

- * भारतीयों को उच्च पद न मिलना।
- * सा. श. 1905 लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन करके मतीय राजनीति को प्रयत्न किया था।
- * सा. श. 1905 में रूस देश को छोटा देश जापान ने हराया। इस घटना से उनमें ऐसा विश्वास पैदा हो गया कि यूरोपियों को एशियाई भी हरा सकते हैं।
- * आयरलैंड, रूस, चीन, टर्की, मिश्र (इजिप्ट) आदि राष्ट्रों में होने वाले आंदोलन भारतीयों को प्रेरित किया।

बाल गंगाधर तिलक अप्रतिम देशभक्त थे। “स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है; मैं उसे पाकर ही रहूँगा।” इस घोषणा में आजादी की अटूट इच्छा थी। भारतीयों में एकता लाने के लिए तिलक ने गणेश तथा शिवाजी उत्सव का परिचय कराया। मराठा (अंग्रेजी) केसरी (मराठी) पत्रिकाएँ प्रकाशित करके लोगों को राजनीति से प्रेरित किया गया। बिपिन चंद्र पाल ने ‘न्यू इंडिया’ और अरविंद घोष ने ‘वन्दे मातरम्’ पत्रिकाएँ प्रारंभ कीं। लाला लाजपत राय तो ‘पंजाब के सिंह’ नाम से ख्यात हुए। उन्होंने बताया कि ‘स्वराज्य को हक के रूप में पाएँगे; भीख के रूप में नहीं’। बंगाल में बिपिन चंद्र पाल ने सामूहिक प्रतिरोध का संगठन किया। तीव्रवाद का एक और प्रतिनिधि अरविंद घोष थे। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, राष्ट्रीय स्कूलों को प्रारंभ करना, आदि इनके विचार थे। तीव्रगामियों ने राष्ट्रीय आंदोलन को तेज दिलवाया।



अरविंद घोष

बंगाल का विभाजन (1905) :

तीव्रवादियों का राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरित करने वाली प्रमुख घटना सा. श. 1905 का बंगाल विभाजन था।

बंगाल में राष्ट्रीयता की लहर तीव्र होते हुए देखकर अंग्रेज लोग आतंकित हुए। इसलिए लॉर्ड कर्जन ने हिंदू और मुसलमान मतीय भिन्नता के आधार पर बंगाल का विभाजन करके राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता को दमन करने का प्रयत्न किया। इस विभाजन का विरोध करके सा. श. 1905 अक्टूबर 16 को बंगाल में ‘राष्ट्रीय शोक दिन’ मनाया गया। रविंद्र नाथ टैगोर ‘अमर सोनार बांग्ला’ गीत राष्ट्रीय गीत के रूप में गाये। सबका घोषणा ‘वन्दे मातरम्’ था। बंगाल की एकता दिखाने के लिए आपस में रक्षाबंधन बाँध लिया। जनता का तेज विरोध देखकर सा. श. 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करना पड़ा।



लार्ड कर्जन



बंकिम चंद्र चटर्जी

मुस्लिम लीग की स्थापना (सा. श. 1906) :

फूट डालने का शासन की नीति से अंग्रेज, मुस्लिमों को राष्ट्रीय आंदोलन से दूर रखने का प्रयत्न करते रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना होते ही, मुस्लिमों को भी अपना एक संगठन रचना करने के लिए अंग्रेज प्रोत्साहित दिया। 1906 में एक मुस्लिम नियोग भारत का वायसराय मिंटो से मिला। अंग्रेज के उकसाने पर सर आगाख़ाँ, ढाका का नवाब सलीमुल्लाह आदि मिलकर 1906 में भारतीय मुस्लिम लीग को ढाका में (आज का बांग्लादेश की राजधानी) स्थापित किया।

सूरत की फूट/दंगा (सा. श. 1907) :

बंगाल विभाजन के बाद तीव्रगामी पूरे देश में विदेशी और बहिष्कार आंदोलन शुरू किया। लेकिन मंदगामी उसे केवल बंगाल तक ही रखना चाहते थे। वे सरकार के साथ सीधा संघर्ष नहीं करना चाहते थे। तीव्रगामी तथा मंदगामियों के मतभेद तीव्र होकर कांग्रेस में राजनीतिक विभाजन हुआ। सा. श. 1907 में सूरत के कांग्रेस अधिवेशन में इन दोनों के बीच कांग्रेस दो भागों में बंट गया। उसके बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन प्रधान रूप से तीव्रगामी के नेतृत्व में सा. श. 1919 तक चला।

1907 में कांग्रेस के विभाजन के बाद सरकार ने तीव्रगामियों के विरोध में दमनकारी क्रम अपनाया। उनमें से कई लोगों को जेल भेजा गया। कुछ लोगों को तड़ीपार भी कर दिया। तिलकजी को कालापानी की सजा देकर मांडले (बर्मा) तड़ीपार कर दिया। इससे राजनीति की गतिविधियाँ कुछ समय तक रुक गई थीं। जेल में रहकर ही तिलक जी 'गीता रहस्य' को लिखा।

तीव्रगामियों को राजकीय रूप से निष्क्रिय करने हेतु अंग्रेज मंदगामी और मुस्लिमों को शासनसभा में ज्यादा प्रतिनिधित्व देकर मन जीतना चाहा। इस दिशा में मिंटो-मार्ले सुधार सा. श. 1909 में जारी किया गया। इस कानून से मुसलमानों को अलग चुनाव क्षेत्र दिया गया। इस बीच पहला महायुद्ध अचानक आरंभ हुआ (सा. श. 1914)। इससे राष्ट्रीय आंदोलन को नई चेतना मिली। सा. श. 1916 में लोकमान्य तिलक और एनीबेसेंट ने होमरूल आंदोलन शुरू किया।

रौलट कानून (सा. श. 1919) :

सा. श. 1917 का दिसंबर में न्यायमूर्ति रौलट के मार्गदर्शन में एक समिति की रचना हुई। भारत के क्रांतिकारी कार्यों को दमन करना ही इसका उद्देश्य था। अंत में रौलट कानून सा. श. 1919 फरवरी में जारी किया गया। इस कानून के अनुसार शक होने पर किसी व्यक्ति को बिना कारण बताए सरकार उसे बंधित कर सकती थी। सूचना दिये बिना किसी भी प्रदेश का शोध कर सकते थे। बंधित व्यक्ति को वकीलों को नियुक्त करने का हक भी नहीं था। इसलिए भारतीयों ने इसे तीव्र रूप से विरोध किया। इसके प्रति क्रोध की लहरें सारे देश में दिखाई दीं। इसके विरुद्ध गांधीजी सत्याग्रह किये।

जलियाँवालाबाग हत्याकांड (सा. श. 1919) :

रौलट कानून के विरुद्ध में गांधीजी का सत्याग्रह शुरू होने से पंजाब के कई भागों में प्रतिरोध कार्य आरंभ हुए। सा. श. 1919 अप्रैल 13 को अमृतसर का स्वर्ण मंदिर से थोड़ी दूरी पर स्थित जलियाँवालाबाग में एक सभा का आयोजन हुआ था। सभा में अपने नायक डॉ. सैफुद्दीन किचालू और डॉ. सत्यपाल के बंधन के विरोध में प्रतिरोध करना था।



जलियांवाला बाग हत्याकांड का भयंकर दृश्य

अमृतसर का रक्षक जनरल डायर ने प्रतिरोध करने वाले लोगों को सबक सिखाने के लिए उद्यान से बाहर जाने के एकैक मार्ग को बंद करके निरायुध जनसमूह पर गोली चलाने का आदेश दिया। जनता घबरा गई। सरकारी बयान के प्रकार मारे गए लोग सिर्फ 379 थे। पर वास्तव में बहुत ज्यादा लोग मारे गये। आज भी उस उद्यान में गोलियों के निशान देखे जा सकते हैं। इस भयानक कृत्य का पूर्ण रूप से खंडन किया गया।

क्रांतिकारी राष्ट्रीयता :

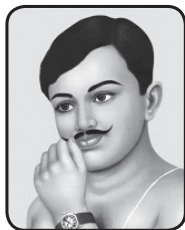
तीव्रवादियों में कुछ लोग सशस्त्र क्रांति करने चले। इन्हें 'क्रांतिकारी राष्ट्रवादी' कहते हैं। अंग्रेज अधिकारियों ने इनको आतंकवादी कहा करते थे। भारत को पूर्ण रूप से आजाद कराना इनका उद्देश्य था। क्रांतिकारी राष्ट्रीयवाद का मूल तत्व गहरी देशभक्ति और त्याग मनोभाव था।

रहस्य संगठन स्थापित करने वाले क्रांतिकारियों में बलवंत फड़के पहला क्रांतिकारी थे। दामोदर और बालाकृष्ण चापेकर नामक दो भाई इस रहस्य संगठन के प्राण थे। बाद में इन दोनों को फाँसी दी गई।

विनायक दामोदर सावरकर, खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आजाद भगत सिंह आदि हमारे देश के प्रमुख क्रांतिकारी थे। स्वतंत्र संग्राम में फाँसी पर चढ़ने वालों में पहला शहीद खुदीराम था। सा. श. 1908 तब वह सिर्फ 19 साल का था। इतनी छोटी उम्र के क्रांतिकारी के बलिदान को देखकर देश की जनता की आँखों से आँसू छलकने लगे।



खुदीराम बोस



चंद्रशेखर आजाद



भगत सिंह



विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर एक और क्रांतिकारी था। सा. श. 1899 में वे 'मित्रमेल' नामक प्रथम गुप्त संगठन स्थापित किया। बाद में इसको अभिनव भारत कहने लगे। उन्हें अंग्रेजी सरकार ने जीवनावधि कारावास पर अंडमान जेल भेजा। दैहिक हिंसा दी गई। भारत सरकार ने अंडमान जेल में उनका स्मारक बनाया है।

चंद्रशेखर आजाद 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' के साथ मिलकर, काकोरी मामले, शासन सभा पर बम गिराने की घटना, लाहौर में ब्रिटिश अधिकारी स्यांडर्स पर गोली से हमला, आदि अनेक घटनाओं में भागीदारी थे।

कार्यकलाप : काकोरी षड्यंत्र किसे कहते हैं ? शिक्षक के मार्गदर्शन में विषय का संग्रह कीजिए।

आजाद ने ब्रिटिश सैनिकों से बचने के लिए एक छोटा पिस्तौल लेकर अकेले संघर्ष किया। जब एक गोली बची थी तब अपनी कनपटी पर गोली मारकर खुद को खत्म करके 'कभी किसी का बंदी नहीं बनूँगा' इस बात को सच बनाया। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, भगवती चरण और गयाप्रसाद, जैसे अनेक शहीदों ने अंग्रेजों के बंधन से भारत को मुक्त कराने के लिए अपने आप को अर्पण किया।

भगत सिंह ने हिंदुस्तान समाजवादी रिपब्लिकन संगठन से जुड़कर उसका प्रधान सचिव बना। सन सा. श. 1929 में भगत सिंह राजगुरु, सुखदेव, ने दिल्ली में केंद्रीय शासन सभा पर बम गिराया। लाहौर सेंट्रल जेल में इन तीनों को फाँसी दी गयी। ये इंकिलाब जिंदाबाद (क्रांति चिरायु हो) घोषणा करने वाले प्रथम भारतीय हैं। कुल मिलाकर क्रांतिकारी राजनीतिक चेतना जागृत की। इनसे युवजनता को प्रेरणा मिली।

विदेशों में बसे हुए भारतीय क्रांतिकारी कार्य प्रारंभ किये, सोहन सिंह भक्त सन् 1913 में अमेरिका का स्यान्फांसिस्को में गदर आंदोलन को प्रारंभ किया।

मंदगामियों से आरंभ हुआ, कांग्रेस पक्ष धीरे-धीरे प्रसिद्ध संगठनों के रूप में अस्तित्व में आया। कांग्रेस संगठन में धीरे-धीरे से अन्य राजनीतिक विकास हुआ। तीव्रगामियों ने कांग्रेस में भाव तीव्रता लायी। अंग्रेज कांग्रेस को घृणा करते हुए, उसको तोड़ने का प्रयत्न किया। मतीय राजनीतिक तंत्रों को अनुसरण करके राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता को मिटाने का प्रयत्न किया। इससे राष्ट्रीय आंदोलन की तीव्रता में रुकावट आयी पर वह निष्क्रिय नहीं हुआ। सन सा. श. 1919 के बाद कांग्रेस गांधीजी के नेतृत्व में एक नया रूप लिया।

गांधी युग (सा. श. 1919 से 1947)

महात्मा गांधी :

आधुनिक विश्व को मोहनदास करमचंद गांधी के बारे में जितनी जानकारी है उतनी अन्य भारतीयों के बारे में नहीं है। अहिंसा तथा सत्याग्रह नीति गांधीजी के संघर्ष का अस्त्र थे। वे स्वतंत्र आंदोलन को प्रजा आंदोलन के स्वरूप में लाए। सरलता, विनय, सत्यता इनके सफलता के सूत्र थे। महिलाओं से लेकर हर सामाजिक वर्गों को स्वतंत्र आंदोलन में भाग लेने के लिए, इनके ये अस्त्र प्रमुख कारण थे।

आरंभिक जीवन : गांधीजी का जन्म सा.श. 1869 अक्टूबर 2 को गुजरात राज्य के पोरबंदर में हुआ। करमचंद गांधी तथा पुतलीबाई इनके माता-पिता थे। उनके पिता पोरबंदर तथा राजकोट संस्थान के दीवान थे। माता धार्मिक विश्वासों में गहरी

आस्था रखने वाली महिला थी। गांधीजी के नैतिक मूल्य और बद्धता उनकी माँ से विरासत में मिली थी।

महात्मा गाँधी को हम प्यार से 'बापू' कहते हैं। वे भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के महान नायक थे। उन्होंने शोषण, अछूत का निवारण और हिंदू मुस्लिमानों के बंधुत्व भावना के लिए अपने आप को समर्पित किए थे। उनके नेतृत्व के संघर्ष काल को 'गांधी युग' (सा.श. 1919-1947) कहा गया है।

गांधी जी के जीवन पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं। भगवद्गीता, जान रस्किन के "अंत तक" (Unto this last), टॉलस्टॉय का 'तेरा अंतरंग ही भगवान का राज्य' (The Kingdom of God is within you) और सत्य हरिश्चंद्र नाटक।

दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी :

गांधीजी के प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में प्रारंभ हुई। उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए थे। उन्होंने ब्रिटेन में कानून पास किया सा. श. 1891 में भारत को वापस आकर राजकोट और मुंबई में वकालत करने लगे। प्रारंभ में वकील के रूप में उन्होंने सफल नहीं हुआ। कुछ समय के बाद दादा अब्दुल्ला कंपनी के निमंत्रण पर कानून के सलाहकार के रूप में दक्षिण अफ्रीका गये। वहाँ सत्याग्रह और अहिंसा नामक अस्त्रों के द्वारा भारतीयों पर होने वाले अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किये। दक्षिण अफ्रीका में किया गया इन प्रयोगों को और उससे प्राप्त सफलता से गांधी जी के व्यक्तित्व को विशेष स्थान मान मिला। आज गांधीजी के संघर्ष का विधान 'गांधीगिरी' नाम से प्रसिद्ध है।

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की बुरी दशा को देखकर दंग रह गए। गोरे सरकार की जनजाति नीति का विरोध किया। उन्होंने सत्याग्रह तथा अहिंसा मार्ग से सरकार के जनजाति पूर्वाग्रह को बदलने में सफल हुआ।

सत्याग्रह सिद्धांत संस्कृत के दो शब्दों से बना है। सत्य का अर्थ वास्तविक संगति और आग्रह का अर्थ दबाव है। इन दोनों का अर्थ 'सत्य के लिए डटे रहना है'।

कार्यकलाप : गांधीजी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में घटित सत्याग्रह और अहिंसात्मक आंदोलन के बारे में ज्यादा जानकारी संग्रहीत कीजिए।

सा. श. 1915 में भारत को वापस आने के बाद गांधीजी ने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम को (सा. श. 1916) में स्थापना की। अपने राजनीति के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के मार्गदर्शन पर पूरे भारत में प्रवास करके जनता की दयनीय स्थिति को देखा। यह उनका पहला सामाजिक अनुभव था। इस तरह गांधीजी भारतीय समाज का वास्तव रूप को जानने लगे।

प्रारंभिक राजनीतिक जीवन :

स्वतंत्र आंदोलन के इतिहास में 1919 का साल एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बन गया है। यह, गांधी जी भारत के राजनीतिक क्षेत्र प्रवेश करने का वर्ष था। ब्रिटिश को दैहिक बल के द्वारा देश से बाहर निकालना असंभव है। इस सत्य से वे अवगत हो चुके थे। वह प्राथमिक रूप से दैहिक बल का प्रयोग करने के विरुद्ध थे। सा. श. 1919 में गांधीजी रौलट कानून के लागू और जलियनवालाबाग के भयानक हत्याकांड के विरुद्ध आंदोलन चलाया। इसके अलावा खिलाफत आंदोलन के नेता भी थे। इस तरह हिंदू और मुस्लिम दोनों के बीच अखंडता को बनाए रखना उनके प्रमुख उद्देश्य था।

खिलाफत आंदोलन किसे कहते हैं।

टर्की साम्राज्य खलीफा के अधीन में था। खलीफा दुनिया के मुसलमानों के परमोच्च धर्मगुरु कहकर, अनेक मुसलमानों को विश्वास था। पहला विश्व युद्ध में टर्की ब्रिटेन के विरुद्ध खड़ा हुआ था। इस युद्ध में टर्की हार गया। टर्की के अरबिया, जॉर्डन, इराक आदि स्वतंत्र राष्ट्र हो गए। सा. श. 1919 में कमाल पाषा नामक नायक ने टर्की के खलीफ का सल्तनत को हटाकर, अधिकार में आया। इससे भारतीय मुसलमानों ने खलीफ के समर्थन में और ब्रिटेन के विरुद्ध आंदोलन चलाए। इसको खिलाफत आंदोलन कहते हैं। गांधीजी इस आंदोलन के नेता थे। मोहम्मद अली और शौकत अली (अलीभाई) इस आंदोलन के प्रमुख नायक थे।

असहयोग आंदोलन (सा. श. 1920 से 1922)

गांधी जी नेतृत्व में असहयोग आंदोलन 1920 में प्रारंभ हुआ। उन्होंने जनता को बताया कि सरकार के साथ असहयोग दिखाने के अलावा हुए; स्वराज्य पाने के लिए उन पर दबाव डालने के लिए ज़ोर दें। इस आंदोलन की ओर से न्यायालय, शैक्षिक

संस्थाएँ, शासन सभा, चुनाव और अंग्रेजी वस्तुओं के बहिष्कार किया गया। सरकारी कार्यक्रमों को बहिष्कार करने के साथ-साथ सरकार से ली गई उपाधियों को लौटा दिया। स्वतंत्रता आंदोलन को बड़े पैमाने पर कार्य रूप में लाने हेतु गांधी जी के द्वारा कई रचनात्मक कार्यक्रम की रचना हुई। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से कताई-बुनाई, अस्पृश्यता उन्मूलन और हिंदू मुस्लिम के बीच सामरस्य लाने पर ज़ोर दिया गया।

इस काल के प्रमुख नायक सी, आर, दास, मोतीलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस आदि ने आंदोलन में भाग लिया। इनका अहिंसात्मक और सत्याग्रह जैसे विधानों से समाज के सभी स्तर के लोगो आकर्षित होकर आंदोलन में भाग लिये। इस आंदोलन में विद्यार्थी, किसान और महिला भी शामिल थे। यह भारतीयों को एक नया अनुभव था। रवींद्रनाथ टैगोर ने 'नाइटहुड' और गांधीजी ने अपना 'कैसर-ए-हिंद' उपाधियों को ब्रिटिश सरकार को वापस दिया।

इसी समय आंदोलन को दमन करने हेतु सरकार ने कई क्रमों का अनुसरण किया। इसके जवाब में उत्तर प्रदेश के चौराचौरा में क्रोधित जनसमूह हिंसा कार्य में भाग लेकर वहाँ के पुलिस थाने के 22 पुलिस लोगों को सजीव दहन कर दिया। (1922) गांधीजी ने इस घटना को गंभीर रूप से स्वीकार किया। अपने अहिंसा सिद्धांत के विरुद्ध जनता के विद्रोह को देखकर दुख से असहयोग आंदोलन को रोका।

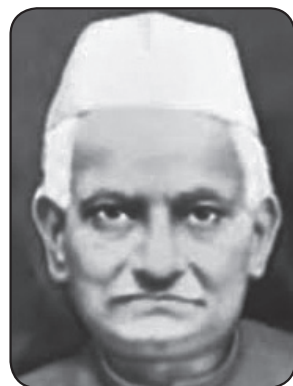
गांधीजी के प्रमुख कृतियाँ और पत्रिकाएँ

‘सत्य के साथ मेरा प्रयोग’, ‘हिंद स्वराज’, ‘दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह’ गांधी जी की कृतियाँ हैं। ‘हरिजन’ और ‘यंग इंडिया’ उनके द्वारा संपादित समाचारपत्र थे।

स्वराज्य की स्थापना में असहयोग आंदोलन को श्रेय न मिलने पर भी यह एक विशिष्ट प्रथम जनता आंदोलन था। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय भावनाएँ भारत के कोने-कोने में पहुँच सकीं। गांधीजी ने सा. श. 1924 से 1929 तक रचनात्मक कार्यक्रम हेतु खादी को जनप्रिय करना और हरिजन उद्धार कार्यक्रम के लिए अपने आप को समर्पित किया। स्वराज्यवादी सी.आर.दास, मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन का कार्यकलाप आगे बढ़े।

नेहरू रिपोर्ट या विवरण (सा. श. 1927) :

मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू जी के पिता थे। अंग्रेजों ने भारतीय राजनीतिक नायकों को सभी समुदायों को संतुष्ट करनेवाला एक संविधान को रचना करने की चुनौती दी। भारतीय सर्वपक्ष सम्मेलन में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति की रचना हुई। समिति ने अंग्रेजों को आश्चर्यचकित करने वाले एक संविधान रचना की। यह अंग्रेजों के अधिपत्य के अंतर्गत स्वयं प्रशासन के स्तर को स्वीकार करते हुए अंत में संपूर्ण स्वतंत्रता पाने के लक्ष्य को व्यक्त किया।



मोतीलाल नेहरू

साइमन नियोग (सा. श. 1928)

असहयोग आंदोलन रुकने से राजनीतिक आंदोलन तत्काल अपनी छवि को खो बैठा। अंग्रेज सरकार सा. श. 1919 के सुधार भारत के प्रांतों में कैसे कार्यरत हैं? इसका अध्ययन करके, रिपोर्ट देने के लिए साइमन आयोग को भारत भेजा (सा. श. 1928)। इस आयोग में सिर्फ अंग्रेज ही सदस्य थे। भारतीयों को इसमें प्रतिनिधित्व नहीं था।



साइमन आयोग (कमिशन) का बहिष्कार

भारतीयों ने 'साइमन वापस जाओ' नामक घोषणा के साथ नियोग को इनकार कर दिया। लाहौर में घटित प्रतिरोध तीव्र स्वरूप ले लिया। इस संदर्भ के लाठी प्रयोग से लाला लाजपत राय की मृत्यु हुई (सा. श. 1928)। उनके बलिदान से लोगों की सहनशीलता का बाँध टूट गया।

अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए लाला लाजपत राय द्वारा दी गई भविष्यवाणी इस प्रकार है - “मेरे शरीर पर पड़ी लाठी का मार, आगे आनेवाले दिनों में अंग्रेजों की लाश की पेटी की कीलें बनेंगी।”

पूर्ण स्वराज (सा. श. 1929) :

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जी नेहरू के रिपोर्ट में प्रस्तावित ब्रिटिश आधिपत्य के अंतर्गत अपने प्रशासन के प्रस्ताव न स्वीकार करने का परिणाम स्वरूप सा. श. 1929 में लाहौर में घटित कांग्रेस अधिवेशन में संपूर्ण स्वतंत्रता का निर्णय को पेश किया। सा. श. 1930 जनवरी 26 को 'पूर्ण स्वराज्य' दिन आचरण को अधिवेशन में निर्णय लिया गया। इस ऐतिहासिक दिन के स्मरण के लिए स्वतंत्र भारत के संविधान को जनवरी 26, सा. श. 1950 के दिन स्वीकार किया गया। तब से हर वर्ष उस दिन को 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाते हैं।

नागरिक कानून भंग आंदोलन :

नागरिक कानून भंग आंदोलन को सा. श. 1930 के मार्च 12 से गांधी जी ने प्रसिद्ध दंडी यात्रा के साथ आरंभ किया। चुनिंदा 78 अनुयायियों के साथ गांधीजी साबरमती आश्रम से गुजरात के समुद्र के किनारे दंडी तक करीब 375 किलोमीटर दूर चलें। लोगों से नमक उत्पादन कराने के द्वारा नमक कानून को तोड़ना इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था।



दंडी यात्रा का दृश्य

कानून भंग आंदोलन बहुत जल्द सारे देश में फैल गया। सब जगह पर लोगों ने हड़ताल, विदेशी वस्तुओं का इनकार, खादी प्रचार, शराब की दुकानों के आगे प्रतिरोध, अरण्य सत्याग्रह, कर निराकरण-आदि में भाग लिया। अंकोला नमक सत्याग्रह सारे भारत में प्रख्यात हुआ।

इसी समय पर पश्चिमोत्तर भारत में 'गड़ीनाडगांधी' खाँ अब्दुल गफ्फार खान ने 'खुदाई खिदमतगार' (भगवान का सेवक) नामक संघ स्थापित किया। नागालैंड में 13 वर्ष की रानी गायिडिन्लू ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिरोध किया। इसे देखकर अंग्रेज, भारतीयों को कुछ राजनीतिक छूट देने के लिए तैयार हो गए।

गोलमेज सम्मेलन (सा. श. 1930-1932) :

दंडीयात्रा के बाद अंग्रेज सरकार ने 3 गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किया। कांग्रेस की ओर से गांधी जीने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। लेकिन ये सम्मेलन भारतीय राजनीतिक समस्याओं को सुधारने में असफल थे।

ब्रिटिश सरकार ने 1935 में भारतीयों को सरकार में राजनीतिक और प्रशासनात्मक सहाभागिता को अधिक पैमाने में देने की दृष्टि से 'भारत सरकार कानून' को जारी किया।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) :

क्रिप्स आयोग की अफलता ने भारतीयों में क्रोध पैदा किया। गांधी जी ने सा. श. 1942 के अगस्त 8 को मुंबई में कांग्रेस की सभा की। वहाँ 'भारत छोड़ो' नामक प्रसिद्ध घोषणा का निर्णय लिया गया। भारतीयों को 'करो या मरो' नामक नारा दिया। सरकार ने दूसरे दिन ही गांधी जी तथा बाकी नायकों को बंदी बना लिया।



भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदार जन समूह

बंधन का समाचार फैलते ही सारे देश में हड़ताल, शिक्षा संस्थाओं तथा कारखानों में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध प्रतिरोध चला। पुलिस थाना, डाक-घर, रेलवे-स्टेशन में आदि कई जगहों पर आक्रमण हुए। विद्यार्थी, मज़दूर, किसान, आदि ने इस आंदोलन का समर्थन किया।

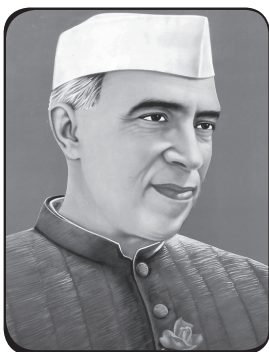
उत्तर प्रदेश का बलिया, बंगाल का तम्लाक और मुंबई अधिपत्य के सातारा सहित देश के कई भागों में क्रांतिकारियों ने पर्याय सरकार की स्थापना की। इसी बीच शिवमोग्गा जिले के ईसूरु गाँव ने कर्नाटक में सबसे पहले अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की।

'भारत छोड़ो आंदोलन' भी तत्क्षण के राजनीतिक उद्देश्य को सफल बनाने में असफल हुआ। पर भारत की जनता स्वतंत्रता पाने के लिए दृढ़ संकल्प लिये बैठी थी। यह संदेश स्पष्ट हुआ। यह गांधी युग के बहुत बड़ा प्रजा आंदोलन था।

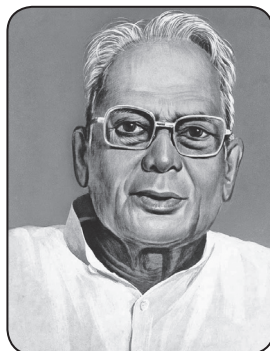
गांधीजी के बारे में आइंस्टाइन का बयान :

आगे आनेवाली पीढ़ियों को विश्वास करना कठिन होगा कि रक्त-माँस का बना ऐसा एक व्यक्ति इस भूमि पर जीवित था।

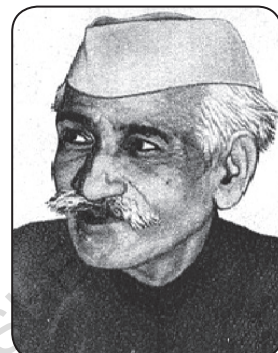
समाजवादी :



जवाहरलाल नेहरू



जयप्रकाश नारायण



आचार्य नरेंद्र देव

सा.श. 1930 के दशक में कांग्रेस के अंदर और बाहर समाजवादी चिंतनों का प्रचार हुआ। सा.श. 1934 के अधिवेशन में समाजवादियों का समूह कांग्रेस में स्पष्ट रूप से दिखने लगा। अधिकतर समाजवादी युवा पीढ़ी के थे। उन्होंने कुछ ही दिनों में कांग्रेस समाजवादी सोशलिस्ट पक्ष की स्थापना की। उसका महान सचिव जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव पक्ष के और एक अन्य प्रमुख नेता थे। समाजवादियों में सबसे महत्वपूर्ण नेता जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस थे। नेहरू अपने आप को समाजवादी कहते हुए, सैद्धांतिक रूप से गांधीजी के साथ थे।

समाजवादियों ने अनेक किसान और मजदूर संगठनों को स्थापित करने के साथ-साथ, भारतीय समाज के विभिन्न दुर्बलवर्गों के श्रेयाभिवृद्धि के लिए काम किया। जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अरुण असफ अली-आदि समाजवादी नायक क्विट इंडिया आंदोलन में भाग लेकर प्रसिद्ध नेता के रूप में उभर कर आए।

जयप्रकाश नारायण (जे.पी) :

जयप्रकाश नारायण जी का जन्म सा. श. 1902 में बिहार में हुआ। उन्होंने अमेरिका के विविध विश्वविद्यालयों में 7 वर्षों तक उच्च शिक्षा प्राप्त की। वहाँ अध्ययन करते समय उनको समाजवाद का परिचय हुआ। भारत आने के बाद जवाहरलाल नेहरू के मार्गदर्शन से कांग्रेस में शामिल हुए। सा. श. 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पक्ष की स्थापना की। सा. श. 1941 में बंदी होने पर जयप्रकाश नारायण अगले वर्ष हजारीबाग जेल से गायन हो गए। भू-गत हो गए। रहस्य स्थानों से ही भारत छोड़ो आंदोलन को समर्थन दिया। छदमवेश में उन्होंने सारे भारत का प्रवास किया। उनको 1944 में सरकार ने गिरफ्तार करके लाहौर किले में रखा। बाद में वहाँ से वे मुक्त हुए।

स्वतंत्रता के बाद उन्होंने विनोबा भावे के साथ 'भूदान आंदोलन' में भाग लिया। सा. श. 1970 के दशक में भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से बड़ा संक्रमण का काल था। सा. श. 1975 की आपातकालीन स्थिति ने भारत का राजनीतिक मानचित्र ही बदला। भ्रष्टाचार इस काल का बहुत बड़ा चर्चा का विषय था। सा. श. 1974 में सक्रिय रूप से राजनीति में प्रवेश करके जयप्रकाश नारायण 'संपूर्ण क्रांति' नामक आंदोलन को जन्म दिया। इस आंदोलन के परिणाम सा. श. 1977 में जनता पक्ष अधिकार में आया। आंतरिक संघर्ष के कारण जनता पक्ष के विभाजन से उन्हें दुःख हुआ। सा. श. 1979 में उनका निधन हुआ। लोग इन्हें प्यार से 'लोकनायक' कहते थे।

आदिवासी और किसान आंदोलन :

आदिवासी मूल रूप से किसान थे। कृषि से संबंधित समस्याओं के साथ अपने संघर्षों से जूझते हुए उनके आंदोलनों को किसान आंदोलन का प्रमुख भाग माना गया था। अंग्रेजों के शासन में किसान वर्ग की स्थिति बहुत शोचनीय थी। सरकार, जमींदार, दलाल, स्थानीय व्यापारी और अधिकारियों द्वारा उन पर शोषण किया जाता था। उनकी दुर्दशा ने ही उनको सरकार और जमींदारों के विरुद्ध भड़काने के लिए प्रेरित किया।

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खड़े होकर वीरता से लड़ने वालों में ये भारत के आदिवासी प्रथम थे। आदिवासियों के कई संघर्षों में सिर्फ ब्रिटिश अधिकारी ही उनके शत्रु नहीं

थे स्थानीय जमींदार, अमीर, ठेकेदार, ईसाई संस्थाएँ तथा ऐसी अन्य बाह्य संस्थाएँ उन पर शोषण करने वाला हर वर्ग उनके शत्रु थे। भयंकर रक्तपात आदिवासी दंगों का प्रमुख लक्षण था। कोल, संताल, मुंड, नाग-आदि आदिवासी जनजातियों में प्रमुख है। इन आदिवासी जनजातियों से ही उनके आंदोलन का नेतृत्व अस्तित्व में आया। जो इस आंदोलन का विशेष लक्षण था।

19वीं शताब्दी में किसानों ने प्रतिरोध और विद्रोह के रूप में अपना असमाधान व्यक्त किया। 20वीं शताब्दी में राजनीतिक शक्तियों की सहायता पाकर, उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से अपना शक्ति की वृद्धि की।

चंपारण, खेड़ा (कैर) बादोली, बंगाल के नील की खेती का संघर्ष, तथा मापिल्लेविद्रोह, ये कई प्रमुख किसान विद्रोहों हैं। हम तीन विद्रोहों के बारे में जानेंगे।

चंपारण, खेड़ा और मापिल्ले का विद्रोह :

चंपारण:

चंपारण (बिहार) किसान प्लांटों के विरोध का असमाधान और प्रतिरोध का एक लंबा इतिहास है। प्लांतर, बलपूर्वक नील उगाने के लिए किसानों से जबरदस्ती कर रहे थे। गांधी जी ने इनके विरुद्ध सा. श. 1917 में चंपारण सत्याग्रह प्रारंभ किया। अंत में किसानों की समस्या का सुधार हुआ। इस आंदोलन द्वारा बाबू राजेंद्र प्रसाद प्रमुख नायक बने।

खेड़ा किसान आंदोलन :

खेड़ा गुजरात राज्य का प्रमुख जिला है। सा. श. 1918 में फसलों के नुकसान के कारण किसान आर्थिक रूप से संकट में थे। इसलिए उन्हें 'करा' मुक्त करने के लिए सरकार से प्रार्थना की। सरकार ने इनकी प्रार्थना ठुकराकर 'करा' वसूल पर ज़ोर दिया। परिणाम स्वरूप खेड़ा में उनका आंदोलन प्रारंभ हुआ। गांधी जी ने आंदोलन को अपना पूरा समर्थन देकर किसानों को बताया कि सरकार को करा ना दें। अंत में सरकार ने बताया कि जो करा देने में समर्थ हैं, वे करा दे सकते हैं। इसे मानकर गांधीजी भी अपना आंदोलन छोड़ने पर सहमत हुए। इस आंदोलन द्वारा सरदार वल्लभभाई पटेल राजनीतिक नेता के रूप में उभर कर आए।

मापिल्ले विद्रोह (सा. श. 1921):

किसान विद्रोहों में मलबार का मापिल्ले का विद्रोह अत्यंत प्रसिद्ध है। (सा. श. 1921) मलबार प्रदेश के मुस्लिमों को मापिल्ला (मोप्लास) कहते हैं। वे प्रमुख रूप से कृषि के साथ चाय और कॉफी के बागानों में मज़दूरी करते थे। खेती में लगे कई लोग काश्तकार थे। बार-बार बढ़ाया गया लगान ही इस विद्रोह का प्रमुख कारण था। 19वीं शताब्दी में कई बार प्रतिरोध किये गये पर खिलाफत आंदोलन से मापिल्लों को एक नयी प्रेरणा मिली। स्थानीय मापिल्ले नेताओं ने आंदोलन का नेतृत्व निभाया। उन्होंने जमींदारों के विरुद्ध हिंसात्मक आंदोलन कर उनकी संपत्ति को नष्ट किया। हिंसा रोकने के लिए अंग्रेजों ने दक्षिण मलबार में सेना प्रशासन जारी किया। आंदोलन अल्पकाल में ही मतीय रूप ले लिया और धीरे-धीरे अपना प्रभाव खो बैठा।

महिला स्वतंत्रता सेनानी

रानी अब्बक्कादेवी :

गांधीजी से पहले चलाये गए स्वतंत्रता आंदोलन में कितूर रानी चेत्रम्मा, केलदी चेत्रम्मा की पंक्ति में आनेवाली और एक महिला का नाम है 'रानी अब्बक्कादेवी'। ये चौटा घराने से संबंधित थी। इनके चाचाजी तिरुमलराय ने अब्बक्कादेवी को युद्ध करने का प्रशिक्षण दिया था, तत्पश्चात् उन्होंने अब्बक्कादेवी को उल्लाल राज-गद्दी पर बिठाया। अबक्का का विवाह मंगलूरु के 'भंग' प्रांत से संबंधित लक्ष्मप्पा अरस से हुआ था। लेकिन इनका वैवाहिक जीवन दीर्घ काल तक नहीं रहा। इस प्रकार उन्हें वापस उल्लाल जाना पड़ा। जब पुर्तगालियों ने रानी अब्बक्का से समझौता उपहार देने की माँग की तो उसने इनकार कर दिया। परिणामस्वरूप 1555 में पुर्तगालियों रानी अबक्का पर युद्ध की घोषणा की। इस युद्ध में अब्बक्का की जीत हुई।



रानी अब्बक्कादेवी

1568 में पुर्तगालियों के वायसराय 'एन्टोनियोमोरहा' के नेतृत्व में उल्लाल में प्रवेश किया। रानी अबक्का ने स्वयं को बचाते हुए निकली और दो सौ सैनिकों के साथ पुर्तगालियों पर हमला कर दिया। इस युद्ध में जनरल 'पेक्सेटो' मारा गया। पुर्तगाली सैनिकों को बंदी बना लिया गया। इसी सिलसिले में एक और युद्ध हुआ जिसमें पुर्तगाल के एडमिरल 'मास्कारेन्स' उल्लाल के सैनिकों से मारा गया। रानी अबक्का ने पुर्तगालियों को मंगलूर के किले को छोड़ने के लिए दबाव डाला। परन्तु पुर्तगाली लोग उल्लाल की संपत्ति से आकर्षित होकर बार-बार उल्लाल पर हमला करते थे। सा. श. 1570 में अबक्का ने बीजापुर के सुल्तान और कालिकट के जामोरिन के साथ मित्रता का समझौता किया। जामोरिन के राजा के सेनापति 'कुल्टिपूकर मार्ककरं' ने अबक्का देवी के पक्ष में युद्ध किया और मंगलूर के किले को अपने कब्जे में ले लिया। वापस आते समय पुर्तगालियों के हाथों से मारा गया। अबक्का देवी के पति लक्ष्मरत की सहायता से अबक्का देवी को युद्ध में हराकर उन्हें कैद कर लिया गया। कारागृह में ही उनकी मृत्यु हो गई।

रानी अबक्का देवी की याद में मंगलूर के पास उल्लाल में 'वीर रानी अबक्का उत्सव' मनाया जाता है। शूर-वीर महिलाओं को उनकी उपलब्धियों के लिए 'वीर - रानी अबक्का पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में दिनांक 15-1-2003 के दिन भारतीय डाक विभाग द्वारा रानी अबक्का के भावाचित्रयुक्त पोस्टल कवर लोकार्पण किया गया है।

बल्लारी सिद्धम्मा (सा. श. 1903-1981)

उनका जन्म सा.श. 1903 में वर्तमान हावेरी जिले के डुंडसी गाँव के एक पारंपरिक परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम 'कोट्टिगे बसप्पा' था। वे पेशे से व्यापारी थे साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के प्रति उत्साही थे। इनके पिताजी सिद्धम्मा जी को समाचार पत्र लाकर देते थे, जिनके माध्यम से वे राष्ट्रीय विचारधाराओं को पढ़कर जानकारीयाँ प्राप्त करती थीं। इनका विवाह बल्लारी के मुरुगप्पा जी से हुआ ;

वे भी स्वतंत्रता सेनानी थे । इसी वजह से सिद्धम्मा संपूर्ण रूप से स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लेती थी। 1930 के दशक में पुराने मैसूर में तेजी से स्वतंत्रता आंदोलन चल रहा था । ऐसे में एस. निजलिंगप्पा, टी. सिद्धलिंगैया, सरदार वीरण्ण गौड़ा जैसे अनेक स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले नेता अग्रिम पंक्ति में मौजूद थे । बल्लारी सिद्धम्मा जी ने सा. श. 1938 में जो शिवपुर कांग्रेस अधिवेशन हुआ था उसमें भाग लिया था । 13-4-1938 के दिन ध्वजारोहण करने के बाद वे गिरफ्तार हो गयी । इस वजह से एक महीने तक वे जेल में रहीं। पूरे रियासत में वे ही प्रथम महिला थी, जिन्होंने ध्वजारोहण किया था। रियासत के अनेक समाचार पत्रों में उनकी वचनबद्धता की प्रशंसा का वर्णन था । जेल से छूटने के बाद सिद्धम्मा ने राष्ट्रीय आंदोलन में पूरी तरह से आगे बढ़े। बाद में सा. श. 1939 में चित्रदुर्गा के अरण्य सत्याग्रह में भाग लिया । दावणगेरे तहसील के अनगोडु और मायकोण्डा के अरण्य प्रदेश में ताड़ के पेड़ों को काटने के आंदोलन में भाग लेकर दिनांक 29-09-1939 से लेकर 08-9-1940 तक जेल में बंदी रही । इसके बाद सा. श. 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में सिद्धम्मा ने भाग लिया । भारत स्वतंत्र होने के बावजूद भी मैसूर विरासत, भारतीय संघ व्यवस्था में शामिल न होने के कारण सिद्धम्मा जी ने सा. श. 1947 में 'राजमहल सत्याग्रह' अथवा 'मैसूर चलो' सत्याग्रह में भाग लिया। इस आंदोलन के कारण मैसूर रियासत, भारतीय संघ में शामिल हुआ । इसके परिणाम स्वरूप अक्तूबर सा. श. 1947 में के. सी. रेड्डी के नेतृत्व में नई सरकार अस्तित्व में आयी । स्वतंत्रता के बाद सिद्धम्मा जी ने दावणगेरे तहसील के विधायक के तौर पर काम किया । ग्रामीण गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए 'मातृ-मंदिर' की स्थापना करके उनके लिए आशा की किरण बन गयी । इनकी इस सेवा भावना के लिए राज्यसरकार ने ताड़ पत्र प्रदान - करके उनको सम्मानित किया। इस प्रकार सिद्धम्मा जी ने मैसूर की स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर महिलाओं का गौरव बढ़ाया है ।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय (सा. श. 1903-1988)



कमलादेवी चट्टोपाध्याय

कमला देवी चट्टोपाध्याय का जन्म मंगलूर में तीन अप्रैल 1903 के दिन रईस घराने में हुआ था। इनके पिता का नाम धारेश्वर अनंतराय था। माता का नाम गिरिजा बाई था। अंग्रेजों की साम्राज्यवादी व्यवस्था में वरिष्ठ अधिकारी थे। कमला देवी की पढ़ाई कैथोलिक कान्वेंट और सेंट मेरिस स्कूल में हुई थी। इनका विवाह 14 वर्ष की उम्र में हुआ था। दुर्भाग्यवश थोड़े ही दिनों में ये विधवा हो गई। सरकारी नौकरी में होने के कारण इनके पिता का तबादला मद्रास में हो गया तब कमला देवी ने अपनी पढ़ाई को मद्रास में आगे बढ़ाया। बाद में अंग्रेजों का मशहूर “लंदन स्कूल आफ एकोनोमिक्स” में उपाधि प्राप्त करने के बाद वे स्वदेश लौटीं। यहाँ इन्होंने अपने को समाज सेवा के क्षेत्र में लगाया। इसी संदर्भ में हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय से इनका परिचय हुआ, जो कवि साहित्यकार और स्टेज कलाकार थे। कमलाबाई ने इनसे पुनर्विवाह किया।

कमलादेवी राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में पहचानने वाली कर्नाटक की बहुमुखी प्रतिभावान महिला थी। ये गांधीजी और सरोजिनी नायडू से प्रभावित होकर सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेनेवाली महिला थी। उन्होंने कर्नाटक राज्य में भ्रमण करके युवकों को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। 1929 में इलाहबाद नगर में राष्ट्रीय ध्वज को हाथ में लेकर कमलादेवी ने नारे लगाते हुए जुलूस में भाग लेकर अंग्रेजों का विरोध किया। लाहौर कांग्रेस अधिवेशन के फैसले के अनुसार गांधीजी ने 12 मार्च 1930 के दिन अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से नमक सत्याग्रह का आंदोलन प्रारंभ किया। मई 5 तारीख के दिन दंडी नामक जगह पहुँचकर 6 मई के दिन नमक बनाकर अंग्रेजों के नमक कानून का विरोध किया। इस अवसर पर देश की जनता को नमक सत्याग्रह में भाग लेने को कहा। कमला देवी ने गांधीजी से मुलाकात करके महिलाओं को नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए अनुमति प्राप्त की। कमला देवी और अवंती बाई गोखले ने पहली टोली में रहकर नमक कानून का

उल्लंघन करने का आंदोलन में भाग लिया ।

“गांधी नमक को खरीदो, इसका मूल्य छह महीने की सजा है” ऐसे कहते हुए नमक को बेचकर अंग्रेजों के सामने गिरफ्तार होकर यरवाडा जेल में सजा का अनुभव पायी । जेल से छूटने के बाद भी बंबई के गबाकापुर में स्वदेशी वस्तुओं को बेचने का काम किया । राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के सेवादल (महिलाओं की टोली) की जिम्मेदारी सँभाला । पूरे भारत में घूमकर महिला स्वयंसेवकों को संगठन किया । बंबई और बोरीवी में महिला स्वयंसेवकों के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । सेवादल द्वारा किये जानेवाले गतिविधियों को देखने के बाद अंग्रेजी सरकार ने इस संगठन को रद्द कर दिया और कमला बाई को गिरफ्तार कर लिया। कमला बाई को आर्थर रास्ते पर स्थित एक जेल में बंद कर दिया गया । इसी जेल में मीराबेन नामक स्वतंत्रता सेनानी से मुलाकात की। इसके उपरांत कमला बाई को वेलूरु जेल में भेज दिया गया ।

कांग्रेस पार्टी में कई आंतरिक समूह थे। सैद्धांतिक रूप से समाजवाद धारणा से प्रभावित होकर नेहरूजी, राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव आदि नेताओं ने कांग्रेस पार्टी में ही आंतरिक रूप से ‘कांग्रेस सोशियलिष्ट पार्टी’ की स्थापना की । कमलादेवी चट्टोपाध्याय 1934 में इस पार्टी की सदस्य बनी । कमलादेवी ने कर्नाटक में घूम-घूमकर समाजवाद के सिद्धांतों का सार्वजनिक रूप से भाषण देकर प्रचार किया । इस प्रकार उन्होंने लोगों को जागृत किया । इससे उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । कमला देवी न केवल एक स्वतंत्रता सेनानी थी बल्कि वे एक समाज सुधारक, महिला - चिंतक, साहित्यकार और अभिनेत्री भी थी । उन्होंने अनेक क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ प्रदान की थी । सा. श. 1955 में इन्हें पद्मभूषण, सा. श. 1962 में व्रतमूल फाउन्डेशन द्वारा पुरस्कार, सा. श. 1966 में रैमन मैगसेसे इंटरनैशनल अवार्ड, शांतिभारत देसेटीकोनम पुरस्कार, सेन्ट्रल अकादमी पुरस्कार और सा. श. 1987 में इन्हें पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया था । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कमलादेवी चट्टोपाध्याय बहुमुखी प्रतिभा होने के साथ-साथ कर्नाटक की शान है । सा. श. 1988 में इनका निधन हो गया ।

यशोधरम्मा दासप्पा (सा. श. 1905-1980)

यशोधरम्मा जी का जन्म 28-5-1905 में बेंगलूरु में हुआ था । इनके पिताजी का नाम रामय्या और माता का नाम रेवम्मा था । इनके पिताजी सुधार मनोभाववाले व्यक्ति थे। इन्होंने अपनी प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा बेंगलूरु में पायी थी । मद्रास के क्वीन मेरी कॉलेज में प्रवेश पाकर इंटर मीडिएट की शिक्षा पूर्ण किया। बेंगलूरु वापस आने के बाद राव साहेब चैन्नय्या जी के तीसरे पुत्र दासप्पा के साथ 1926 में विवाह हुआ । दासप्पा और यशोधरम्मा समाज सेवक थे। गांधीजी के प्रभाव में आकर वे राष्ट्रीय कांग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता बन गये । वर्धा सेवाग्राम में कुछ दिन इस दंपति अपनी सेवाएँ अर्पित कर अपने मूल आवास स्थान को लौटे। मैसूरु रियासत में दंपति ने निरंतर रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया । इतना ही नहीं स्वतंत्रता के बाद इस दंपति ने देखा कि मैसूरु रियासत भारतीय संघ में शामिल होने के साक्षी बने ।

मैसूरु न्याय विधायक सभा के चुनाव में इनके पति एच.सी. दासप्पा जी प्रजा संयुक्त दल के उम्मीदवार बने थे । यशोधरम्मा कांग्रेस की सदस्या बनी थी। यशोधरम्मा जी ने समाज सेविका के तौर पर काम करते हुए, सा. श. 1938 में स्वतंत्रता के आंदोलन जो शिवपुरा ध्वजसत्याग्रह का एक भाग था उसमें यशोधरम्मा ने भाग लिया था। सा. श. 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन था । इस आंदोलन में यशोधरम्मा दासप्पा का घर स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित गतिविधियों का रहस्यात्मक केंद्र बना था । आंदोलन संबंधी लेखनों को 'ज्वाला' नामक पत्रिका में गुप्त रूप से मुद्रण करवाया था ।

मैसूरु रियासत में प्रजा सरकार की स्थापना के लिए सा. श. 1947 में 'मैसूरु चलो' आंदोलन के लिए यशोधरम्मा दासप्पा ने लोगों को संगठित किया । मैसूरु राजमहल के सामने हड़ताल हुआ। इस आंदोलन की तीव्रता को ध्यान में रखकर मैसूरु के राजा ने अपने अधिकार जनता को सौंप दिया। स्वतंत्रता के बाद यशोधरम्मा दासप्पा, विधायक, लोकसभा सदस्य एस. निजलिंगप्पा के मंत्री-मंडल में समाज कल्याण मंत्री के तौर पर अपने अद्भुत सेवाएँ अर्पित की थी । कैंसर की वजह से सा. श. 1980 में यशोधरम्मा दासप्पा जी का निधन हो गया।

उमाबाई कुन्दापुर (सा. श. 1892-1992)

उमाबाई कुन्दापुर जी का जन्म सा. श. 1892 ईसवी में कर्नाटक राज्य के दक्षिण कन्नड जिले के कुन्दापुर स्थान में हुआ। इनके पिता गूलिकेरे कृष्णराय और माता तुंगाबाई थे। इन्होंने तेरह वर्ष की उम्र में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। इनका विवाह संजीव राव से हुआ था। सा. श. 1921 के बाद इनके पति के प्रोत्साह से स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लेना शुरू किया था। खादी वस्त्रों को धारण कर कांग्रेस द्वारा होने वाली गतिविधियों को निभाया। दुर्भाग्य से सा. श. 1923 में इनके पति का देहांत हो गया और इस वजह से वे हुबली में आकर रहने लगी।



उमाबाई कुन्दापुर

इन्होंने तिलक, गांधी और हर्डेकर जी की राष्ट्रीयता की आलोचना से प्रभावित होकर मराठी भाषा में 'स्वदेशी व्रत' नामक नाटक की रचना से स्वदेशी सिद्धांत की महत्ता का प्रतिपादन किया। मुंबई में सारस्वत साहित्यिक समाज, भगिनी मण्डली और तिलक विद्यालय की जिम्मेदारी निभाया। परिणाम स्वरूप स्त्रियों में स्वदेशी भावना, खादीवस्त्रों का प्रचार और राष्ट्रीय शिक्षा से संबंधित जागृति कार्यभार संभाला। तिलक के नेतृत्व में स्वतंत्रता के संघर्ष कार्यक्रम में भी भाग लिया था। गांधीजी द्वारा संचालित कार्यक्रम में भी उमाबाई भाग लेने लगी। सा. श. 1923 में एन. एस. हर्डेकर जी ने सेवा दल की स्थापना की थी। इस संस्था के महिला वर्ग का नेतृत्व उमाबाई ने किया था। इतना ही नहीं सा. श. 1924 में बेलगाँव के कांग्रेस अधिवेशन में भी इनकी प्रमुख भूमिका थी। नमक सत्याग्रह आंदोलन में भी इन्होंने भाग लिया था। परिणामस्वरूप इन्हें चार महीने तक कारागृह में रहने का दंड दिया गया। हिण्डलगा और यरवडा जेल में उमाबाई बंद थी। कुछ महीनों बाद जेल से रिहा होने के बाद अंकोला, शिरसी, सिद्धापुर, जैसी जगहों में सत्याग्रह में भाग लेने के कारण इन्हें पुनः जेल में बंद कर दिया गया। उमाबाई कुन्दापुर अनेक निराश्रित महिलाओं के लिए आश्रय दाता बन गई। अस्वस्थ होने के कारण उमाबाई 'भारत छोड़ो' आंदोलन (सा. श. 1942) में भाग नहीं ले सकी। फिर भी इन्होंने किसी तरह से तटस्थ रहकर आंदोलन का समर्थन दिया। इतना ही नहीं इन्होंने उग्र स्वभाव वाले

क्रांतिकारियों को आश्रय दिया था। उमाबाई ने गांधीजी की सलाह का पालन करते हुए कस्तूरबा निधि कोष की जिम्मेदारी अपने हाथों में लिया और समाज सुधार कार्य को जारी रखा। इन्होंने निःस्वार्थ रूप से देश की स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया था। इनका निधन सा. श. 1992 में हुआ था।

स्वतंत्रता की ओर

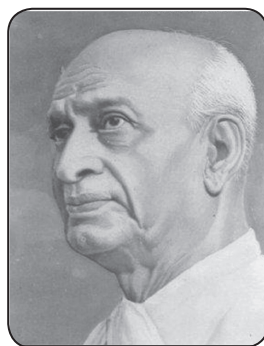
राष्ट्रीय आंदोलन का दबाव और दूसरे महायुद्ध से उत्पन्न स्थिति से अंग्रेज भारत की समस्याओं को बहुत जल्द सुधारने का समाधान ढूँढ़ने लगे। इस समय महायुद्ध के कारण अंग्रेजों की आर्थिक और सैनिक शक्ति क्षीण हो गई।

दूसरे महायुद्ध के अंत में (सा. श. 1945) अधिकार में आये मजदूर पक्ष ने भारत के साथ राजनीतिक समझौता करना चाहा। ऐसी अवस्था में भारत के भविष्य से संबंधित निर्धारण को, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल ने लिया।

भारत के अधिकार को हस्तांतरित करने के लिए अपनाने वाले मार्गों को ढूँढ़ने के लिए अंग्रेज सरकार ने सा. श. 1946 में कैबिनेट नियोग को भारत भेजा। पर जिन्ना के नेतृत्व का मुस्लिम लीग, पाकिस्तान नामक मुस्लिम देश के लिए हठ किया। इससे भारत का विभाजन करना अनिवार्य हुआ। सा. श. 1947 के जून 3 में भारत से अंतिम और 34 वाँ वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन भारत को विभाजन करके, अधिकार, भारतीयों को हस्तांतरित करने के ऐतिहासिक निर्णय की घोषणा की।



मौलाना अबुल कलाम आजाद



वल्लभभाई पटेल

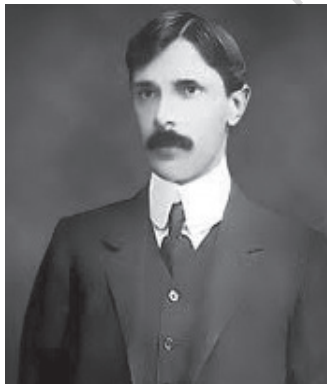
सा. श. 1947 अगस्त 14 को पाकिस्तान भारत से अलग हुआ। भारत सा. श. 1947 अगस्त 15 को स्वतंत्र हुआ। जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। आरंभ में व्यापार के उद्देश्य से भारत आए ब्रिटिश लोगों ने करीब 2 शताब्दियों तक भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से दुर्बल बनाया। भारतीयों के निरंतर आंदोलन से साम्राज्यवादियों को अंत में यहाँ से लौटना पड़ा। दीर्घ काल तक घटित राष्ट्रीय आंदोलन का अंतिम दिन 15 अगस्त सा. श. 1947 से भारत के इतिहास में एक अविस्मरणीय दिन है। भारत के करोड़ों लोगों के हृदय में वह दिन आज भी शाश्वत रूप से बसा हुआ है। हर वर्ष यह दिन स्वतंत्रता आंदोलन के आशय को स्मरण कराता रहता है।



लार्ड माउंटबेटन

मोहम्मद अली जिन्ना सा. श. 1876-1948 और मुस्लिम लीग :

स्वतंत्र पूर्व भारत के राजनीतिक विकास में जिन्ना की भूमिका महत्वपूर्ण है। व्यवसाय में वे वकील थे, उदार राष्ट्रवादी भी थे। आरंभ में वे मुस्लिम लीग के साथ अपनी पहचान नहीं बनाई और सिद्धांत से भी उसके विरोधी थे। उन दिनों उन्हें हिंदू-मुस्लिम एकता का दूत कहकर गिना जाता था। सा. श. 1913 में मुस्लिम लीग के सदस्य बनकर वे भारतीय मुस्लिम समुदाय के नायक के रूप में अस्तित्व में आए।



मोहम्मद अली जिन्ना

1927 में जिन्ना ने अपने 14 अंश की माँगों को रखा। इसे 'दिल्ली घोषणा' कहते हैं। ये कारक मतीय राजनीति को पोषण किये। ये 14 अंशों को सा. श. 1928 में जिन्ना द्वारा तैयार किया गया 14 अंश का अभिलेख के भाग के अंतर्गत रखा गया। ये 14 अंश का अभिलेख मुस्लिम लीग के मतीय राजनीतिक सिद्धांत के मार्गदर्शक थे। जिन्ना सा. श. 1936 के बाद 'दो राष्ट्रों के सिद्धांत के प्रतिपादक' बने। इस प्रस्ताव को सा. श. 1940 में मुस्लिम लीग लाहौर

अधिवेशन में स्वीकार किया गया। इसके बाद राजनीतिक विकास के कारण भारत के विभाजन के माध्यम से पाकिस्तान का उदय हुआ।

चौधरी रहमत अली और उनके तीन दोस्तों द्वारा सा. श. 1933 में लिखे गए एक पत्र में अलग मुस्लिम राज्य का प्रस्ताव था। पंजाब, अफगान, कश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान नामक प्रांतों के नाम का पहला इंग्लिश अक्षर अपनाकर पाकिस्तान कहा गया। पाकिस्तान नाम के अंतिम तीन वर्ण बलूचिस्तान प्रांत का संकेत हैं।

सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना :

स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका अपूर्व है। वे कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रतिभावान विद्यार्थी थे। लंदन में आई. सी. एस परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया था। देशबंधु चितरंजन दास के प्रभाव से आंदोलन में आकर्षित होकर राजनीति में उतरे। विशेष रूप से वे स्वामी विवेकानंद के जीवन और उनके लेखनों से प्रभावित हुए थे।



सुभाषचंद्र बोस

सुभाष जी को गांधीजी पर अभिमान था। लेकिन उनकी राजनीति को विरोध करते थे। अंत में गांधीजी के साथ तीव्र मतभेद कर सा. श. 1939 में कांग्रेस अध्यक्ष स्थान को इस्तीफा देकर पक्ष से बाहर आए। बाद में 'फार्वर्ड ब्लाक' नामक एक नये पक्ष का संगठित किया।

उस समय दूसरा महायुद्ध ज़ोरों से चल रहा था (सा. श. 1939 से 1945) :अंग्रेजों ने बोस की क्रांतिकारी नीति को ध्यान देते हुए। उन्हें विद्रोही समझकर गृह बंधन में रखा । पर बोस जी बंधन से गुप्त रूप से निकलकर पेशावर तथा काबूल (अफ़गानिस्तान) द्वारा मास्को जाने का प्रयास किया। वहाँ से हवाई जहाज के द्वारा जर्मन के बर्लिन नगर को पहुँचे । जर्मनी के सर्वाधिकारी हिट्लर के साथ समझौता किया। अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना उनकी महान योजना थी। (तब जर्मनी के विरुद्ध अंग्रेजों ने दूसरी विश्व युद्ध लड़ रहे थे)

इस बीच जापान ने ब्रिटिशों के विरुद्ध दूसरे महायुद्ध में प्रवेश किया। युद्ध में इंग्लैंड की सेवा में करीब 40,000 भारतीय सैनिक जापान के युद्ध कैदी बने थे। वे मोहन सिंह नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय सेना (इंडियन नेशनल आर्मी) आई.एन.ए. अथवा 'आजाद हिंदफौज' नाम से संगठित हुई। कांग्रेस, महात्मा गाँधीजी और जवाहरलालजी के साथ वैचारिक मतभेदों के बावजूद अपनी सेना टुकड़ियों के नाम महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आज़ाद का नाम रखा गया। यह तथ्य सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गरिमा का दर्पण है। सा. श. 1943 में सुभाष चंद्र बोस सिंगापुर जाकर आई.एन.ए. का नेतृत्व को स्वीकार किया। सुभाष चंद्रबोस को 'नेताजी' कह कर संबोधित किया गया। शीघ्र ही नेताजी ने सिंगापुर में 'स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार' को स्थापित किया। जर्मनी, इटली, जापान, देशों से मान्यता मिली। 'दिल्ली चलो' नामक घोषणा से नेताजी के नेतृत्व में आई.एन.ए. ने बर्मा के ओर से भारत के भूभाग पर करीब 150 मील तक अंदर आया था। यहाँ भारत का त्रिवर्णध्वज को भारत की भूमि पर फहराया। पर कुछ ही समय में अंग्रेज सेना ने बर्मा की राजधानी रंगून को वश कर लिया। साथ में आई.एन.ए. को हारना पड़ा। आई.एन.ए. सैनिकों को निशस्त्र करके बंदी बनाया। शत्रुसेना के आगे जापान शरणागत होने के बाद सा. श. 1945 नेताजी ने टोकियो गए। वहाँ पर घटित विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई कहा जाता है। पर विमान दुर्घटना के बारे में मतभेद है।

आई.एन.ए. अपने लक्ष्य प्राप्त करने में अफल तो आवश्यक हुआ। पर स्वतंत्रता संग्राम में उसको एक महत्वपूर्ण स्थान है। नेताजी ने घोषणा की थी - "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" नेताजी के अप्रतिम सामर्थ्य के लिए आई.एन.ए. एक मिसाल है। कोलकता से मास्को और जर्मनी से जापान तक की समस्याओं के समय में उनकी यात्राएँ भारतीय इतिहास ऐसे क्षण हैं, जिसे पहले कभी न देखा होगा। ब्रिटेन के शत्रुओं की सहायता से भारत को स्वतंत्र कराना सुभाष जी का एक मात्र लक्ष्य था। ये भारत की जनता को धैर्य, साहस तथा उदात्त देश-प्रेम की उज्ज्वल परंपरा छोड़ गए थे।

आई.एन.ए. अपने लक्ष्य साधने में अफल अवश्य हुआ, पर उसके लिए इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। उनका आंदोलन भारत के इतिहास में अविस्मरणीय स्थान दिलाता है।

अंबेडकर और उनके सुधार

डॉ. बी.आर.अंबेडकर (सा. श. 1891-1956) दलित और अन्य शोषित वर्गों के विकास के लिए काम करनेवाले एक महान आंदोलनकार थे। अंबेडकर का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के महो गाँव में सा.श. 1891 अप्रैल 14 को हुआ। रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई सकपाल उनके माता-पिता थे। वे अत्यंत प्रतिभावान थे। वे निरंतर अध्ययन से विशेष व्यक्तित्व का स्वयं निर्माता थे। आज भी प्रतिष्ठित लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स, कोलंबिया विश्वविद्यालय से (अमेरिका) पी एच.डी, एल.एल.डी, उपाधियों को अर्जित किया था। बार-एट-ला भी प्राप्त किया था। उनकी शैक्षिक उपाधियाँ उनके बौद्धिक महान् व्यक्तित्व को दर्शाती हैं। सामाजिक परिवर्तन को संविधानात्मक मार्ग से प्राप्त करने का उनका संकल्प और क्रियाशीलता उनके विशेष गुण हैं।



डॉ बी आर अंबेडकर

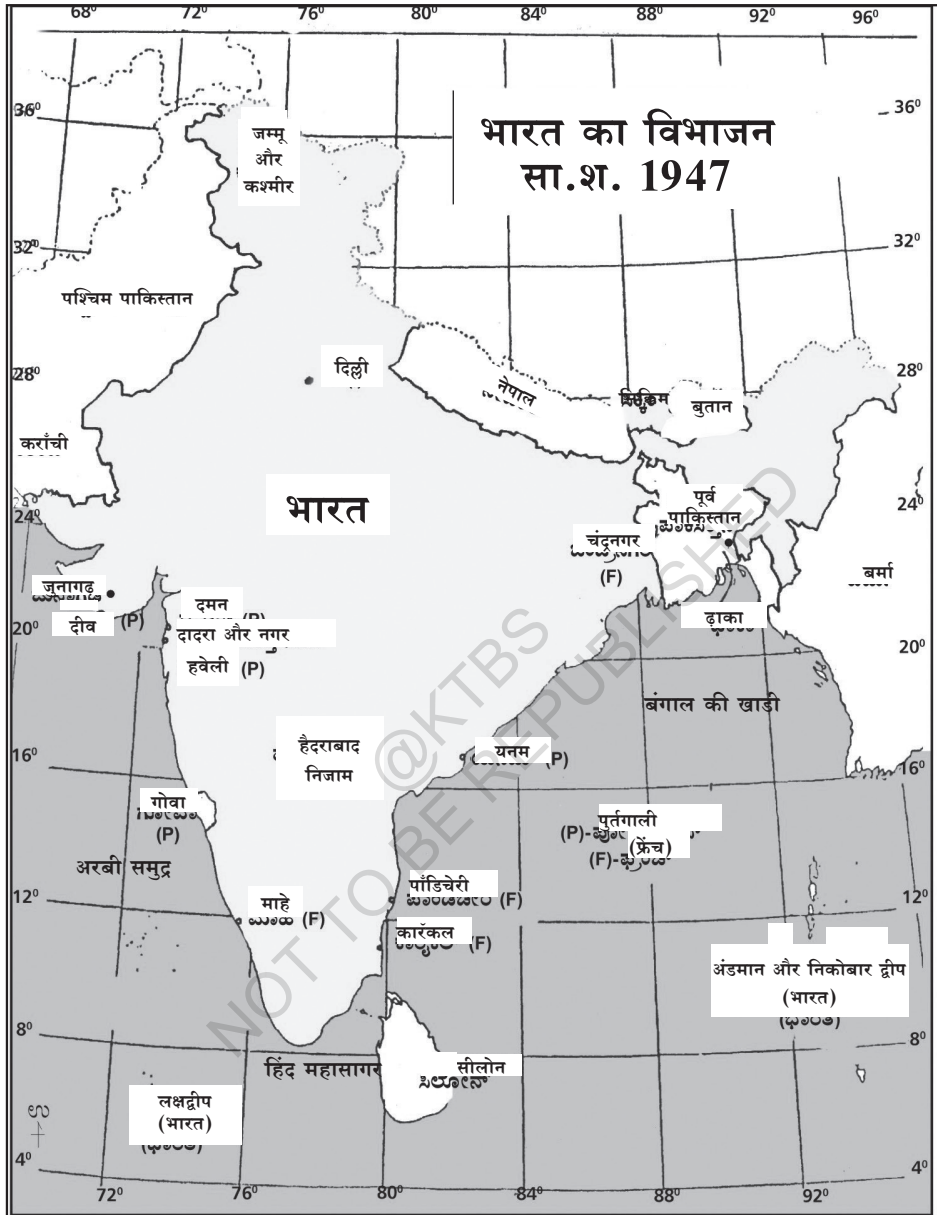
सामाजिक असमानता को दूर करना है तो संवैधानिक मार्ग ही एकैक अस्त्र है - यह उनका विश्वास था। अंबेडकर का विचार था कि दलित, शोषितों को राजकीय प्रातिनिधित्व मिलने पर ही, उनका विमोचन होगा। इसलिए अस्पृश्यता के विरुद्ध अनेक संघर्ष किए। उनमें महाद सत्याग्रह, नासिक का कलाराम देवालय में प्रवेश करना आदि संघर्ष महत्व के हैं। इस तरह दलितों में जागृती तथा स्वाभिमान पैदा किया। 'गूंगा नायक', 'बहिष्कृत भारत' आदि पत्रिकाओं का संपादक बनकर दलित, शोषित वर्गों का तथा अस्पृश्यों का आवाज़ बने। बहिष्कृत हितकारिणी सभा

नामक संगठन स्थापित किया। स्वतंत्रता के बाद भारत का संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष बनकर संविधान के निर्माण के नेतृत्व की जिम्मेदारी निभा कर “संविधान शिल्पी” नाम से ख्यात हुए।

अंबेडकर ने भारतीय राष्ट्रवाद की संकल्पना का प्रतिनिधित्व बना था। गाँधीजी के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता पहली प्राथमिकता थी, तो अंबेडकर के लिए सामाजिक स्वतंत्रता पहली प्राथमिकता थी। सामाजिक रूप से उत्पीड़ितों को लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक रूप से ऊपर उठाना उनके लिए मुख्य था। इसके लिए लाखों बेजुबान भारतीयों के प्रतिनिधि बने थे। वे अस्पृश्य जाति के होने के कारण से हर तरह के अपमान को और सामाजिक बहिष्कारों का कठिन अनुभव प्राप्त किये थे। दलित और शोषित वर्ग के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को प्राप्त करने से ही उनकी मुक्ति यह इनका मत था।

क्रियाकलाप : डॉ. बी. आर. अंबेडकर द्वारा लिखित कृतियों की तालिका बनाकर और उनके द्वारा तैयार किये गये 'हिंदू कोड बिल' के बारे में अधिक जानकारी संग्रह कीजिए।

डॉ. बी.आर.अंबेडकर दलित वर्गों के प्रतिनिधि के रूप में लंदन के तीन गोलमेज सम्मेलन में भाग लिये थे। अंग्रेजों के द्वारा जारी किया गया मतीय निर्णय के परिणाम स्वरूप (कम्युनल अवार्ड सा. श. 1932) दलित वर्ग के लिए प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्रों की रचना हुई। इस निर्णय के विरुद्ध में गांधी जी ने पूना के यरवाडा जेल में आमरण अनसन सत्याग्रह किया। अंत में गांधीजी और अंबेडकर के बीच 'पूना समझौता' से समस्या का समाधान हुआ। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम कानून मंत्री थे। सा. श. 1956 दिसंबर 6 को उनकी मृत्यु हुई। इसके कुछ महीने पूर्व बौद्ध धर्म को मतांतरित हुए। सा. श. 1990 में इनको मरणोत्तर 'भारत रत्न' उपाधि प्रदान की गयी।



भारत का विभाजन, सा. श. 1947

प्रमुख घटनाएँ : (सा.श.)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	-	1885
मंदगामी युग	-	1885-1905
तीव्रगामी युग	-	1905-1919
बंगाल का विभाजन	-	1905
मुस्लिम लीग की स्थापना	-	1906
सूरत फूट (दरार)	-	1907
जलियाँ वालाबाग हत्याकांड	-	1919
गांधी जी का जन्म	-	1869 अक्टूबर 2
असहयोग आंदोलन	-	1920 से 1922
चौरी-चौरा दुर्घटना	-	1922
पूर्ण स्वराज्य की घोषणा	-	1929
पूर्ण स्वराज्य आचरण दिवस	-	1930 जनवरी 26
नमक सत्याग्रह	-	1930 मार्च 12
द्वितीय विश्व युद्ध	-	1939- 1945
भारत छोड़ो आंदोलन	-	1942
भारत को अधिकार हस्तांतरण की घोषणा	-	1947 जून 3
स्वतंत्र पाकिस्तान की रचना	-	1947 अगस्त 14
स्वतंत्र भारत की रचना।	-	1947 अगस्त 15

////// अभ्यास //////////////////////////////////

I. रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्दों से भरिए :

- 1 सा. श. 1938 में यशोदम्मा _____ में भाग लिया ।
2. स्वदेशी व्रत नाटक के रचयिता _____ है ।
3. गांधीजी के राजनीतिक गुरु _____ थे।
4. चौरी चौरा की घटना _____ में हुई।

5. “पूर्ण स्वराज” का प्रस्ताव _____ में पारित किया गया था।
6. स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री _____ थे।
7. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना _____ की।
8. होमरूल आंदोलन की शुरुआत करनेवाले _____ थे।
9. भारतीय राष्ट्रीय सेना (ऐ.एन.ए) का नेतृत्व _____ किया।
10. संविधान रचना सभा के अध्यक्ष _____ थे।

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

11. “स्वराज्य मेरा आजन्म अधिकार है उसे मैं पाकर ही रहूंगा”, नारा किसने कहा?
12. स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीयुग का आरंभ कब हुआ?
13. फॉरवर्ड ब्लॉक को किसने प्रारंभ किया?
14. ‘तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा’ यह घोषणा किसकी है?
15. संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे?
16. भारत का लौह पुरुष किसे कहते हैं?

III. दो तीन वाक्य में उत्तर लिखिए :

17. उल्लाला की रक्षा में पुर्तगालियों के विरुद्ध रानी अब्बक्का देवी के संघर्ष का वर्णन कीजिए।
18. “बहुमुखी प्रतिभा की धनी कमला देवी चट्टोपाध्याय, कर्नाटक की शान है।”
- इसका समर्थन कीजिए।
19. स्वतंत्रता संग्राम में उमादेवी कुंदापुर के योगदान की सूची बनाइए।
20. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किन्हीं दो उद्देश्यों को लिखिए?
21. लाल, बाल, पाल नामक प्रसिद्ध राष्ट्रीय नायक कौन थे?
22. जलियांवाला बाग हत्याकांड कब हुआ? इस घटना के कारणकर्ता अंग्रेज अधिकारी कौन है?

23. दंडी यात्रा का महत्व क्या है ?
24. भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में लिखिए ?
25. प्रमुख आदिवासी तथा किसान आंदोलन के नाम लिखिए ?

IV. टिप्पणी लिखिए :

26. भारतीय राष्ट्रीयता के विकास के लिए उत्तरदायी अंश ।
27. रौलट कानून ।
28. सुभाष चंद्र बोस ।
29. डॉ.बी.आर. अंबेडकर ।



गतिविधियाँ :

1. दादाभाई नवरोजी और बालगंगाधर तिलक की जीवनी पढ़िए।
2. जानकारी के साथ क्रांतिकारियों का चित्र एकत्रित करें और एक एलबम (चित्राधार) तैयार करें।
3. निम्नलिखित क्रांतिकारियों की जीवनी पढ़कर, एक लेख लिखकर बुलेटिन बोर्ड पर प्रकाशित कीजिए :
वासुदेव के बलवंत फड्के, खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आज़ाद, भगत सिंह, मेडम कामा।
4. स्वतंत्रता संग्राम में गाँधीजी की भूमिका पर एक चर्चा की व्यवस्था कीजिए ।
5. भारत के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपतियों के नाम एकत्रित कीजिए।
6. स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभानेवाली महिलाओं की जीवनियाँ पढ़ें ।
7. स्वतंत्रता के बाद कर्नाटक के विकास में महिलाओं की भूमिका पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोज करें ।





M7E7I4

पाठ परिचय:

कर्नाटक का लगभग दो हजार सालों से भी ज्यादा इतिहास है। चारित्रिक रूप से कर्नाटक के लोग अलग-अलग राजनीतिक व्यवस्था में जीवित रहे हैं। विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद कन्नड भाषिक प्रदेश-मराठा, पेशवा, पालेगार, अंग्रेज, सुल्तान, नवाब आदि के प्रशासन में 20 विभागों में बँट गये थे। इससे कन्नड भाषिक अपने ही जमीन पर अजनबी होने की भावनों से युक्त थे। अंग्रेजों ने केवल राजस्व संग्रह की सुविधा के लिए प्रदेशों को विभाजित किया, पर भाषा और संस्कृति पर विचार नहीं किया। इस पाठ में कर्नाटक एकीकरण आंदोलन के अलग-अलग स्तरों का परिचय दिया गया है। वर्तमान सीमा-विवादों को भी वर्णित किया गया है।

सामर्थ्य :

1. कर्नाटक एकीकरण की पृष्ठभूमि तथा आंदोलनों के प्रमुख सोपानों के बारे में जानना ।
2. एकीकरण आंदोलन का गठन करने वाले महानुभावों के बारे में जानना।
3. 1956 के बाद उत्पन्न सीमा-विवादों को जानकर उसका समाधान सुझाना

कर्नाटक एकीकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

‘कविराजमार्ग’ कृति में वर्णन किया गया है कि कन्नड प्रदेश कावेरी से लेकर गोदावरी तक था। कई कन्नड राजवंशों ने इस प्रदेश पर राज किया। विजयनगर साम्राज्य पतन के बाद कन्नड प्रदेशों में कई राजनीतिक बदलाव आये। राजनीतिक रूप में जो शक्तिशाली बने, उन्होंने कन्नड प्रदेश तथा वहाँ के लोगों की उपेक्षा की। टीपू की मृत्यु के बाद अंग्रेज इन प्रदेशों को अलग-अलग भाषा बोलनेवालों के राजनीतिक शक्तियों के अधीन कर दिया। कन्नड प्रदेश के लोगों को मराठा, निजाम आदि के अधीन में परकीय (अजनबी) होकर जीना पड़ा। ऐसी प्रतिकूल की परिस्थिति से बाहर निकलकर कन्नड भाषियों ने अपना एक राज्य बनाने के लिए संघर्ष किया। इसे ही ‘एकीकरण आंदोलन’ कहा गया है ।

मुंबई-कर्नाटक के लोगों ने एकीकरण का पहला कदम रखा। रा. हा. देशपांडे की अध्यक्षता में एकीकरण कल्पना को सा. श. 1890 में 'कर्नाटक विद्यावर्धक संघ' ने का रूप दिया। वेंकटरंगो कट्टी जैसे महोदयों ने एकीकरण के प्रारंभिक चरण में अपनी सेवा प्रदान की है।

कार्यकलाप : मुंबई-कर्नाटक प्रदेश में कन्नड स्कूल प्रारंभ करने के लिए कार्य करने वाले 'डिप्टी चेन्नबसप्पा' के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त कीजिए।

सा. श. 1915 में स्थापित कन्नड साहित्य सभा और कर्नाटक सभा (1916) ने इस आंदोलन को जारी की।

सा. श. 1924 में बेलगावी कांग्रेस अधिवेशन में हुइलगोल नारायणराव ने 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नडनाडु' स्वागत गीत गाकर एकीकरण आंदोलन को विद्युत् संचालन दिया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष महात्मा गांधीजी ने भी एकीकरण को अपना समर्थन दिया। एकीकरण आंदोलन और स्वतंत्रता आंदोलन दोनों एक साथ चले।

कार्यकलाप (गतिविधियाँ) :

- 1) एकीकरण के लिए श्रम करने वाले साहित्यकारों के नामों की सूची बनाइए।
- 2) बी. एम. श्री. के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त कीजिए।

कर्नाटक के बीस प्रशासनिक क्षेत्र :

1. मद्रास - कर्नाटक : बल्लारी, दक्षिण कन्नड, नीलगिरी जिले और अन्य तहसील (ब्रिटिश शासन)
2. मुंबई-कर्नाटक : उत्तर कन्नड, धारवाड, विजयपुर और बेलगावी जिले और तीन अन्य तहसील, (ब्रिटिश प्रशासन)
3. कोडगु : मुख्य आयुक्त का प्रशासन (ब्रिटिश शासन)
4. 'केटोन्मेंट' कर्नाटक : बेलगाँवी और बेंगलूर ये मिलिटरी स्टेशन या सैनिक प्रदेश है। (ब्रिटिश शासन)
5. मैसूर : मैसूर, मंड्या, हासन, शिवमोग्गा, चिक्कमगलूर, चित्रदुर्गा, तुमकूर, कोलार और बेंगलूर (मैसूर राज्य)
6. हैदराबाद रियासत : कलबुरगी, बीदर, और रायचूर जिले (हैदराबाद राज्य)
- 7 से 20 : 14 छोटे राज्य और कुल 20 प्रशासनिक इकाइयाँ

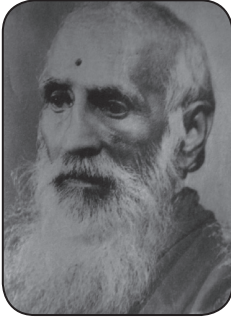
एकीकरण आंदोलन में पत्रकारिता तथा साहित्य की भूमिका :

दैनिक समाचार पत्रों के साथ-साथ साप्ताहिक समाचार पत्रों और साहित्यिक कृतियों ने एकीकरण आंदोलन को प्रेरित किया। मुंबई कर्नाटक, मैसूर राज्य और तटीय कर्नाटक में कई समाचार पत्र प्रकाशित होते थे।

प्रमुख समाचार पत्र

मुंबई-कर्नाटक, 'विजय', 'राजहंस', 'कर्नाटक वृत्त', 'कन्नड़ केसरी', 'कर्नाटक वैभव'।
मैसूर राज्य (संस्थान) 'सूर्योदय प्रकाशिका', 'हितबोधिनी', 'वृत्तांत चिंतामणी', 'मैसूर हेराल्ड'।

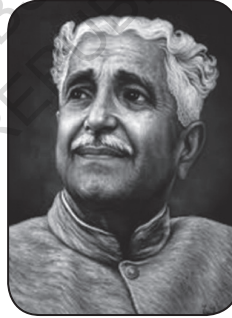
कर्नाटक की प्रादेशिक भाषा संस्कृति के लिए परिश्रम रत आलूरु वेंकटराय ने उस समय की दुःस्थिति देखकर कहा था - “छीः, कहाँ है कर्नाटक? चार-पाँच भागों में कटा हुआ, बिखरे हुए कर्नाटक को जोड़कर अखंड करनेवाला कौन है? उतना अभिमान किसे है?



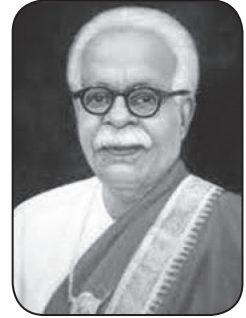
आलूरु वेंकट राय
'कर्नाटक के कुल पुरोहित'



हुयिलगोल नारायणराव



राष्ट्रकवि कुवेंपू



राष्ट्रकवि गोविंद पै
(पई)

कन्नड प्रदेश की भाषा का वैभव, कर्नाटक के लोगों को बताना ही वेंकटराय का उद्देश्य था। इसके लिए उन्होंने कर्नाटक का गतवैभव नामक ग्रंथ लिखकर. अपने ही खर्च में उसको प्रकटित भी किया। यह अत्यंत प्रेरणा दायक पुस्तक थी। हैदराबाद के कन्नड भाषिक लोगों ने इन्हें (सा.श.1941), 'कर्नाटक कुलपुरोहित' उपाधि दी। मुंबई-कर्नाटक में जागृति पैदा करने में शांतकवियों की भूमिका भी महत्व पूर्ण रही है। साहित्य सम्मेलन के खर्च के लिए 'बेडलू कन्नड दासय्या बंदिह, नीडिरम्मा तडम ाडदे' गाकर पैसा इकट्ठा किया। कुवेंपू के 'जय हे कर्नाटक माते', 'नी मेट्टुव नेल अदे कर्नाटक' आदि गानों ने लाखों कर्नाटक वासियों के दिलों को छुआ। हुयिलगोल

नारायणराव का 'उदयवागलि नम्म चेलुव कन्नडनाडु' गीत अत्यंत जनप्रिय हुआ। कन्नड के पहले 'राष्ट्र कवि' मंजेश्वर गोविंदा पै.ने कर्नाटक में कासरगोडु के विलीनी हेतु अंत तक लड़ाई लड़ी और कई कवि और लेखकों ने कन्नड भाषियों में अभिमान जगा दिया।

स्वातंत्र्योत्तर एकीकरण आंदोलन :

पचास सालों के एकीकरण का सपना देश की आजादी बाद ही साकार हुआ। वह भी तीन चरणों में हैं।

पहला चरण (सा. श. 1947-48) :

सा. श. 1947 के पहले हमारे देश में दो प्रकार के राज्य थे। अंग्रेज भारत के प्रांत तथा संस्थानिक (राजा के अधीन) 562 राज्य । संविधान सभा ने भारत को भाषा के आधार पर विभाजन न करके, चार तरह के प्रशासन को विभागों में बाँटा। वे ही ए.बी.सी. डी. विभाग थे । उसी तरह कर्नाटक के बीस प्रशासित विभागों को पाँच घटकों में फिर बाँटा गया। मुंबई, मद्रास, मैसूर, हैदराबाद और कोडगु- ये पाँच विभाग थे। ये सब कर्नाटक एकीकरण का पहला सोपान है।

दूसरा चरण (सा. श. 1953) :

सा. श. 1951-92 में लोकसभा का पहला सामान्य निर्वाचन हुआ। चुनाव के बाद उग्र मनोभाव के आंदोलन कर्ताओं ने 'अखंड कर्नाटक राज्य निर्माण परिषद्' नामक पक्ष की स्थापना की (सा. श. 1952) । यह पक्ष एकीकरण के लिए सत्याग्रह नाते 5000 लोग बंधित होकर जेल चले गये। उस समय के मुख्यमंत्री केंगल हनुमंतय्या ने एकीकरण का समर्थन दिया। उन्होंने एकीकरण के पक्ष में पूरे राज्य की यात्रा की।

सा. श. 1952 में आंध्र प्रदेश के गठन की माँग को लेकर 58 दिन के अनशन पर बाद पोट्टी श्रीरामुलु नाम के एक नेता की मृत्यु हो गयी। आंध्र में भीषण दंगे हुए। श्रीरामुलु की मृत्यु के बाद प्रधान मंत्री नेहरू ने घोषणा की कि सरकार ने आंध्र प्रदेश राज्य बनाने का फैसला किया है। इस प्रकार आंध्र प्रदेश का गठन हुआ। (सा. श. 1953)

जब आंध्र प्रदेश की रचना हुई तब बल्लारी जिले के सात तहसीलों को मैसूर प्रांत में जोड़ा गया। यह एकीकरण का दूसरा सापान था ।

अंतिम चरण (सा. श. 1956) :

आंध्र प्रदेश की रचना के बाद भाषा के आधार पर प्रांतों को पुनर्विभाजन की माँग बढ़ी। केंद्र सरकार ने राज्यों के पुनर्गठन करने के लिए 'राज्य पुनर्गठन आयोग' (एस.आर.सी) की नियुक्ति की। उसके अध्यक्ष एस. फ़ज़ल अली थे। इसलिए फ़ज़ल अली आयोग कहते हैं। इसके अन्य सदस्य, एस. एन. कुंजु, के. एम. पणिकर इसके सदस्य थे। आयोग ने सा. श. 1955 में अपना विवरण सौंपा। उसके अनुसार भाषा और प्रशासन की सुविधा देखकर पुनर्गठन का कार्य प्रारंभ हुआ। राज्य के सभी पक्ष आयोग ने रिपोर्ट को मान्य किया। लेकिन कासरगोडु को केरला में जोड़ने का और बल्लारी जिले के कुछ तहसीलों को आंध्रप्रदेश में जोड़ने की सलाह को कर्नाटक के लोगों ने पूर्ण रूप से विरोध किया। मैसूर विधानसभा ने बल्लारी को मैसूर से अलग न करने और नए राज्य का नाम मैसूर राज्य रखने का फैसला किया।

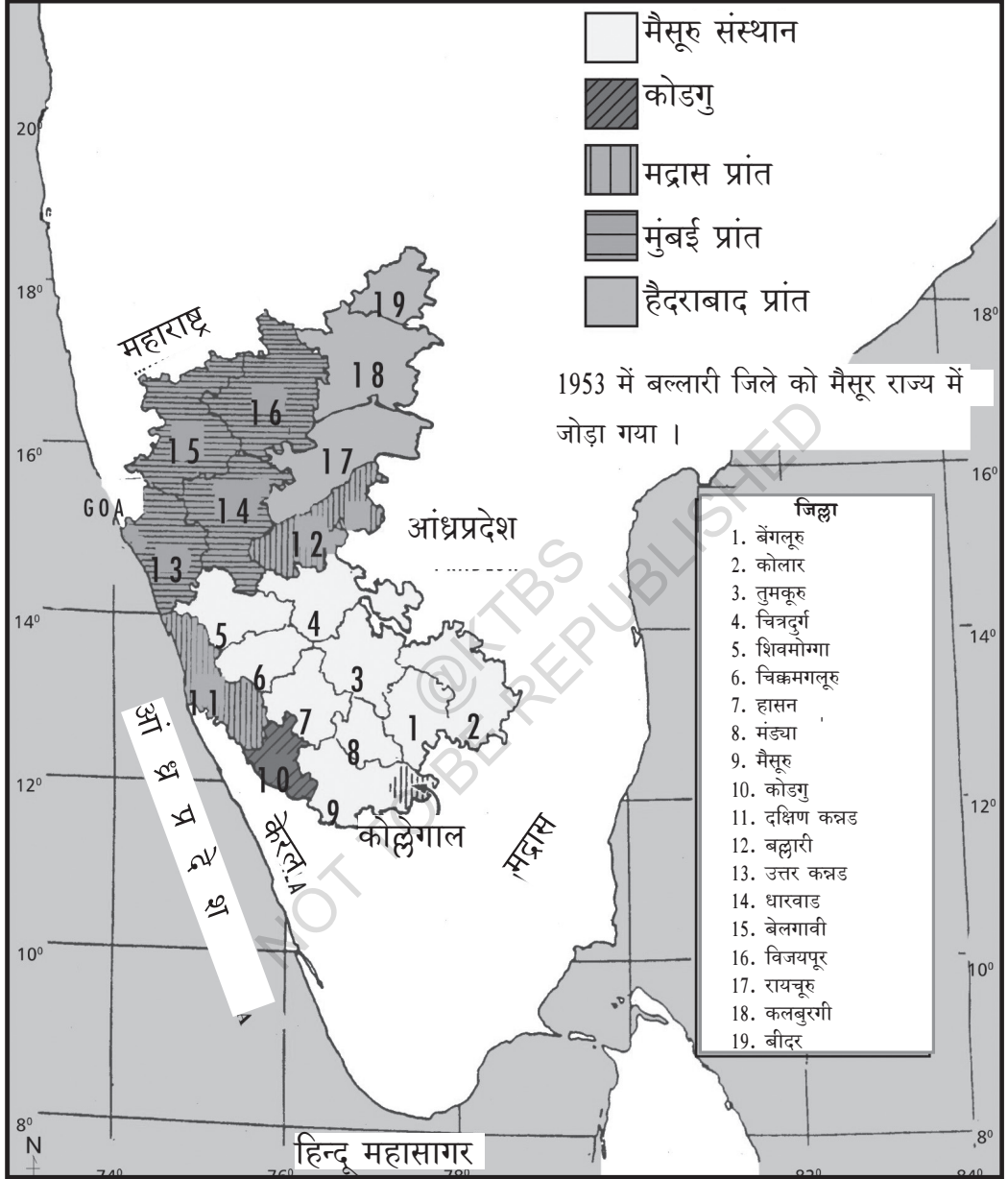
(फ़ज़ल अली आयोग ने बल्लारी जिले के अधिकांश भाग को आंध्र प्रदेश को वापस देने की सिफारिश की)

केंद्र सरकार ने राज्य पुनर्गठन आयोग की राय को स्वीकार कर लिया। सा. श. 1956 नवंबर 1 को 'विशाल मैसूर राज्य' नाम से अस्तित्व में आया।

एकीकृत मैसूर राज्य में निम्नलिखित जिले शामिल थे :

1.	पुराना मैसूर प्रांत के नौ जिले	मैसूर मंड्या, बेंगलूर, कोलार, हासन, तुमकूर, चिक्कमगलूर, शिवमोग्गा, चित्रदुर्गा।
2.	मुंबई राज्य के जिले	बेलगावी, धारवाड, विजयपुरा और उत्तर कन्नड
3.	हैदराबाद राज्य के जिले	कलबुर्गी, रायचूर और बीदर
4.	मद्रास प्रांत के जिले	दक्षिण कन्नड जिला, कोल्लेगाल (तालुक) और बल्लारी (1953 में आंध्र प्रदेश के गठन के समय बल्लारी को भी शामिल किया गया।)
5.	राज्य	कोडगु जिला

कर्नाटक एकीकरण (सा.श. 1956)



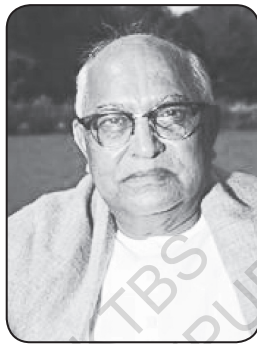
कर्नाटक एकीकरण (सा. श. 1956)

गतिविधि : इकतीस जिलों के नामों की सूची बनाएँ ।

मैसूर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री श्री केंगल हनुमंतय्या ने राज्य के लोगों को इकट्ठा करने का प्रयत्न किया। इसके बाद सा. श. 1956 में मैसूर राज्य के एस. निजलिंगप्पा प्रथम मुख्यमंत्री बने । 1 नवंबर सा. श. 1973 को तत्कालीन मुख्यमंत्री डी. देवराज अरस ने विशाल मैसूर राज्य को 'कर्नाटक' नाम दिया।



केंगल हनुमंतय्या मुख्यमंत्री



एस. निजलिंगप्पा, मैसूर राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री



डी. देवराज अरस, मुख्यमंत्री

सीमा विवाद :

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भाषाई तौर पर प्रांतों की रचना हुई। फिर भी सीमा भाग के कुछ कन्नड भाषी लोगों को अन्याय हुआ। भाषिक रूप से बहुसंख्यक होने पर भी अन्य भाषिक प्रांतों से जुड़ने के कारण वे वहाँ अल्पसंख्यक हो गये।

इसलिए आज भी कर्नाटक सरकार और कन्नड भाषिक लोग इन प्रदेशों को वापस कर्नाटक में जोड़ने की आशा से निरंतर संघर्षरत हैं। मुख्य रूप से महाराष्ट्र, केरल आंध्रप्रदेश और तमिलनाडू के साथ निरंतर सीमा-संघर्ष चल रहा है। लेकिन मामले को निपटाने का अधिकार केंद्र सरकार को है।

गतिविधि : ऐसी कविताएँ एकत्र करें जो कन्नड अभिमान को प्रेरित करें।

1. कर्नाटक और महाराष्ट्र के बीच विवाद :

आज भी महाराष्ट्र में बहुसंख्यक कन्नड भाषिक लोगों के कुछ प्रांत हैं। उसमें अक्कलकोटे, दक्षिण सोल्लापुरा और जत् तालुक मुख्य हैं। लेकिन बेलगाँवी शहर के लिए संघर्ष हुआ है। महाराष्ट्र सरकार लगातार बेलगाँवी को अपने राज्य में शामिल करने पर दबाव डाल रही है।

कर्नाटक सरकार और कन्नड संगठनों ने महाराष्ट्र की माँग को इनकार कर दिया है। महाराष्ट्र की एकीकरण (एकता) समिति बेलगाँवी और अन्य क्षेत्रों को महाराष्ट्र में जोड़ने पर जोर दे रही है। सा. श. 1966 में मेहरचंद महाजन की अध्यक्षता में केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच की सीमाओं का अध्ययन और सिफारिश करने के लिए एक सदस्य समिति बनायी। महाजन रिपोर्ट में बेलगाँवी को कर्नाटक का हिस्सा बनाने की सिफारिश की गई थी। कर्नाटक के लिए महाजन रिपोर्ट की सिफारिश अंतिम है। कर्नाटक सरकार ने बेलगाँवी में सुवर्णसौध बनाया है। यहाँ वर्ष में एक बार परिषदों का संचालन करती आ रही है। बेलगाँवी कर्नाटक का अभिन्न अंग है।

2. कर्नाटक और केरला के बीच विवाद :

यहाँ का मुख्य विवाद कासरगोडू क्षेत्र को लेकर है। ऐतिहासिक रूप से कासरगोडू क्षेत्र पर कन्नड राजवंशों का शासन था। केलदी संस्थान के शिवप्पा नायक आदि ने इस क्षेत्र पर नियंत्रण हासिल कर लिया था। अभिलेखों का कहना है कि बेकल किला इक्केरी राज्य द्वारा बनाया गया था। इस प्रकार कासरगोडू सांस्कृतिक रूप से कन्नड प्रांत से जुड़ा हुआ है। यह आज दुविधा में है। इसका मुख्य कारण यह है कि राज्य पुनर्गठन आयोग ने अपनी रिपोर्ट (सा. श. 1955) में कासरगोडू के केरला में विलीन की सिफारिश की थी। इसका गठन कर्नाटक समिति जैसे संघर्षरत संगठनों द्वारा किया गया था। छात्रों, महिलाओं और सरकारी कर्मचारियों जैसे विभिन्न वर्गों ने कर्नाटक में प्रवेश करके के लिए कासरगोडू के लिए लड़ाई लड़ी। कासरगोडू के संघर्ष की मशाला आज भी जल रही है। कय्यार किञ्जण्णा रै और उनके सहयोगियों ने कासरगोडू को कर्नाटक का हिस्सा कहकर तात्विक और सात्विक समर्थन देकर संघर्ष जारी रखा है।



अभ्यास



I. रिक्त स्थान को उपयुक्त शब्दों से भरिए :

1. कर्नाटक विद्यावर्धक संघ के प्रथम अध्यक्ष _____।
2. कर्नाटक का कुलपुरोहित _____ को कहा जाता है।
3. कन्नड के प्रथम राष्ट्रकवि _____।
4. एकीकृत कर्नाटक के प्रथम मुख्यमंत्री _____।

II. एक शब्द या वाक्य में उत्तर लिखिए :

5. हैदराबाद संस्थानों के कन्नड़ जिलों के नाम लिखिए।
6. कर्नाटक एकीकरण को अपना योगदान देने वाले किन्हीं दो संगठनों के नाम बताइए।

III. दो या तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

7. कन्नडिगों ने फज़ल अली आयोग की किन सिफारिशों का विरोध किया ?
8. कर्नाटक एकीकरण के लिए लड़े हुए महान व्यक्तियों की सूची बनाइए।

IV. टिप्पणी लिखिए :

9. आलूर वेंकटराव, फज़ल अली आयोग।

V. चर्चा करें :

10. महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक के बीच सीमा विवाद के समाधान का सुझाव दीजिए। (शिक्षक की सहायता प्राप्त करें)



कर्नाटक का समाजमुखी आंदोलन



पाठ परिचय :

अगर अधिकारी लोग जनता विरोध में कोई निर्धारण, कार्यक्रम या योजनाओं को कार्यरूप में लायें तो उसका विरोध करने का हक जनता को है। कर्नाटक में ऐसी स्थिति आने पर बुद्धिमान लोगों ने विरोध करके आंदोलन किया है। इसी समय दुर्बल, शोषित, पिछड़े वर्ग के लोगों ने अपने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अभिवृद्धि के लिए संघर्ष किया। इस पाठ में कर्नाटक के परिसरवादी, महिलाएँ, किसान, दलित और कन्नड हेतु संघटनों का आंदोलन का विवरण दिया है। साथ में अधिकार विकेंद्रीकरण की दिशा में जारी किए गए पंचायत राज व्यवस्था का परिचय दिया गया है।

सामर्थ्य :

1. परिसर आंदोलन को कुछ निदर्शनों के साथ जानेंगे।
2. महिलाओं के सबलीकरण के लिए सरकार के कार्यों की प्रशंसा करेंगे।
3. किसानों का अपने हित के लिए किया गया संघर्ष के बारे में जानेंगे।
4. दलितों के संघर्ष के बारे में जानेंगे।
5. कन्नड निगरानी (कावलु) आंदोलनों की प्रासंगिकता को समझना और उनमें रुचि लेना।

परिसर आंदोलन :

हमारी पृथ्वी के भाग मिट्टी, पत्थर, पानी, हवा, प्रकाश पर पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और मनुष्य बाकी सब जीव अवलंबित है। प्रकृति में सहज संतुलन है। आदमी नागरिक बनते ही अपनी आवश्यकताओं के लिए परिसर की बलि दे रहा है। प्रकृति को सृष्टि का वरदान मानना छोड़कर उसे सिर्फ अपने उपयोग का कच्चा वस्तु मान रहा है। घर-आंगन में दिख रहे गौरयों को देखने के लिए गाँव से बाहर जाने की स्थिति आ गई है।

पृथ्वी पर स्थित जैविक और अजैविक कारक ही परिसर (पर्यावरण) है।

औद्योगिक क्रांति, वाणिज्य व्यापार क्रांतियों से परिसर पूर्ण रूप से खराब हो गया है। बड़े-बड़े उद्यमी परिसर संपत्ति को अपनी पकड़ में लेने के लिए निरंतर प्रयत्न कर रहे हैं। इससे कई नई समस्याओं की उत्पत्ति हो गयी है। लोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। प्राकृतिक संपत्ति के नाश से बहुत सारे लोग संकटों का सामना कर रहे हैं। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लोगों में जागृति पैदा करने के लिए परिसर जागृति आंदोलन प्रारंभ हुआ। सा. श. 1970 के दशक में परिसर आंदोलन विश्व स्तर पर आरंभ होकर कर्नाटक पहुँचा।

गांधी ने बताया कि 'भूमि सभी की आवश्यकताओं को पूरी करती है मगर उनकी लालच को नहीं।'

पश्चिमी घाटों के प्रदेश में खानों की खुदाई प्रारंभ होने के कारण परिसर संरक्षण आंदोलन अनिवार्य हो गया। 'सह्याद्री खान विरोधी मंच' आरंभ होकर कुदरेमुख और बाकी प्रदेशों के खानों का विरोध किया। केंद्र सरकार ने ही लोहे की खान कंपनी को प्रारंभ किया था। इस खान से भद्रा नदी का मूल ही मलिन हो गया। इस आंदोलन से सरकार पर तीव्र दबाव बना और परिसर संरक्षण कार्य प्रारंभ किया।

सालुमरद तिममका : आज भी संघर्ष रत तिममका ने 284 पेड़ों की माँ है। अनपढ़ होने पर भी परिसर संरक्षण का पाठ पढ़ानेवाली 'सालुमरद तिममका' की जिंदगी निस्वार्थ की है। इन्हें 2019 में देश का चौथा उन्नत नागरिक पुरस्कार 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।



सह्याद्री श्रेणी की प्रमुख नदी तुंगा कलुषित होते देखकर 'तुंगा मूल बचाओं' आंदोलन प्रारंभ हुआ। सह्याद्री पर्वत श्रेणी के जंगल धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। पेड़-पौधों को बचाकर उनका विनाश रोकने के लिए विविध प्रदेशों में 'चिपको' या 'अप्पिको' (गले

लगाओ) आंदोलन शुरू हुए। चिपको आंदोलन के लिए खुद को समर्पित करनेवाले सुंदरलाल बहुगुण को कोई नहीं भूल सकता।

कार्यकलाप : 'अप्पिको' आंदोलन के उद्देश्य और लक्ष्य की सूची बनाइए।

वन विभाग द्वारा नीलगिरि, अकेशिया जैसे आयात किए पौधों को उगा या जा रहा है। इस योजना को 'सामाजिक अरण्य' (वन) कहते हैं। परिसरवादियों ने नीलगिरि वृक्ष को जमीन के अंतर्जल नीचे ढकेलने वाला मानकर उसे उगाने का विरोध किया।

दावणगेरे जिला हरिहर में पॉलिफैबर उद्योग द्वारा निरर्थक वस्तुओं को तुंगभद्रा नदी में छोड़कर नदी का पानी गंदा करने के विरोध में आंदोलन आरंभ हुआ। बाकी आंदोलन ये हैं - कारवार का सीबर्ड नौका प्रदेश विरोधी, करावली में कोर्जेट्रिक्स नागार्जुन विद्युत योजना विरोधी, तालाब बचाओ, भद्रा ऊपरी किनारे की योजना विरोधी, कब्बन पार्क बचाओ, कार्गिल सीड्स संस्था विरोधी, औद्योगिक नगरों के विरोधी आंदोलन आदि।

आजकल राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित आंदोलन ये हैं - कर्नाटक का खान विरोधी आंदोलन, बल्लारी, तुमकुरु, चित्रदुर्गा, चिक्कमगलूर, उत्तर कन्नड, दावणगेरे, बेंगलूर दक्षिण (रामनगर) आदि जिलों में खान संपत्ति लूट करनेवालों के विरोध में किया गया आंदोलन। भारत का सर्वोच्च न्यायालय पर्यावरण सुरक्षा को गंभीर मानते हुए फैसला सुना रहा है।

कर्नाटक लोकायुक्त संस्था के सार्वजनिक हितासक्ति दावों को तपतीश करके अक्रम खानों की जांच का और उनका दीर्घ विवरण उल्लेखनीय है। इन सब के परिणाम स्वरूप प्रकृति का शोषण कम हो रहा है। आज भी कई आंदोलन चल रहे हैं। कृत्रिम रासायन से जमीन को उपयुक्त करने की पद्धति के बदले में कृषि उत्पादन पर जोर देनेवाला आंदोलन अब एक क्रांति का रूप धारण कर रहा है। यह एक समाधानकारक विषय है। कर्नाटक में 'जैविक कृषि मिशन' स्थापित होकर जैविक कृषि को प्रोत्साहन मिल रहा है। हजारों किसान इसका लाभ उठा रहे हैं। इस दिशा में कर्नाटक राज्य भारत में सबसे आगे है।

महिला आंदोलन :

महिला आंदोलन ने मुख्य रूप से स्त्री शिक्षा पर जोर दिया। कर्नाटक में श्रीरंगम्मा और रुक्मिणम्मा बी.ए. आनर्स उपाधि पानेवाली पहली महिलाएँ हैं। इंदिरम्मा बेंगलूर की प्रथम महिला मेयर थी। ये सब होने पर भी महिला सशक्तिकरण मृगतृष्णा बन गया था। महिलाओं को संपत्ति में हिस्सा नहीं मिलता था। विविध धर्मीय महिलाएँ अलग-अलग रीति के शोषण का शिकार बनी हैं।

कार्यकलाप : विविध क्षेत्र में साधना हासिल करने वाली महिलाओं की सूची बनाइए।

कई महिलाएँ घर के चार दीवार से बाहर निकलकर आजादी के आंदोलन में भाग लेकर देशसेवा के लिए आगे आयीं। कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू, अरुणा असफ अली, डॉ. मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी आदि को हम यहाँ याद कर सकते हैं।



कमलादेवी चट्टोपाध्याय



अरुणा आसफ अली

1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाना प्रारंभ किया। कर्नाटक सरकार ने महिला अभिवृद्धि के कार्यक्रम प्रारंभ किया। धीरे-धीरे महिला संघटन सक्रिय होने लगे। वाम पंथीय संघटनों ने मजदूर महिलाओं का संघटन करने का काम किया। महिला संघटनों ने दहेज, अत्याचार, पारिवारिक हिंसा का विरोध किया। महिलाओं के अधिकारों के समर्थन में कानून बनाने का दबाव डालने लगे। चुनाव में 33% स्थानों को स्त्रियों

के लिए आरक्षण देकर शासनसभा में उनकी निर्णायक भूमिका के लिए यह संगठन संघर्ष कर रहा है ।

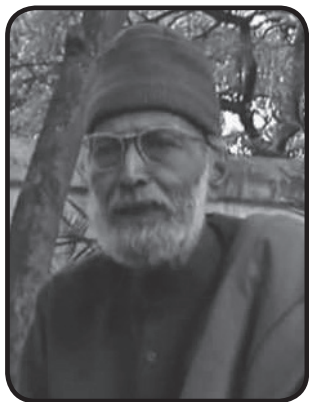
इन सब आंदोलनों के फलस्वरूप सरकार ने कई सुधार क्रमों को जारी किया है। स्थानिक संस्थाओं में महिलाओं को 50% स्थान आरक्षित रखने का आदेश जारी करने वाला प्रथम राज्य कर्नाटक है। सरकारी ने नियोजन में भी महिलाओं को 33% आरक्षण देकर महिलाओं को न्याय दिया है। महिलाओं के हित रक्षा के लिए सरकार ने महिला आयोग की स्थापना की है। यह स्त्रियों के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाकर उन्हें न्याय दिलाने का काम करता है।

किसान आंदोलन :

किसानों को हमारे देश की रीढ़ की हड्डी मानी गयी है । लेकिन यह रीढ़ की हड्डी मजबूत करने की जो आवश्यकताएँ हैं - उन्हें नहीं दिया है । आज भी हमारे किसान सरकार की सहायता के बिना जीने की स्थिति में नहीं है । उद्योगपति अपने उत्पादन का मूल्य खुद तय करते हैं। लेकिन किसान आज तक अपने उत्पादन का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते । वे हमेशा वर्षा पर निर्भर रहते हैं । अपनी रक्षा करनेवाली सरकार अगर संकष्ट के समय में मदद नहीं करती तो वे संघर्ष की राह पर चलते हैं। कई किसान ऐसे संघर्ष में अपनी जान देकर शहीद हुए हैं । सदियों से किसान संघर्ष करते आए हैं, फिर भी संतुष्ट जीवन का सपना अभी भी दूर है ।

किसान संघर्ष मुख्य रूप से भू-मालिकों के विरुद्ध था। स्वतंत्रोत्तर कर्नाटक में प्रथम आंदोलन 1951 में शिवमोग्गा जिले के कागोडु में हुआ। किसानों ने किराया मापने वाले लोहे का बर्तन (कोलगा) के विरुद्ध में आंदोलन प्रारंभ किया। बाद में कर्ज वसूली, श्रमिकों को दिया जानेवाला कष्ट आदि के विरुद्ध में आंदोलन किया । समाजवादी पार्टी के शांतवेरी गोपालगौड़ा इस आंदोलन के नेता थे। डॉ. राममनोहर लोहिया ने यहाँ आकर इनको अपना समर्थन दिया ।

कार्यकलाप : ना. डिसोजा का 'कोलगा' उपन्यास पढ़कर किसानों के स्थिति गति। के बारे में निबंध लिखिए ।



एम.डी. नंजुंडस्वामी

सा. श. 1950 के दशक में उत्तर कन्नड जिले में समाजवादियों ने किसान आंदोलन किया। सा. श. 1972 में कोलार में भू-आक्रमण आंदोलन हुआ। सा. श. 1980 में मलप्रभा नदी भाग के किसान कपास की पैदावार में नुकसान हुआ तो विरोध किया गया। कई किसान पुलिस की गोली के शिकार हुए। किसानों ने सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन आगे बढ़ाया। इस संदर्भ में बीस से भी ज्यादा किसान नवलगुंदा, नरगुंदा और सवदत्ती में अपनी जान खो गयी ।

इस समय किसानों ने अपना अपना संघटन बना लिया। कर्नाटक राज्य किसान संघ ने शिवमोग्गा जिले में आरंभ होकर स्थानीय समस्याओं को सुलझाने का काम किया। दूरदर्शिता वाले विदेशी कंपनियों के आगमन का विरोध किया । कर्नाटक प्रांत किसान संघ, किसान सभा, दलित संघर्ष समिति, किसान मजदूर संघ आदि संघटनों ने किसानों की समस्याओं को समझाने के लिए आंदोलन का समर्थन किया ।

किसान आंदोलन के नेताओं में एम.डी. नंजुंडस्वामी, सुंदरेश, पुट्टण्णय्या, कडिदाल शमण्णा आदि प्रमुख हैं ।

कार्यकलाप : बागूरू नविले आंदोलन के बारे में ज्यादा जानकारी हासिल कीजिए ।

दलित आंदोलन :

प्रसिद्ध मनावैज्ञानिक आर. डी. लियांग ने एक अनोखी बात बतायी है : “दूसरों के अनुभवों को आप समझ सकते हैं लेकिन उसको आप अनुभव कभी नहीं कर सकते”। दलित और महिला वर्गों के लिए यह बात लागू होती है। दलितों को वर्ण व्यवस्था में भी स्थान नहीं था । शूद्र अति शूद्र बन गये । सामाजिक रूप से कोई

स्थान न होने का अछूत जाति में पैदा होने के कारण यह समुदाय समाजिक संबंध से दूर रहा। इसके विरोध में हुए कई संघर्षों को हम इतिहास में देख सकते हैं। स्वातंत्र्य पूर्व काल में दलितों से संबंधित विषय राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया। गांधीजी और अंबेडकर के बीच की सा. श. 1930 चर्चा ही इसके लिए प्रमुख साक्षी है। दोनों का लक्ष्य एक होने पर भी राह अलग-अलग थे।

स्वामी विवेकानंद की मैसूरु यात्रा के बाद उनकी सलाह पर मैसूरु के तत्कालीन महाराजा दसवें चामराजा ओडेयर ने दलित वर्ग के महत्वपूर्ण मुद्दों को गंभीरता से लिया और दलितों के लिए अलग स्कूल खोले।

1936 में दक्षिण भारत के प्रमुख दलित नेता एम. सी. राजा के नेतृत्व में मैसूरु राजमहल में दलितों का प्रवेश हुआ।

पहले दलितों के लिए अधिकतर गैर-दलित लड़ते थे। लेकिन अब दलित ही अपनी समस्याओं के लिए खुद लड़ रहे हैं। इन लोगों के लिए डॉ. बी. आर. अंबेडकर के सैद्धांतिक विचार ही मूल प्रेरणा स्रोत थे। शिक्षा, संघटन, संघर्ष-आदि दलित आंदोलन के बीजमंत्र बन गए हैं। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए राजनीतिक अस्त्र को लक्ष्य में रखकर संघटन के रूप में जागृत हो रहे हैं।

दलित वर्गों में अंबेडकर उनके स्वाभिमान के संकेत मात्र न बने बल्कि 'दलित सूर्य' नाम से प्रख्यात हुए। इन सभी घटनाक्रमों की गूँज कर्नाटक में भी सुनाई दी।

बीसवीं शताब्दी के ब्राह्मणेतर आंदोलनों में ज्यादातर दलितों को शामिल नहीं किया गया। इसलिए सा. श. 1970 के दशक में दलित आंदोलन का स्वरूप एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरकर आया। हैदराबाद कर्नाटक (अब इस प्रदेश को कल्याण कर्नाटक कहा जाता है।) प्रदेश में बी. शामसुंदर ने सा. श. 1970 में भीमसेना संघटन की स्थापना की। सा. श. 1973 का 'बसवलिंगप्पा भूसा मामले ने दलित आंदोलन को नई दिशा दी।

सचिव बसवलिंगप्पा ने मैसूर के एक कार्यक्रम में 'कन्नड साहित्य को भूसा व्यर्थ साहित्य है' बताया। इसके विरोध में पूरे कर्नाटक में आंदोलन हुए। आखिर में बसवलिंगप्पा को मंत्री पद त्यागना पड़ा। इस प्रकरण से दलित भावना तीव्र रूप से जागृत हुई।

सा. श. 1976 में भद्रावती में 'दलित लेखक कलाकार संघ' की स्थापना हुई। इसके आरंभ में ही कर्नाटक दलित आंदोलन का मजबूत कदम देख सकते हैं। बाद में इसके आश्रय में कर्नाटक दलित संघर्ष समिति की स्थापना हुई। प्रो. बी. कृष्णप्पा इसका राज्य संचालक बने। इस तरह डी. एस. एस. को एक संस्था का रूप मिला।

धीरे-धीरे दलित संघर्ष समिति का विस्तार हुआ। नौकर, महिला, राजकाज संबंधी मजदूर, विद्यार्थी, लेखक, कलाकार संघ आदि शाखाओं की स्थापना हुई। पारंपरिक रूप से जिनके पास जमीन ही नहीं थी। उन दलितों ने जमीन पाने के लिए आंदोलन शुरू किया। शैक्षणिक प्रगति करके, अधिकार केंद्र तक पहुँचना दलित आंदोलन का उद्देश्य बना। बाद में दलित आंदोलन में फूट पड़ने लगी। अलग अलग नामों के नए संघटनों का जन्म हुआ।

कार्यकलाप : देवनूर महादेव और डॉ. सिद्धलिंगय्या की कृतियों के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त कीजिए।

देवनूर महादेव और डॉ. सिद्धलिंगय्या ने अपने साहित्य द्वारा दलितों का आंतरिक जगत को आय लोगों को दिखाया। बाकी दलित लेखक सार्वभौमिकता के नाम पर कई सवालों का सामना कर रहे हैं, इस पर भी विचार किया गया है। आज दलित वर्ग समाज के सभी जगहों में निर्णायक पात्र भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन उन्हें अभी भी लंबा रास्ता तय करना है।

कन्नड बचाओ आंदोलन या कन्नड निगरानी (कावु) आंदोलन :

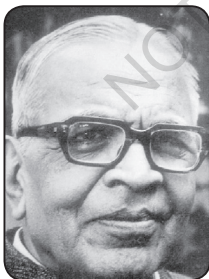
एकीकरण आंदोलन कन्नड भाषिकों में आत्मविश्वास और एकता लाया। साहित्य रचना द्वारा कन्नड लेखकों के भाषा प्रेम को जीवित रखा था। इस दिशा में सांस्कृतिक और कन्नड संघों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सा. श. 1960 के बाद बेंगलूर में अन्य भाषिकों का आधिक हुआ, तब अ.न.कृ., चिदानंद मूर्ति, म.न. राममूर्ति, वाटाल नागराज और कई लोग कर्नाटक युवाजन सभा, कन्नड जागृत परिषद, कन्नड शक्ति

केंद्र आदि संघटन-कन्नड, कन्नड भाषियों और कर्नाटक की अभिवृद्धि बढ़ाने में सफल रहे। इनके अलावा कई कन्नड के पक्ष में काम करनेवाले संघटन आज कन्नड भूमि, जल और भाषा के संरक्षण कार्य में कार्यरत हैं।

गोकाक आंदोलन :

1980 का दशक कन्नड भाषा के अस्तित्व के लिए संघर्ष करने का समय था। 1982 में गोकाक विवरण को लागू करने के लिए एक निर्णायक आंदोलन प्रारंभ हुआ। कन्नड समुदाय अभूतपूर्व रीति में यह आंदोलन किया। कर्नाटक में रहनेवाले अन्य भाषिक जिद करने लगे कि वे अपनी ही मातृभाषा में शिक्षा पायेंगे। उस समय के मुख्यमंत्री आर. गुंडूराव जब उडुपि गए थे, तब वहाँ के मठाधिपति ने उन्हें संस्कृत को प्राधान्यता देने को कहा। इसके परिणाम स्वरूप किस माध्यम में शिक्षा देना है? विषय के अतिरिक्त शिक्षा में भाषाओं का स्थान कैसा रहना चाहिए। निर्धारित करने के लिए एक समिति की रचना की गयी। डॉ. विनायक कृष्ण गोकाक की अध्यक्षता में यह समिति ने कन्नड को प्रथम स्थान देना और उसे अनिवार्य करने की सिफारिश की। इस समिति ने त्रिभाषा सूत्र को 350 अंक निर्धारित किया। त्रिभाषा परीक्षा में कन्नड को 150 अंकों का प्रथम भाषा की सिफारिश की गई।

गोकाक प्रतिवेदन के लिए उस समय की सरकार नहीं मानी। डॉ. राजकुमार के नेतृत्व में पूरे कर्नाटक में बड़ा आंदोलन हुआ। कुबेपु, पाटील पुट्टप्पा-आदि बड़े साहित्यकारों ने इस आंदोलन का समर्थन किया।



विनायक कृष्ण गोकाक



डॉ. राजकुमार

गोकाक आंदोलन के प्रमुख घोषणाएँ - 'हेसरायितु कर्नाटक, उसिरागली कन्नड', 'एने बरली कन्नड इरली' 'गोकाक वरदी, जारिगे बरली 'कर्नाटकदल्ली कन्नड उसिर तुंबली' आदि थीं।

////// अभ्यास ////

I. रिक्त स्थानों को उचित शब्द से भरिए :

1. सुंदरलाल बहुगुण द्वारा प्रारंभ किया गया आंदोलन _____।
2. राष्ट्रीय महिला दिवस _____ में शुरू किया गया था।
3. दलित सूर्य नाम से _____ को जाना जाता है।
4. भाषा समिति _____ के नेतृत्व में गठन किया गया।

II. एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

5. 'तुंगा मूल को बचाओ' आंदोलन क्यों प्रारंभ हुआ ?
6. 'अपिको' आंदोलन किसे कहते हैं ?
7. 'सामाजिक अरण्य' किसे कहते हैं ?
8. कर्नाटक में बी.ए. आनर्स उपाधि पानेवाली पहली महिला कौन है ?

III. दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

9. हमें प्राचीन तालाब क्यों बचाना चाहिए ?
10. प्रमुख परिसर आंदोलनों के नाम बताइए।
11. दलित आंदोलन क्यों प्रारंभ हुआ ?
12. दलित आंदोलन के बीजमंत्र क्या है?

IV. चर्चा कीजिए :

13. दलित आंदोलन की उपलब्धियाँ।



कार्य कलाप

- ♦ अपने प्रदेश के दलितों के घर जाकर उनकी आर्थिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण कीजिए।
- ♦ गोकाक विवरण के सिफ़ारिशों के बारे में ज्यादा जानकारी संग्रह कीजिए।





पाठ परिचय

इस पाठ में आजादी के बाद कर्नाटक में सामाजिक और आर्थिक अभिवृद्धि के मूल अंशों को जानने का प्रयत्न किया गया है।

कुछ वर्गों को बड़ा भाग मिला है तो कुछ वर्ग कई कारणों से दूर ही रहे हैं। इसका परिणाम ही सामाजिक असंतुलन है। इसे दूर करने के लिए सरकार, संविधान द्वारा भू-सुधार, पिछड़े वर्गों की आयोगों की नियुक्ति आदि कार्य कर रही है।

सामर्थ्य :

1. आजादी के बाद कर्नाटक में हुए सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों की अभिवृद्धि के बारे में जानेंगे।
2. भू-सुधार कानून के उद्देश्य और परिणामों को समझेंगे।
3. पिछड़े वर्गों के आयोग की देने की प्रशंसा करेंगे।

भू-सुधार :

भू-मालिक की समस्याएँ दूर करने के लिए लागू किये गये क्रमों को भू-सुधार कहते हैं। जमीन आदमी के जीवन का अविभाज्य अंग हैं। उसकी जिंदगी जमीन पर ही निर्भर है, लेकिन जमीन का बँटवारा सभी समुदायों में समान रूप से नहीं हुआ है। यही भू-स्वामित्व की असमानता को दूर करने हेतु भू-सुधार का क्रम लिया गया।

पहले भू-मालिकों के पक्ष में अधिकार थे। भू-किराएदार के पक्ष में कोई अधिकार नहीं थे। इससे संपत्ति की चकबंदी और बँटवारे में बहुत असंतुलन था। भू-सुधार द्वारा समाज में समानता लाने का प्रयत्न सा. श. 1970 के दशक में हुआ। किसान और दलित आंदोलन के परिणाम स्वरूप जमीन बँटवारे की समस्याएँ पैदा हो गई। भू-हीन निचले वर्ग के समुदायों को भूमि देने की माँग करते हुए कई आंदोलन हुए। इनके परिणाम स्वरूप भू-सुधार के अंश इस तरह हैं।

1. जमींदारी पद्धति का निर्मूलन :

जमीन पर भू-मालिक वर्ग का अधिकार कम करना इसका उद्देश्य था। भू सुधार में यह प्रमुख अंश है। सा. श. 1955 में भूतपूर्व उपराष्ट्रपति बी. डी. जत्ती के नेतृत्व में एक समिति की रचना की गई। इस समिति ने भू सुधार करने के बारे में कुछ सिफारिश की। इस समिति के अनुसार हर एक परिवार अधिकतम मात्रा में अर्थात् 116 एकड़ शुष्क भूमि तथा 27 एकड़ सिंचित भूमि अपने लिए रख सकता है। ये सिफारिश जमींदारों के पक्ष में थी। सा. श. 1957 में जारी यह सिफारिश बदलाव लाने में असमर्थ रही। 1974 के भूमि अधिग्रहण कानून इस प्रथा को खत्म करने में निर्णायक थे।

1 एकड़ = 100 सेंट्स या 40 गुंटे

2. भू-किराएदार पद्धति में सुधार :

भू-किराएदार कई समस्याओं का सामना कर रहे थे। उनमें ज्यादा प्रमाण का किराया भू-स्वामित्व में अभद्रता, बिना स्वामित्व के भू-हीन मजदूर आदि थे। इन समस्याओं के समाधान के लिए सा. श. 1974 में मुख्यमंत्री देवराज अरसू ने भू-स्वामियों के बारे में एक क्रांतिकारी कानून जारी किया। इससे किराए पर जमीन में काम करनेवाले भू-हीन अब भू-स्वामी बन गए।

सा. श. 1974 के भू-सुधार (संशोधन) कानून के प्रमुख अंश :

1. सभी तरह के किराए को रद्द कर दिया।
2. किसान जिस जमीन में हल चलाता था उस जमीन पर उसका अधिकार हो गया।
3. जो जमीन किराए पर देते थे वह जमीन सरकार के स्वाधीन हो गयी। उस जमीन पर अधिकार या मुआवज़ा चाहिए तो उन्हें न्यायाधिकरण द्वारा अर्जी देना था।
4. न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम था। उसके निर्णय पर सिर्फ उच्च न्यायालय में प्रश्न उठाया जा सकता था।

3. **अधिकतम भू-स्वामित्व परिसीमा :** सा. श. 1957 के बाद से सा. श. 1970 तक प्रमुख भू-स्वामित्व की परिसीमा के लिए बहुत प्रयत्न किए गए। एक परिवार के लिए जमीन का अधिकतम सीमा को उस समय की राज्य सरकार निर्धारित करती थी।

1974 में जमीन की अधिकतम सीमा को इस तरह निर्धारित किया गया कहीं बिना सिंचाई के शुष्क जमीन है तो उसकी सीमा में एक परिवार के लिए 54 एकड़ होना चाहिए। सिंचाई की सुविधा प्राप्त लोग दो या उससे ज्यादा पैदावार करते हैं तो एक परिवार के लिए 10 से 18 एकड़ और एक पैदावार की सिंचित जमीन है तो एक परिवार के लिए 27 एकड़ निर्धारित किया गया था। साथ ही इनाम (पुरस्कार) रद्द करने का कानून 1977 में आया।

इनाम (पुरस्कार) रद्द कानून के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त कीजिए।

4. **आर्थिक भू-स्वामित्व की रचना :** जिस भू-स्वामित्व से किसान कृषि के खर्चों को निकालके अपने तथा अपने परिवार के सुखी जीवन के लिए आय रख सकता है उस जीवनाधार भू-स्वामित्व को 'आर्थिक भू-स्वामित्व' कहते हैं। भू-स्वामित्व का समेकित और अधिकतम परिसीमा से कई किसानों का जीवनस्तर सुधर गया ।
5. **सहकारी कृषि की अभिवृद्धि :** किसान स्वप्रेरणा से सहकार संघों की स्थापना करके अपने सब जमीनों को सहकारी देखरेख को सौंपकर मिलकर कृषि करते हैं। उत्पादन में जमीन की शाश्वत अभिवृद्धि के लिए आवश्यक राशी निकालकर बने हुए भाग को समान रूप से लेते हैं। इसे 'सहकारी कृषि पद्धति' कहते हैं।

भू-सुधार से भू-हीनों को भू-स्वामित्व हक मिला। किसानों के अधिकारों की रक्षा की गई। सहकार कृषि पद्धति से किसानों को थोड़ा लाभ भी मिला। लेकिन यह पद्धति अपेक्षित मात्रा में लोगों तक नहीं पहुँचा।

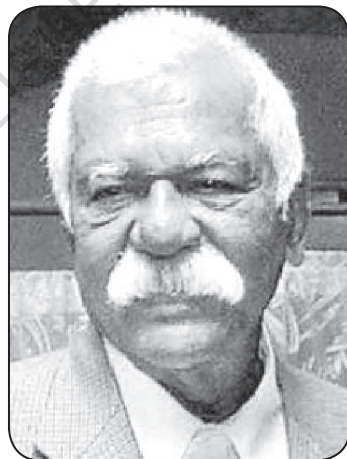
पिछड़े वर्गों के आयोग :

भारत की सामाजिक व्यवस्था असमानता से भरी है। श्रेणीकृत जाति व्यवस्था से कई जाति पिछड़े रह गई। अंग्रेज भारत आने के बाद नई सामाजिक व्यवस्था आने लगी।

अंग्रेज प्रशासन में जाति भेद के बिना सभी अंग्रेजी भाषा सीखने लगे । अंग्रेजी जाननेवालों को सरकारी नौकरी मिलने लगी। ब्राह्मणेतरों को शिक्षा का क्षेत्र खुलने के बाद उनमें एक नई जागृति शुरू हुई। बहुसंख्यक होने पर भी शिक्षा के बिना उन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिलती थी। इसलिए मैसूर संस्थान में साहुकार चेन्नय्या, एम, बसवय्या आदि के नेतृत्व में ब्राह्मणेतर आंदोलन शुरू किया।

भारत में पहले नालवडी कृष्णराज आडेयर (चतुर्थ) के काल में पिछड़े वर्गों का आयोग 1918 में न्यायमूर्ति लेस्ले सी, मिह्लर की अध्यक्षता में स्थापित हुआ। एक जाति में 5% या उससे अधिक अंग्रेजी के जानकार हो तो उन्हें इस समिति द्वारा प्रगतिशील माना गया। 1921 में प्रथम आरक्षण कानून जारी किया गया ।

मुख्यमंत्री डी. देवराज अरसू से सा. श. 1975 में एल.जी. हावनूर के नेतृत्व में प्रथम पिछड़े वर्ग का आयोग स्थापित किया गया । सा. श. 1975 के एस. एस. एल सी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए अलग-अलग जाति के विद्यार्थियों के प्रतिशत, जाति का पिछड़े पन जानने का मापदंड माना गया । हावनूर विवरण के आधार पर सा. श. 1977 में सरकारी कानून जारी किया गया। यह एक क्रांतिकारी कानून माना गया। पिछड़े वर्गों को सबल बनाने में यह कानून सहायक बना। इसे सर्वोच्च न्यायालय में विचार किया गया। कर्नाटक सरकार ने उच्च न्यायालय को भरोसा दिया कि कानून की कमियों को ठीक कर दिया जाएगा। इसके परिणामस्वरूप सा. श. 1983 में टी. वेंकटस्वामी आयोग की नियुक्ति हुई। राजनीतिक दबाव के कारण वेंकटस्वामी के विवरण को सरकार नहीं मानी। मुख्य मंत्री रामकृष्ण हेगडे के समय में न्यायमूर्ति श्री ओ. चित्रप्प रेड्डी के नेतृत्व में एक समिती की रचना की गई। इस प्रस्तुति के सिफारिश भी राजनीतिक दबाव के कारण जारी नहीं किया गया।



एल.जी. हावनूर

यहाँ तक जारी किए गए पिछड़े वर्गों से संबंधित आरक्षण कानून किसी वैज्ञानिक प्रस्तुति के सिफारिश पर निर्भर नहीं है, राजनीतिक सूत्र पर अवलंबित है।

पंचायत राज व्यवस्था :

पंचायत राज व्यवस्था को सरल भाषा में प्रशासन की विकेंद्रीकरण व्यवस्था कही जा सकती है। व्यवस्था की केंद्रीय इच्छा स्थानीय लोगों को प्रशासन में भाग लेने और निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाती है। भारत के लिए स्थानीय स्वशासन प्रणाली की शुरुआत के बावजूद स्वतंत्रता के बाद संवैधानिक रूप प्रदान करने के कार्य को गति प्रदान की गई। केंद्र सरकार ने सा. श. 1955 में बलवंतराय मेहता की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। समिति ने त्रिस्तरीय स्थानीय शासन प्रणाली की सिफारिश की।



नज़ीर साब (साहब)

इस दृष्टि से राज्य सरकार ने प्रजासत्तात्मक विकेंद्रीकरण की आशानुसार 1959 में मैसूरू ग्राम पंचायत और स्थानीय मंडल अधिनियम पारित किया। जिससे कर्नाटक में प्रजासत्तात्मक संस्थाओं के लिए एक स्थायी आधार तैयार हो सके। नये कानून के तहत शासन के तीन स्तर हैं -

- ग्राम पंचायत
- तालुक पंचायत
- जिला पंचायत

सा. श. 1983 में अस्तित्व में आई जनता की सरकार ने पंचायत राज व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। इसके संस्थापक तत्कालीन पंचायत राज मंत्री श्री नज़िर साबजी ने दलित, पिछड़े और महिला वर्गों को स्वशासन में भाग लेने का अधिक अवसर पंचायत राज व्यवस्था ने दिया। इस नई व्यवस्था को धीरे-धीरे कर्नाटक के सामाजिक और राजनीतिक मानचित्र को ही बदल दिया।

नवीन शब्द :

भू-किराया : भू-मलिक और भू-किराएदार के बीच अनुबंध के परिणामस्वरूप किरायेदार को कुल उत्पादन का प्राप्त हिस्सा है।



अभ्यास



I उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. बी. डी जत्तिजी भारत के _____ थे।
2. 1974 में कर्नाटक राज्य के मुख्यमंत्री _____ थे।
3. 1975 में नियुक्त प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग के अध्यक्ष _____ थे।
4. कर्नाटक के पंचायत राज व्यवस्था संस्थापक _____ है ।

II दो या तीन वाक्यों में उत्तर दी लिए :

- 5) भू-सुधार किसे कहते हैं?
- 6) कर्नाटक में जारी भू-सुधार कौन-कौन से हैं?
- 7) आर्थिक स्वामित्व का मतलब क्या है ?
- 8) एक परिवार के जमीन के अधिकतम सीमा को कर्नाटक सरकार ने क्यों तय किया है?
- 9) सहकारी कृषिपद्धति किसे कहते हैं?
- 10) एल.जी. हावनूर आयोग ने पिछड़ेपन को किस तरह पहचाना ?
- 11) पंचायतराज व्यवस्था क्यों महत्व पूर्ण है?



गतिविधियाँ

- ♦ विद्यालय में ग्राम पंचायत जैसी बैठक की व्यवस्था करना।
(शिक्षकों की सहायता प्राप्त करना)
- ♦ अपने गाँव के ग्राम पंचायत की संरचना और कार्यव्याप्ति के बारे में जानकारी संकलन की लिए ।





पाठ का परिचय :

सामाजिक और आर्थिक विकास की प्रक्रिया में संचार माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कर्नाटक की प्रगति में कृषि, उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी और जैविक प्रौद्योगिकी क्रांतियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इनका संक्षिप्त परिचय इस पाठ में दिया गया है।

सामर्थ्य :

1. सामाजिक और आर्थिक विकास में संचार माध्यमों की भूमिका से अवगत होना।
2. सूचना प्रौद्योगिकी और जैविक प्रौद्योगिकी क्रांति के परिणामस्वरूप राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों के परिवर्तन के बारे में जानकारी एकत्रित करना।
3. कृषि, उद्योग और बुनियादी व्यवस्था में हुई वृद्धि की सराहना करना।

संचारी माध्यम :

समाचार या विषय को एक दूसरे को अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने वाली तरीका को संचार माध्यम कहते हैं। हमारे बुजुर्ग अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरह के संचार माध्यमों का इस्तेमाल करते थे। उदाहरण के लिए, प्राचीन काल में कबूतर, ऊँट आदि का उपयोग संचारी माध्यम के रूप में भी किया जाता था।

आधुनिक काल में संचार व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। यह क्रांति भारत को पश्चिमी देशों की देन है। 20वीं सदी के अंत तक डाक और तार प्रणाली सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किये जाने वाले संचार माध्यम थे। आज रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट आदि संचारी व सूचना माध्यम सभी समुदायों तक पहुंचे हैं। इनके बिना जनजीवन की कल्पना मुश्किल है।

समूह माध्यमों को मुख्य रूप से तीन समूहों में विभाजित किया गया है। वे हैं-

➤ मुद्रण माध्यम ➤ इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ➤ मनोरंजन माध्यम

1. **मुद्रण माध्यम** : आज मुद्रण माध्यम में अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में कई समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। दैनिक समाचार पत्रों को उस समय का ऐतिहासिक प्रलेखन माना जाता है। ये शहर, गाँव का भेद-भाव किए बिना सभी लोगों तक पहुँचानेवाला सबसे शक्तिशाली माध्यम है।

गतिविधि : कन्नड़ / अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र और साप्ताहिक पत्रों की सूची बनाइए।

कन्नड़ में प्रकाशित सबसे पहला समाचार पत्र, 'मंगलूरु समाचार' है। समाचार पत्रों में दैनिक समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, अर्ध-वार्षिक और वार्षिक समाचार पत्र हैं।

2. **इलेक्ट्रॉनिक माध्यम** : इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की क्रांति 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुई। दूरदर्शन' लोगों का प्रमुख आकर्षण बना। यह माध्यम, आवश्यक जानकारी के साथ-साथ बेहतरीन मनोरंजन प्रदान करता है। इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में तीव्र स्पर्धा के साथ, विविध निजी कंपनियाँ हमें किसानों, श्रमिकों, निवेशकों, विभिन्न उपभोक्ताओं, छात्रों और अन्य वर्गों के लिए विपुल जानकारी प्रदान कर रही हैं। आजकल प्रशासनिक यंत्र इलेक्ट्रॉनिक मान होती जा रहा है ।

दुनिया के किसी भी कोने में कोई भी घटना घटित हो, उसका दृश्य पल भर में आँखों के सामने प्रस्तुत हो जाता है। भूकंप, बाढ़, दुर्घटना आदि के बारे में समाचार का प्रसार होता है। इसके अलावा समय-समय पर घटने वाली जलवायु विसंगतियों को उसी रूप में लोगों तक पहुँचाने के द्वारा घटनाओं की मात्रा कम करने में सहायता मिली है। दूरदर्शन के अलावा अन्य प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं, - रेडियो, मोबाइल और इंटरनेट आदि। ये कई जीवन के अविच्छिन्न अंग हैं। नगर समुदायों में इंटरनेट का उपयोग अधिक है।

मोबाइल साक्षर और निरक्षर दोनों को पहुँचा हुआ एक प्रभावशाली माध्यम है। ऐसे ही रेडियो माध्यम आजकल एक प्रभावपूर्ण माध्यम के रूप में प्रचलित है।

यह सूचना और मनोरंजन दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण श्रव्य माध्यम है।

इंटरनेट ने दुनिया को काफी निकट किया है। यह दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक खबर पहुँचानेवाला शक्तिशाली साधन है। वर्तमान में अवतरित कई आंदोलन अंतरजाल में उपलब्ध हैं- फेसबुक, ट्विटर आदि माध्यम हैं। इस प्रकार इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ने हमारे समाजिक के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3. मनोरंजन माध्यम : मनोरंजन के क्षेत्र में सिनेमा एक बहुत बड़ा माध्यम है। इसके साथ एक अन्य माध्यम नाटक प्रदर्शन है।

सिनेमा सबसे शक्तिशाली माध्यम है क्योंकि वह अपने दृश्य माध्यम के कारण सभी वर्गों के लोगों को आकर्षित करता है। हम मुख्य रूप से सिनेमाओं में वाणिज्यिक सिनेमाओं को देखते हैं। इसके साथ ही वैकल्पिक सिनेमा यानि प्रायोगिक सिनेमा हैं। वैकल्पिक सिनेमा निश्चित विषयों से संबंधित अनुसंधान प्रवृत्ति युक्त है। इससे सामाजिक अंधविश्वासों को दूर करने की कोशिश करते हैं। अधिक से अधिक लोगों को उन्हें देखने की जरूरत है।

संचारी माध्यम आज देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये देश की एकता, एकीकरण तथा अखंडता को संरक्षण देने में मदद करता है। साथ ही, व्यापार और वाणिज्य जैसे क्षेत्रों के विकास में जनसंचारी माध्यमों की भूमिका महत्वपूर्ण है। बृहत् कंपनियाँ अपने एकाधिकार के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति:

वर्तमान संदर्भ को 'सूचना युग' कहा जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सूचना निर्माण और प्रसार की प्रक्रिया को सूचना प्रौद्योगिकी से परिभाषित किया गया है।

कंप्यूटर तकनीकी और तार संप्रेषण के संयोजन ने 1990 के दशक में एक बड़ी क्रांति की सृष्टि की है। सूचना शब्द



बेंगलोर

को - उत्पादित वस्तु के रूप में स्वीकारा गया है। सॉफ्टवेयर के उत्पादन में बेंगलुरु की बृहत कंपनियाँ जैसे इंफोसिस और विप्रो का योगदान अपार है। बेंगलोर को भारत की सिलिकॉन सिटी भी कही जाती है।

कर्नाटक सरकार ने 1997 में सूचना-प्रौद्योगिकी पर एक नई योजना तैयार की। एक नया अधिनियम पारित किया। सूचना-प्रौद्योगिकी के उपयोग से उद्योग, कृषि, व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा, स्वास्थ्य, कन्नड़ भाषा का विकास, प्रशासन-आदि क्षेत्रों को नया रूप देने का प्रयत्न किया गया। इस क्रांति से विविध क्षेत्रों में काफी मात्रा में रोजगार की सृष्टि हुई। इंटरनेट ने इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एक और महत्वपूर्ण विकास के रूप में भारत सरकार और कर्नाटक सरकारों के तत्वावधान में सन 2000 में एक साइबरपार्क की योजना प्रारंभ की गई। सात केंद्रों पर युवाडाटकॉम (Yuva.com) को पर्याप्त मात्रा में लागू किया गया। कन्नड़ भाषा के विकास के लिए उपयुक्त तकनीकी को निश्चित सही संकेत प्रदान करनेवाले कुंजीपल (Key board) का सृजन किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी से विविध वर्गों के सामाजिक सशक्तिकरण के आशय को प्रस्तुत किया गया है। हम एक ऐसी स्थिति देख रहे हैं जिसमें पूरी दुनिया सूचना प्रौद्योगिकी पर निर्भर है।

गतिविधि : कर्नाटक में प्रमुख सूचना-प्रौद्योगिकी कंपनियों की सूची बनाइए।

जैविक प्रौद्योगिकी क्रांति

सूचना प्रौद्योगिकी और जैविक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में परिवर्तन प्रमुख क्रांतियाँ थीं जो 20वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुई। जैविक प्रौद्योगिकी जैविक विज्ञान और अन्य बुनियादी विज्ञानों का अनुप्रयुक्त रूप जैविक प्रौद्योगिकी जाना जाता है। सरल शब्दों में जैविक प्रौद्योगिकी जीवियों की विशेषताओं से उपयुक्त उत्पत्तों का तकनीक से प्राप्त क्रम को जैविक प्रौद्योगिकी हैं।



बायोकोन कंपनी

वर्तमान दशकों में कर्नाटक एक महत्वपूर्ण जैविक प्रौद्योगिकी क्षेत्र रहा है। पहले से जैविक प्रौद्योगिकी अनुपयुक्त के रूप में प्रचलित में था। लेकिन 20वीं सदी में जैविक प्रौद्योगिकी एक अनूठी विज्ञान शाखा के रूप में विकसित हुई। जैविक प्रौद्योगिकी विभिन्न शाखाओं में फल-फूल रही है। वे हैं अनुवंशिक तकनीकी, डी.एन.ए., अंगुली छाप (Finger Print), ऊतक (Tissue Culture) और क्लोन क्रिएशन भी शामिल हैं। 1997 में वैज्ञानिक विल्मट ने दुनिया के सबसे प्रथम क्लोन प्राणी भेड़ (डॉली) की सृष्टि की। तब से कई क्लोन बनाए गए ।

ईंधन की कमी आजकल एक गंभीर समस्या है। बढ़ता हुआ ईंधन का मूल्य लोगों से बर्दाश नहीं किया जा रहा है। इसके वैकल्पिक रूप में जैविक ईंधन बनाने वाले अनुसंधान विपुल मात्रा में हुए हैं।

कृषि क्षेत्र में जैविक प्रौद्योगिकी को अपनाने के प्रयास जारी हैं। ये सारे प्रयास कर्नाटक में जारी हैं। बेंगलूर और धारवाड़ के कृषि विश्वविद्यालयों में जैविक प्रौद्योगिकी के पार्क स्थापित किए गए हैं। ऐसे ही, तटीय प्रदेशों में जैविक संसाधनों के उपयोग के लिए कारवार में एक जैविक प्रौद्योगिकी केंद्र स्थापित किया गया है। कृषि जैविक प्रौद्योगिकी संस्थान धारवाड़ में स्थापित किया गया है। निजी क्षेत्रों में बायोकाॅन जैसी बड़ी कंपनियाँ कार्यरत हैं। ये विकास हमारे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं पर लंबे समय से प्रभाव डाल रहा है।

गतिविधि : ईंधन की समस्या के बारे में अधिक सूचना संकलन कीजिए।

कर्नाटक में कृषि अभिवृद्धि :

पृथ्वी प्राकृतिक संसाधन जैसे भूमि, जल, खनिज, वन और ऊर्जा संसाधनों का एक संयोजना है । जिन्हें उचित ढंग से उपयोग करने से अभिवृद्धि संभव है। भारत के अधिकांश परिवार अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। कर्नाटक भी इसमें अपवाद नहीं है।

कृषि हमें आवश्यक खाद्यान्न की आपूर्ति करती है। उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करती है। यह रोजगार के अवसर प्रदान करती है। औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार में अवसर निर्माण करती है। और प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में

वृद्धि का कारण बनती है। इन सब दृष्टि से कृषि देश की अर्थव्यवस्था का प्रधान मूल प्राण है।

कर्नाटक राज्य का कुल क्षेत्र लगभग 1,91,791 वर्ग कि.मी. है। कर्नाटक क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सातवाँ सबसे बड़ा राज्य है।

भूमि का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है। कर्नाटक में लगभग 19 मिलियन (190,50) लाख हेक्टेयर भूमि है। लेकिन इसमें केवल 11 मिलियन हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य के लिए उपयुक्त है। कृषि योग्य कुल भूमिक 58 प्रतिशत मात्र उपयोगी है। गैर कृषि भूमि 13.23 प्रतिशत और 16.1 प्रतिशत वन क्षेत्र का हिस्सा है।

गतिविधि : कर्नाटक में, बंजर ज़मीन की मात्रा 19 प्रतिशत है। इसके सदुपयोग के विविध उपायों के बारे में चर्चा कीजिए।

कृषि विकास के लिए उपयुक्त उपाय :

- 1 **सिंचाई व्यवस्था:** सरकार ने कर्नाटक में कृषि उपजों के विकास के लिए कई सिंचाई योजनाएँ शुरू की हैं। प्रमुख योजनाएँ हैं-तुंगभद्रा योजना, कृष्णा योजना, भद्रा योजना, घटप्रभा योजना, मलप्रभा योजना, हेमावती, हारंगी, वाणीविलास, कारंजा, वाराही, बेण्णे तोरे हिप्परगी आदि। उपलब्ध जल को वैज्ञानिक उपयोग और कुछ सुधार की आवश्यकता है।

2011 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, कर्नाटक कृषि उपजों में 5 वाँ स्थान रखता है।

2. **मिट्टी संरक्षण पर जोर (दबाव) :** हवा, बारिश और बाढ़ जैसी प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा ऊपरी मिट्टी के नुकसान (मृदा अपरदन) को मिट्टी का कटाव' कहा जाता है। वन-नाश, दोषपूर्ण कृषि पद्धति आदि के कारण भी मिट्टी का कटाव होता है। कर्नाटक सरकार ने किसानों को इस मुश्किल से बचाने के लिए कई निर्देश दिये हैं। रेडियो और दूरदर्शनों में प्रसारित 'कृषिरंगा' कार्यक्रमों में किसानों को जानकारी देने वाले कार्यक्रमों का प्रसार हो रहा है।

3. **जैविक कृषि पद्धति को प्रोत्साहन :** आधुनिक कृषि पद्धतियों को लागू करके कृषि उपजों में प्रमाण बढ़ाया जा रहा है। लोग रासायनिक खाद और कीटनाशकों के अति प्रयोग से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत हैं। आजकल के पर्यावरण संरक्षण आंदोलन' सरकार की आँखें खोलने वाले प्रयास हैं। सरकार ने जैविक खाद के अधिक उपयोग को प्रोत्साहित करने का कदम उठाया है।



जैविक कृषि पद्धति के खेत

कर्नाटक में 2011 में कृषि पर आधारित लोगों की संख्या 49 प्रतिशत थी।

गतिविधि : वैज्ञानिक कृषि पद्धति के साथ स्थानीय पारंपरिक कृषि पद्धतियों से तुलना कीजिए। कर्नाटक के प्रगतिशील किसान श्री प्रफुल्लचंद्र के बारे में जानकारी हासिल कीजिए।

औद्योगिक विकास :

राज्य के आर्थिक विकास में उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उद्योगों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है। वे हैं- छोटे उद्योग, मध्यम उद्योग और बृहत उद्योग। विविध उद्यम, उद्योगों की स्थापना, उनसे जुड़े परिवहन, तथा संपर्क सुविधाओं का विकास करने वाली प्रक्रिया को 'औद्योगीकरण' कहा जाता है। यह एक सतत प्रक्रिया है। नए-नए उद्योगों और कारखानों की स्थापना से उन्हें आवश्यक प्राथमिक व्यवस्था (जैसे बिजली संयंत्रों की स्थापना, परिवहन, संपर्क) को विकसित करने की आवश्यकता होती है। कर्नाटक ने इस दिशा में काफी प्रगति की है। लेकिन यह अभी भी अत्यधिक बिजली की मांग को पूरा करने में बहुत पीछे है।

आजकल कर्नाटक में कई तरह की कंपनियाँ स्थापित हुई हैं। कर्नाटक के प्रमुख उद्योग हैं :

- लोहा और इस्पात उद्योग
- कपास वस्त्र उद्योग
- चीनी उद्योग
- इलेक्ट्रॉनिक उद्योग
- एल्युमीनियम उद्योग
- रेशम उद्योग
- कागज उद्योग
- सीमेंट उद्योग आदि।

इन उद्यमों ने न केवल रोजगार के अवसर पैदा किए हैं बल्कि उन्हें विदेशी विनिमय हासिल करने में भी मदद दी है। फिर भी उद्योगों और कृषि के विकास में समन्वय और संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

घरेलू और लघु उद्योगों का महत्व :

घरेलू और लघु उद्योग कर्नाटक की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। राज्य के आर्थिक विकास में उद्योग ही बुनियादी स्तंभ हैं। महात्मा गांधी के अनुसार “घरेलू उद्योग देश को प्रगति की ओर ले जाने वाला दीपक है”। कर्नाटक सरकार ने घरेलू उद्योगों और लघु उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान कर रही है। इसके लिए कई निगम बनाए गए हैं। उदाहरण : नारियल रेशा विकास निगम, काजू विकास निगम, आदि।

गतिविधि : घरेलू उद्योगों को मजबूत करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर चर्चा कीजिए।

औद्योगिक नीति :

सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना, निवेश और विदेशी सहायता, औद्योगिक कर, मजदूरों का उपयोग, उनका संरक्षण सभी औद्योगिक नीति के अंतर्गत

आते हैं। 1948 में केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित नीति के पृष्ठभूमि में कर्नाटक की औद्योगिक नीतियों का गठन किया गया है। राज्य की औद्योगिक नीति उपलब्ध संसाधनों पर आधारित है। 1956, 1977 और 1980 में, केंद्र सरकारों द्वारा प्रमुख औद्योगिक नीतियाँ बनाई गयीं।

गतिविधि : अपने घर के पास एक औद्योगिक केंद्र पर जाएँ और वहाँ की गतिविधियों का निरीक्षण करें।

कर्नाटक सरकार ने 1996 में अपनी स्वयं की औद्योगिक नीति निर्धारित की। इसमें आधारभूत सुविधाओं के विकास में उद्योगों की सक्रिय भागीदारी पर बहुत जोर दिया गया है।

सरकार ने औद्योगिक पार्क(इंडस्ट्रीयल पार्क), हवाई अड्डा, अन्य प्राथमिक सुविधाओं के निर्माण का अंदाज करके योजना बनाने के लिए कदम उठाए हैं। 2001 में, सरकार ने एक नई औद्योगिक नीति लागू की, जिसने बाजारों के विकास, प्रौद्योगिकी उद्योग को बढ़ावा देने, कृषि-बागवानी, पशुपालन, खनिज और मानव संसाधन विकास को बढ़ावा दिया।

बढ़ते उद्योगों का उपयोग प्राकृतिक सुंदरता को नुकसान पहुँचाए बिना पर्यावरण प्रदूषण पैदा किए बिना और प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किए बिना समाज के विकास का समर्थन करने के लिए किया जा सकता है। इन आशयों को छोड़ने वाले सभी औद्योगिक विकास देश की विकास के लिए हानिकारक हैं। यह सुनिश्चित करना हमारी सरकार के साथ-साथ हमारा कर्तव्य भी है कि औद्योगिक विकास मानव जीवन के पूरक है।

अभ्यास

I उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. बेंगलुरु को _____ शहर कहा जाता है ।
2. विश्व का पहला जैविक रूप से क्लोन किया गया जानवर _____।
3. कर्नाटक सरकार _____ में औद्योगिक नीति स्थापित की ।
4. 'घरेलू उद्योग देश को प्रगति की ओर ले जानेवाला दीपक है।' - यह विचार _____ का था ।

II दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

5. संचारी प्रणाली क्या है?
6. तीन सबसे महत्वपूर्ण संचारी माध्यम कौन-कौन से हैं?
7. सूचना प्रौद्योगिकी क्या है?
8. जैविक प्रौद्योगिकी क्या है?
9. कर्नाटक के कौन से जिले में जैविक प्रौद्योगिकी पार्क है?
10. जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डालिए।
11. मृदा अपरदन क्या है?



गतिविधि

1996 में कर्नाटक सरकार द्वारा तैयार की गई औद्योगिक नीति बारे में अधिक जानकारी एकत्र कीजिए ।



नागरिकशास्त्र

अध्याय 22

न्यायपालिका



पाठ परिचय :

यह पाठ कानूनी और न्यायांग व्यवस्था के बारे में है। पाठ में सर्वोच्च न्यायाधीश और मुख्य न्यायाधीश की योग्यताएँ और कार्य, अधीनस्थ न्यायालयों और लोक अदालतों के कार्यों का वर्णन किया गया है।

सामर्थ्य :

- 1 राज्य प्रशासन में कानून और न्यायपालिका की भूमिका की सराहना करना।
- 2 न्यायपालिका गैर पक्षपात तरीके से कार्य करती है, वह कार्यकारी नियंत्रण के अधीन में नहीं है, जानना।
- 3 भारत की न्याय प्रणाली की सराहना।
- 4 लोक अदालतों के बारे में अधिक जानकारी एकत्रित करना।

न्यायिक प्रणाली न्यायिक निर्णय की एक अलग प्रणाली है। कानून और न्यायपालिका दोनों राज्य प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

♦ एक जगह में आपस में लड़ता स्वाभाविक है दोनों के बीच विवाद नहीं सुलझता है तो तीसरा व्यक्ति इसे समझकर निर्णय कर सकता है।

♦ न्यायिक निर्णय लेने के लिए कानून बनाए गए। किसी व्यक्ति के बाहरी व्यवहार को नियंत्रित रखने के नियम ही कानून है। कानून अपराध और अपराधियों को नियंत्रित करता है। समाज में शांति, अनुशासन और सुव्यवस्था बनाए रखता है। साथ ही नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है।

न्यायालय के कार्य: न्यायालय, विधायिका द्वारा अधिनियम विधियों का विवरण देता है। वे व्यक्तियों के बीच, व्यक्ति और सरकारों के बीच के विवादों का निर्णय देते हैं। अदालतें नागरिकों के जीवन, संपत्ति, गरिमा और अधिकारों की रक्षा करने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। न्यायालय प्रशासन रहित कार्यकारी नियंत्रण के अधीन नहीं है। वे बिना किसी पक्षपात के स्वतंत्र रूप से काम करती हैं।

सर्वोच्च न्यायालय :

देश की एकता की सुरक्षा के लिए हमारे संविधान ने एक न्यायिक प्रणाली को अपनाया है। जो पूरे देश पर लागू होती है अत्युन्नत न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायालय है (सुप्रीम कोर्ट)। इसमें मुख्य न्यायाधीश और 25 अन्य न्यायाधीश शामिल हैं। उन्हें राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है। सुप्रीम कोर्ट नई दिल्ली में है।



सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की योग्यताएं:

- * किसी भी उच्च न्यायालय में कम से कम 5 साल के लिए न्यायाधीश होना। या
- * उच्च न्यायालय में कम से कम 10 साल तक वकील हो । या
- * राष्ट्रपति को उनकी राय में एक प्रसिद्ध विधिवेत्ता होना चाहिए।
- * न्यायधीश की सेवा निवृत्ति की आयु सीमा 65 वर्ष है।

सर्वोच्च न्यायालय के कार्य

- * केंद्र और राज्य तथा राज्य के विवादों को हल करना।
- * नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न रीट आदेश जारी करना।
- * संविधान की व्याख्या करना।
- * सर्वोच्च न्यायालय राष्ट्रपति को सलाह, राय माँगने पर देते हैं।
- * आवश्यक नियम बनाना।

उच्च न्यायालय :

राज्य के स्तर पर जो उच्चतम न्यायालय है उसे उच्च न्यायालय कहा जाता है। कर्नाटक राज्य उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट) बेंगलूर महानगर में है। उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश और अन्य न्यायाधीश होते हैं। देश में कुल 25 उच्च न्यायालय हैं।



कर्नाटक का उच्च न्यायालय, बेंगलूर

उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की योग्यताएं :

- * भारत का नागरिक होना चाहिए।
- * कम से कम 10 वर्षों तक भारत की न्यायपालिका में सेवा की हो। या 10 साल तक उच्च न्यायालय में वकील रूप में काम कर चुका हो।

- * राष्ट्रपति किसी एक राज्य के मुख्य न्यायाधीश को नियुक्ति करते समय सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और राज्यपाल के साथ परामर्श करते हैं।
- * उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की सेवा निवृत्ति की आयु सीमा 62 वर्ष है।
- * उच्च न्यायालय में अंग्रेजी या स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया जा सकता है।

उच्च न्यायालय के कार्य :

- * नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा के लिए विविध रिट आदेश जारी करना।
- * अधीनस्थ न्यायालयों के कार्य की देखरेख करना और कार्य निर्वाह।

विविध स्तरीय न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालय..... राष्ट्रीय स्तर पर (नई दिल्ली)

उच्च न्यायालय..... राज्य स्तर पर

अधीनस्थ न्यायालय..... जिला न्यायालय, मजिस्ट्रेट न्यायालय,

जूनियर मजिस्ट्रेट न्यायालय, लोक अदालतें।

अधीनस्थ न्यायालय :

सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के अलावा भारतीय न्यायिक प्रणाली में कई अधीनस्थ अदालत हैं। जैसे सर्वोच्च न्यायालय के अधीनस्थ में उच्च न्यायालय है। वैसे ही उच्च न्यायालय के अधीनस्थ जिला, तालुक और नगर की अदालतें हैं।

अधीनस्थ न्यायालय दो प्रकार के होते हैं। सिविल बिजनेस कोर्ट (सिविल), दंड न्यायालय (क्रिमिनल)। सिविल न्यायालय पैसा, संपत्ति, व्यापार और अनुबंधों से संबंधित विवादों की जाँच और न्याय करता है। दंड न्यायालय हत्या, चोरी, डकैती, आदि मुद्दे पर जाँच कर निर्णय देता है।

कुछ मामलों में अधीनस्थ न्यायालय उच्च न्यायालय में अपील कर सकते हैं। इसी तरह उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने का अवसर होता है।

लोक अदालत (जनता न्यायालय) : सरकार ने विवादों को कम लागत पर जल्दी और कुशलता से हल करने के लिए विभिन्न व्यवस्थाएँ तैयार की है ऐसी ही एक व्यवस्था है लोक अदालत।

राज्य या जिला स्तर के अधिकारी अक्सर सुविधाजनक स्थानों पर लोक अदालतों की व्यवस्था करते हैं। यदि दोनों पक्ष आपसी सहमति से समझौता करना चाहते हैं तो लोक अदालत ऐसे मामलों को उठाती है। उसके निर्णय को उसी प्रकार लागू किया जा सकता है जैसे न्यायालय का निर्णय लोक अदालत का फैसला अंतिम होता है। दोनों पक्ष इससे बंधे होते हैं। इस प्रकार अगले खर्च, हानि और देरी से बचा जा सकता है। कोई भी अदालत के इस फैसले के अपील नहीं कर सकता है। अगर कोई जान की धमकी देकर बलपूर्वक राजी कराता है तो पुलिस तुरंत शिकायत दर्ज कर सकती है।

अब तक लोक अदालत ऐसी कई मामलों को सुलझा चुकी है। अगर सही तरह से लोक अदालतों का उपयोग किया जाए तो बहुत उपयोगी न्यायालय बनना संभव है।

नये शब्द - मुकदमेबाजी - झगडा, कन्झड, दर्ज कराना - पंजीकरण करना

आपको ज्ञात रहे

- * राष्ट्रपति के अधिकार अवधि में उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जा सकता।
- * उनके खिलाफ कोई अपराधिक मामला दर्ज नहीं किया जा सकता है।
- * उनकी शक्तियों का उपयोग करके, किए गए किसी भी कार्य पर किसी भी अदालत में सवाल नहीं उठाया जा सकता।

जनहित के मुकदमे: यदि सरकारी विभाग या लोक प्राधिकरण कानून का उल्लंघन करता है या उत्पीडन अन्याय और शोषण के ऐसे कृत्यों में शामिल है, पंजीकृत कोई भी व्यक्ति सीधे न्यायालय को पत्र लिख सकता है। उसी पत्र को रिट माना जाएगा और बिना किसी फीस के अदालत में सुनवाई की जाएगी।

अभ्यास

I उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. देश का अत्युन्नत न्यायालय _____ ।
2. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की सेवा निवृत्ति की आयु _____ ।
3. देश में कुल _____ उच्च न्यायालय है ।
4. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को _____ नियुक्त करते हैं ।

II समूह में चर्चा करें और उत्तर दें:

5. न्यायपालिका के मुख्य कार्य क्या है?
6. राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय कौन सा है?
7. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने के लिए आवश्यक योग्यताएँ क्या है?
8. सर्वोच्च न्यायालय के क्या कार्य हैं?
9. न्यायिक निर्णय में देरी को कैसे रोका जा सकते हैं?
10. अदालतों को और अधिकार देना है या नहीं?



गतिविधियाँ :

- ◆ अपने विद्यालय में कानूनी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करें।
- ◆ स्कूल में स्थानीय वकीलों को बुलाएँ और कानून के बारे में विस्तार से जाने।
- ◆ विद्यालयों में न्यायालय की नकल कीजिए।
- ◆ निकटतम अदालत में जाएँ और वहाँ की दलीले सुनें।
- ◆ 'अगर मैं सुप्रीम कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश बनूँ' इस विषय पर विद्यार्थी एक-दो मिनट बात करें।



अध्याय 23

सुरक्षा बल



जैसा कि आप जानते हैं, स्वतंत्रता पूर्व में भारत पर कई आक्रमण हुए हैं। लेकिन स्वतंत्रता के बाद स्थिति बदल गई है। इसका कारण जानते हैं?

पाठ का परिचय

इस पाठ में हमारे सुरक्षा बलों, विभागों, प्रशिक्षण केंद्रों, अत्याधुनिकशस्त्रास्त्र, केंद्र कार्यालयों का परिचय दिया गया है। साथ ही पूरक सुरक्षा बलों, सहायक सुरक्षा बल और नागरिक सुरक्षा बलों का वर्णन है।

सामर्थ्य :

1. हमारे सुरक्षा बलों के बारे में जानना।
2. थल सेना, नौसेना और वायु सेना के बारे में समझना।
3. सुरक्षा बलों के सामर्थ्य को जानना।
4. पूरक सहायक रक्षा दलों की सेवा पर गर्व करना।
5. सहायक सैनिक बलों की स्वयं सेवा के बारे में गर्व का अनुभव करना।



इस चित्र में आप क्या देख रहे हैं ?

देश की विदेशी आक्रमणों से रक्षा, राष्ट्र का प्रथम कर्तव्य है। यह कार्य को सुरक्षा बलों को दिया गया है। इसलिए इन की भूमिका महत्वपूर्ण है।

भारत में अनुशासित, सक्षम और पराक्रमशाली सुरक्षा बल होना भारत के लिए गर्व की बात है। स्वतंत्रता के बाद जब हमारे देश की अखंडता के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ा तो हमने प्रभावशाली ढंग से उनका सामना किया है। (चीन और पाकिस्तान के हमले) कार्गिल युद्ध में दिखा दिया कि हमारी सेना मातृभूमि के लिए सबकुछ त्यागने के लिए तैयार हैं।

✱ भारत 15,200 कि.मी भू-सीमा तथा 7516.60 तटवर्ती क्षेत्र से युक्त है।

✱ देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बजट में 25%-30% धन या वित्तीय आरक्षण रखा गया है।

सुरक्षा बलों की जिम्मेदारियां :

1. देश की सीमाओं की सुरक्षा।
2. देश की अखंडता बनाए रखना।
3. तस्करी और अवैधानिक गतिविधियों को रोकना।

भारत के राष्ट्रपति को हमारे सुरक्षा बलों का सर्वोच्च अधिकार दिया गया है। सुरक्षा व्यवस्था में तीन विभाग हैं: थलसेना, नौसेना और वायु सेना। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के परेड में भाग लेने वाले सुरक्षा बल अपनी सैना क्षमताओं का प्रदर्शन करते हैं।

सुरक्षा बलों में अपने सामर्थ्य प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षण केंद्र हैं। उनमें से उल्लेखनीय हैं : राष्ट्रीय सुरक्षा कॉलेज, नई दिल्ली, सुरक्षा सेवा कर्मचारी प्रशिक्षण केंद्र, उदकमंडल(ऊटी), भारतीय सेना अकादमी, देहरादून और राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी, खड़कवासला, पुणे।

भारतीय थल सेना

भारतीय थल सेना दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी थल सेना है। थल सेना में पैदल सेना/सैनिक, अश्वसेना (घुड़सवार), तोपखाना दल, ऊंटदल और युद्ध टैंक होते हैं।

भू सेना में कुल 12,37,117 जवान हैं। 960,000 आरक्षित योद्धा हैं।



थल सेना का चिह्न

सेना के प्रधान को सेनापति(जनरल) कहा जाता है। वे नई दिल्ली में प्रधान कार्यालय से सेना के नियंत्रण, प्रशिक्षण, संचालन और प्रशासन प्रणाली का प्रबंधन करते हैं।

देश की सीमाओं की सुरक्षा के साथ, भूकंप, बाढ़, सूखा, भूस्खलन और तूफान जैसी प्राकृतिक विपदाओं की स्थिति में सेना मानवीय कार्यों का निर्वाह करती है। सेना तकनीकी रूप से दृढ़ होने के साथ-साथ गुप्तचर विभाग युक्त है।

भारतीय नौसेना :

नौसेना को तटों तथा द्वीपों की सुरक्षा करने की आवश्यकता है। भारतीय नौसेना दुनिया की छठवीं सबसे बड़ी नौसेना है। इसके प्रमुख को एडमिरल कहा जाता है। नौसेना केंद्र कार्यालय नई दिल्ली में है।

नौसेना के पास आधुनिक प्रकार के प्रक्षेपण(मिसाइल) जहाज और पनडुब्बियाँ हैं। इनमें आई.एन.एस. विभूति और आई.एन.एस. गोदावरी प्रमुख हैं। इसके अलावा, आई.एन.एस. विराट और आई.एन.एस. विक्रमादित्य जैसे विमानवाहक से नौसेनासुसज्जित है। कर्नाटक के 'सीबर्ड' नौका स्थान को कारवार में स्थापित किया गया है।



नौसेना का प्रतीक चिह्न



आई.एन.एस विराट

भारतीय वायुसेना :



वायु सेना का प्रतीक चिह्न



युद्धविमान

भारत में विश्व का चौथी सबसे बड़ी वायु सेना है। इसके प्रमुख को एयर चीफ मार्शल कहते हैं। इसका मुख्य केंद्रीय कार्यालय नई दिल्ली में है। प्रशासन की सुविधा के लिए वायु सेना को सात कमांडों में बांटा गया है।

बेंगलूरु, हैदराबाद और डिंडीगुल (तमिलनाडु) में प्रमुख वायु सेना प्रशिक्षण केंद्र हैं। वायु सेना तकनीक को अपनाने के साथ, कई नए युद्ध विमानों से सशस्त्र सज्जित है।



मिग युद्ध विमान

हमारी वायु सेना के पास जाग्वार और राफेल जैसे आधुनिक युद्धविमान हैं। इसके पास कुल 100,000 योद्धा और 1330 युद्ध विमान हैं। हमारी वायुसेना का शक्तिशाली होना हमारे लिए गर्व की बात है ।

पूरक सुरक्षा बल - सीमा सुरक्षा बल :

सुरक्षा बलों के अलावा विषम परिस्थितियों में पूरक सुरक्षा बल उनकी मदद के लिए काम कर रहा है।



सीमा सुरक्षा दल

- * **सीमा सुरक्षा बल :** (Border security force) सीमा सुरक्षा बल का मुख्य कार्य भारत की सीमाओं की रक्षा करना है। कारगिल युद्ध में सीमा सुरक्षा बल ने पहाड़ की ऊँचाई तक चढ़कर सेना के साथ लड़ाई लड़ी थी। मौत तक कर्तव्य निभाना (Duty until death) इसका प्रण है।
- * **सीमा सड़क संगठन :** (Border roads organisation) सीमा सड़क संगठन बंद सड़कों को मुक्त करके और सेना संचालन के लिए तुरंत सहायता प्रदान करता है। संगठन-सड़क निर्माण, पुल निर्माण और नालों द्वारा जल निकासी पर काम करता है।
- * **तटरक्षक बल :** (Coastal Guards) यह एक अर्धसैनिक बल है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। तट की सुरक्षा करना इसकी जिम्मेदारी है। तूफान, चक्रवात और सुनामी-जैसी प्राकृतिक विपदाओं के दौरान रक्षाकार्य करता है। इसका मुख्य कार्य घुसपैठ और तस्करी को रोकना है।



तट के पहरेदार

तटरक्षक बल के पास 1402 अत्याधुनिक जहाज और 381 विमान और 60 हेलिकैप्टर हैं। 12,585 योद्धा तट की पहरेदारी पर नियुक्त हैं।

✱ **केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल :** (Central Industrial Security Force) यह विश्व का सबसे बड़ा औद्योगिक सुरक्षा बल है। इसमें 1,45,000 योद्धा हैं। यह देश में 300 से अधिक सरकारी, निजी औद्योगिक इकाइयों और प्रयोगशालाओं को सुरक्षा प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह हवाई अड्डों, बंदरगाहों, रेलवे स्टेशनों, ऐतिहासिक संरक्षित स्मारकों और परमाणु ऊर्जा केंद्रों को भी सुरक्षा प्रदान करता है।

सहायक रक्षा सेवाएँ :

देश भर के युवाओं में सेवा और देशभक्ति जागृत करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में कई गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। इनमें से एन.सी.सी. एक महत्वपूर्ण गतिविधि है।

✱ **एन.सी.सी.-राष्ट्रीय कैडेट कोर :** (National Cadet Corps) एन.सी.सी. सामूहिक जीवन के महत्व और नेतृत्व आदि गुणों को सिखाता है। इन प्रशिक्षणार्थियों को सेना में भर्ती होने के लिए विशेष प्रधानता दी जाती है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए भी आरक्षण मिलेगा। स्कूल-कॉलेजों में एन.सी.सी. में युवक-युवतियाँ नामांकन कर सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा की जिम्मेदारी को बढ़ाना है। इसका प्रण 'अनुशासन और एकता' है।



एन.सी.सी. कैडेट

- ❖ **भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी :** (Indian Red Cross Society) रेड क्रॉस संस्था पूरे भारत में 1100 जिलों में अपनी शाखाओं के साथ कार्य निर्वह करती है। राष्ट्रपति इसके अध्यक्ष होते हैं। रेड क्रॉस संगठन का मुख्य ध्येय 'मानवता और स्वयंसेवा' है।



रेड क्रॉस चिह्न

- ❖ **नागरिक सुरक्षा बल :** (Civil Defence) पुलिस बल राज्य और केंद्र स्तर पर हैं। राज्य पुलिस बल का अधिकार क्षेत्र राज्य तक ही सीमित है। केंद्र सरकार ने अपने पुलिस बल स्थापित किये हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा बल : नेशनल गार्ड अभिजात वर्ग को सुरक्षा प्रदान करता हैं। यह देश में आंतरिक सुरक्षा और आतंकवाद मिटाने पर अधिक जोर देता है। बम निष्क्रिय दल इसके सहायक हैं।

- ❖ **गृह रक्षक बल :** (Home Guards) यह पुलिस बल के पूरक के रूप में कार्य करता है। आंतरिक सुरक्षा प्रदान करने में सहायता करना और आपातकालीन स्थिति, प्राकृतिक विपदा के समय सहायता करना आदि इसका प्रमुख कर्तव्य हैं।

आपको ज्ञात रहें :

सेना के उन्नत या उच्च अधिकारी : जनरल, लेफ्टिनेंट जनरल, मेजर जनरल, ब्रिगेडियर, कर्नल, लेफ्टिनेंट कर्नल, मेजर, कैप्टन और लेफ्टिनेंट, नौसेना और वायु सेना में भी उसके संबंधित उच्च अधिकारियों के पद /श्रेणी हैं। तीनों सुरक्षा बलों के मुखिया को रक्षा कर्मचारियों का प्रमुख कहा जाता है।

////// अभ्यास //////////////////////////////////

I उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

1. रक्षा बलों के सर्वोच्च अधिकार _____ को दिया गया है ।
2. थलसेना के प्रधान को _____ कहा जाता है ।

3. थलसेना के प्रधान कार्यालय _____ में हैं ।

4. एनसीसी का प्रण वाक्य _____ है ।

II समूहों में चर्चा करके और उत्तर दें :

5. सुरक्षा बल के विभाग कौन - कौन से हैं ?

6. थल सेना के प्रमुख कार्य कौन-कौन से हैं ?

7. सीमा सुरक्षा बल के कार्य कौन-कौन से हैं ?

8. रेड क्रॉस संस्था मुख्य ध्येय क्या है ?

9. क्या आप रक्षा बल में सेवा करना चाहते हैं ? कारण बताओ ।

III चर्चा करें :

10. 6 रक्षाबलों की जिम्मेदारियों को बताइए ।

11. हमें क्यों रक्षा बल में सेवा करनी चाहिए ?



गतिविधियाँ :

- ♦ अपने गाँव के सैनिकों से मिलिए और उन्हें अपने स्कूल में आमंत्रित कीजिए।
- ♦ रक्षाबलों की विभिन्न इकाइयों के प्रतीकों को इकट्ठा कीजिए।
- ♦ अपने पास के स्कूल कॉलेजों में एनसीसी इकाई का दौरा करें।



अध्याय 24 भारत और उसके पड़ोसी देश



पाठ का परिचय :

किसी भी राष्ट्र की प्रगति में उसकी विदेशी नीति प्रमुख भूमिका निभाती है। इस भूमिका में भारत ने अपनी विदेशी नीति के तहत पड़ोसी 39 देशों के साथ किस तरह का संबंध स्थापित किया है। इसे इस पाठ के द्वारा जान सकते हैं।

सामर्थ्य :

1. भारत का अपने पड़ोसी देशों के साथ राजनीतिक संबंध जानना ।
2. पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को सराहना । भारत के शांतिपूर्ण संबंध को सहारना।
3. पड़ोसी देशों के साथ भारत के आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक सहयोग के बारे में जानना ।
4. पड़ोसी देशों के साथ सीमा की समस्या, युद्ध, आतंकवादी गतिविधियाँ, जनांगीय समस्या, जलविवाद आदि समस्याओं को समझना।
5. पड़ोसी देशों के प्रति प्रेम की भावना बढ़ाना ।

दक्षिण एशिया के आर्थिक व्यवहार मूल रूप से भारत केंद्रित हैं। भारत अपने विशाल आकार, भौगोलिक परिवेश, आर्थिक और सेना शक्ति के कारण दक्षिण एशिया के व्यवहार में प्रमुख भूमिका निभाता है।

भारत के उत्तर में चीन, नेपाल और भूटान देश हैं: पूर्व में बांग्लादेश और म्यानमार हैं । उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान, दक्षिण में श्रीलंका है। ये हमारे सात पड़ोसी देश हैं। इन्हें मानचित्र में देखो ।

शांति, स्नेह, सौहार्द, सहयोग की अगाध विरासत भारत के साथ है। कई पड़ोसी देश के साथ भारत के मतभेद और विवादों के बावजूद हमारा देश बातचीत के जरिए शांतिपूर्ण समाधान पाना चाहता है।

अपने पड़ोसी देशों के साथ भारत का संबंध को अब हम जानेंगे -



भारत और उसके पड़ोसी देश

भारत और पाकिस्तान

भारत का ही भू-भाग पाकिस्तान स्वतंत्रता पाने के संदर्भ में अलग राष्ट्र के रूप में 1947 में उभरा। संघर्ष की जड़ में उसने इन दो देशों के बीच समंजस नहीं हो सका। इसलिए समस्याएँ अनसुलझी वैसी ही रह गयीं। वे मुख्य रूप से हैं -

- कश्मीर विवाद
- सैनिक आक्रमण
- आतंकवाद
- जल विवाद
- अनुसूचितों की सुरक्षा
- व्यापार, वाणिज्य विकास, आदि

मूल रूप में कश्मीर का सवाल स्वतंत्रता पूर्व से भारत -पाक संबंधों को बिगाड़ता आ रहा है अब तक भारत-पाकिस्तान के बीच चार युद्ध हो चुके हैं (1947, 1965, 1971 और 1999)। 1948 में पाकिस्तान ने सशस्त्र कारवाई द्वारा कश्मीर पर कब्जा करने के प्रयत्न में कश्मीर का कुछ भाग वश में ले लिया है। उस भाग को पाक आक्रमित कश्मीर (Pak Occupied Kashmir- POK) कहा जाता है। भारत पहले से ही समर्थन करता आया है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

1962 के भारत चीन युद्ध के बाद पाकिस्तान ने चीन के साथ निकट सैनिक संबंध बनाए रखा। पाकिस्तान ने जम्मू-कश्मीर राज्य में करीब 2700 वर्ग मील भू प्रदेश चीन को दे दिया।

1965 में भारत पाक युद्ध के दौरान भारत द्वारा पकड़े गए 80,000 से अधिक पाकिस्तानी सैनिकों को स्वदेश सौंपा गया। कश्मीर समस्या को केवल भारत - पाकिस्तान के बीच चर्चा द्वारा हल निकाले जाने की बात पर सहमत हुए।

पाकिस्तानी सैनिक दल तथा भारत समर्पित पूर्व पाकिस्तान (बांग्लादेश) के बीच भयंकर संघर्ष हुआ। इस युद्ध को आमतौर पर भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ तीसरा युद्ध माना जाता है।

1971 में भारत - पाक युद्ध हुआ और 1972 में शिमला श्रृंग सभा हुई। उस समय श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री थीं। श्रृंग सभा में कश्मीर के साथ अपनी सभी समस्याओं को बातचीत द्वारा ही सुलझाये जाने का समझौता ही 'शिमला समझौता' है।



कार्गिल युद्ध में लड़ रहे हमारे जवान

1999 के कार्गिल युद्ध के बाद भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अमृतसर से लाहौर तक 'लाहौर बस यात्रा' प्रारंभ करके दोनों राष्ट्रों के संबंध सुधारने की कोशिश की। तत्पश्चात आगरा में संपन्न श्रृंग सभा में दोनों राष्ट्रों के बीच शांति स्थापना का प्रयास हुआ। परंतु श्रृंग सभा असफल रही। इस असफलता से पाकिस्तान ने आतंकवादियों को प्रोत्साहन दिया। परिणाम स्वरूप पाक प्रेरित आतंकवादियों ने दिसंबर 13, 2001 में भारत के संसद भवन पर हमला किया, इसने भारत और पाकिस्तान के बीच का संबंध और बिगाड़ दिया।

अपनी सुरक्षा प्रणालियों को मजबूत करने के लिए दोनों राष्ट्र लगातार प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। फिर भी भारत सभी मतभेद को भूलकर पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ मैत्री के लिए हाथ बढ़ाया है।

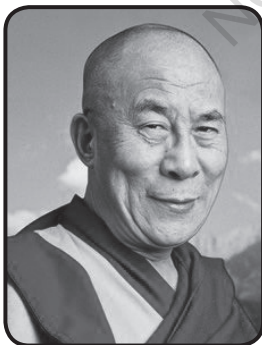
गतिविधि : शस्त्रास्त्रों की प्रतिस्पर्धा में भारत और पाकिस्तान की तल्लीनता के बारे में चर्चा कीजिए।

भारत और चीन :

भारत के पड़ोसी देशों में चीन प्रमुख है। क्योंकि भारत और चीन के बीच की सीमा लंबी है। भारत ने चीन को विश्व संस्था में स्थान दिलाने की कोशिश की। भारत ने प्रारंभ से ही चीन के साथ शांतिपूर्ण संबंध चाहा।

चीन और भारत के बीच संघर्ष का प्रमुख कारण तिब्बत और अरुणाचल प्रदेश से संबंधित विचार हैं ।

1950 में चीन तिब्बत में संपन्न सशस्त्र कारवाइयों से भारत को बहुत निराशा हुई । जब तिब्बतियों की स्वयत्तता को दबाने का प्रयास चीन ने किया तो भारत तिब्बतियों का साथ देकर मानवाधिकारों का प्रतिपादन किया। चीन ने इस सुझाव का तिरस्कार करने के साथ भारत का बहुत विरोध करते हुए व्यक्त किया कि अपने आंतरिक मामलों में भारत दखल दे रहा है ।



दलायी लामा



बौद्ध मंदिर, बैलकुप्पे

1950 में, तिब्बत पर चीन ने आक्रमण करके मिलिटरी नियंत्रण हासिल कर लिया । इस संदर्भ में आवासहीन तिब्बत के धर्मगुरु दलायी लामा को भारत ने आश्रय दिया । इनके साथ शरणार्थी बनकर हजारों (80.000) तिब्बत लोग भारत आए। भारत के दस राज्यों में इनको पुनः आवास की व्यवस्था करायी। मुंडगोड (उत्तर कन्नड) और बैलकुप्पे(मैसूर) में इनके आवास स्थान हैं। इससे असंतुष्ट चीन ने भारत के पूर्वी सीमा भाग के कई प्रदेशों को जीतने का प्रयास किया। भारत ने इसका विरोध किया।

गतिविधि: शिक्षको के साथ मुंडगोड और बैलकुप्पे प्रवास जाकर तिब्बत के लोगों की जीवन शैली के बारे में एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। तिब्बतियों के जीवन शैली, धर्म के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए ।

चीन के प्रधान चौयन लाय की भारत यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नेहरूजी के साथ 1954 में पंचशील सूत्र पर हस्ताक्षर किया गया । पंचशील सूत्र के बारे में आप जानते ही हैं।

चीनी पाठ्य पुस्तकों में भारत के कुछ भागों को अपना कहकर दिखाया गया। मानचित्र को सुधार करने की मांग को भारत के सामने रखा । इसके लिए चीन के प्रधान सहमत हुए । लेकिन इस मामले में कोई बदलाव नहीं किया गया।

तिब्बती समस्या के दौरान चीन भारत पर 1962 में पूर्वोत्तर सीमा से लदाख (जम्मू और कश्मीर भाग) तक आक्रमण किया ,लेकिन उसने एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा की । इतने में चीन ने लगभग 14.671 वर्ग मील प्रदेश को वश में ले लिया था । इससे पंचशील सूत्र के सूत्रधार नेहरू को असंतुष्टि हुई। अभी भी दोनों देशों के बीच की सीमा पर वही स्थिति (Line of Actual Control-LAC) जारी है।

चीनियों की पाकिस्तान समर्थक नीति तथा पाकिस्तान-चीन के बीच गुजरनेवाला राष्ट्रीय मार्ग भारत के लिए चिंता का कारण बन गया है ।

भारत पर चीन का आक्रमण :

- भारत और चीन के बीच 3.440 की. मी. लंबा भारत अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पहचान कर्ता ब्रिटिश इंडिया के विदेशमंत्री सर मैक मोहन है । इसलिए इसे 'मैक मोहन सीमा' रेखा कहते हैं।
- चीन 1962 में पूर्व लदाख (अक्सैचीन) पर आक्रमण कर भारत के 43.000 वर्ग कि.मी. भू-प्रदेश को अपने अधीन रखा है। चीन की स्वाधीनता आज भी चल रहा है।
- इसके अलावा चीन भारत के राज्य अरुणाचल प्रदेश के 90.000 क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. भूप्रदेश को अपना बनाने का प्रयत्न कर रहा है ।

भारत और नेपाल :

नेपाल भारत के उत्तरी हिमालय श्रेणी से जुड़ा हुआ प्रदेश है। पहले से ही भारत और नेपाल का संबंध बहुत निकट था। दोनों देशों की सीमाएँ खुली हुई हैं, जनसंचार तथा वस्तुओं का यातायात बाधा रहित चल रहा है।

नेपाल भू-आवृत्त प्रदेश है। अनिवार्य रूप से भारत के माध्यम से ही इसका विदेशी संपर्क संभव है। इसके साथ जुड़ा हुआ एक और देश है चीन, लेकिन वह सागरोत्तर प्रदेश होने के कारण संपर्क आसान नहीं है। इसी कारण भारत नेपाल के साथ उत्तम संबंध चाहता है। भारत नेपाल के संबंध 1950 के मैत्री और शांति समझौते पर आधारित है। परिवहन, सिंचाई, बिजली, वन, शिक्षा आदि के क्षेत्र में भारत, नेपाल की अधिक सहायता कर रहा है।

भारत ने 1971 में 'इंडो - नेपाल समझौते' पर हस्ताक्षर किया है। उसके आधार पर नेपाल के माध्यम से वस्तु, सामग्रियों को निःशुल्क भारत लाया जा सकता है। आजकल मावोवादी नेपाल में प्रबल हो रहे हैं। ये दोनों देशों के संबंधों में बाधक हैं । राजपरिवार के सदस्यों की हत्या कर दी गयी । आंतरिक उथलपुथल की सृष्टि हुई है। आजकल नेपाल में राज प्रभुत्व का अंत होकर लोकतंत्र व्यवस्था लागू है ।

भारत और भूटान :

1949 के भारत और भूटान के समझौते के अनुसार भारत ने भूटान के आंतरिक मामले में दखल न देने का आश्वासन दिया। भूटान ने अपने बाह्य व्यवहारों में भारत का मार्गदर्शन लेने पर सहमति दी।

भारत के प्रयासों के परिणाम स्वरूप भूटान ने विश्वसंस्था की सदस्यता प्राप्त की। 1961 से 1981 तक भारत भूटान के आर्थिक विकास के लिए सहायता देने के साथ कई योजनाओं में पूर्ण आर्थिक सहयोग दिया। भूटान 'सार्क' का सदस्य राष्ट्र है।

भारत और श्रीलंका :

श्रीलंका भारत के दक्षिण दिशा में स्थित एक द्वीप राष्ट्र है। रामायण काल से ही भारत और श्रीलंका के बीच अच्छे संबंध थे। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने प्रतिनिधियों को यहाँ भेजा था। इससे भारत और श्रीलंका के बीच की सांस्कृतिक संबंध और मजबूत बन गया।

श्रीलंका में दो प्रमुख जनजाति समूह हैं। एक है सिंहलीय और दूसरा तमिल। सिंहलीय लोग श्रीलंका के मूल निवासी हैं। तमिल लोग तमिलनाडू से आये निर्वासित हैं। इनमें लगातार संघर्ष होते रहते हैं। श्रीलंका के तमिल समुदाय अपने अधिकार तथा अलग राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष करते रहे हैं। दो दशक से भी अधिक समय से यह संघर्ष चलता आ रहा है। इसके बावजूद भी भारत श्रीलंका के साथ अच्छा संबंध रखना चाहता है। मतभेदों को मिटाने के लिए शांतिपूर्ण समाधान खोज रहा है।

पाक खाड़ी के मध्य स्थित 'कचतीव द्वीप' पर अधिकार के लिए 1974-76 में भारत श्रीलंका के साथ समझौता हो गया है। समुद्री व्यापार के बारे में भी समझौता हो गया। 1987 में श्रीलंका सरकार ने देश के तमिल समुदाय के राजनीतिक अलगाव के लिए कर रहे संघर्ष को दबाने के लिए भारत की सहायता माँगी। उससे संबंधित 1988 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीवगंधी और

श्रीलंका के अध्यक्ष जयवर्धने के बीच, समझौते के अनुसार भारत शांति दल को (Indian peace Keeping Force-IPKF) श्रीलंका भेजा गया ।

श्रीलंका के तमिल समुदाय ने भारत के इस क्रम का विरोध किया। इसी भूमिका में राजीवगांधी की श्रीलंका भेंट के समय हत्या का एक विफल प्रयत्न हुआ। इसके बावजूद भारत के रवय्ये से असहमत श्रीलंका तमिल उग्रवादी विमोचन संगठन ने (Liberation of Tamil Tiger Eelam - LTTE) राजीव गांधी को 21 मई 1992 में हत्या की । इसके बावजूद भारत श्रीलंका के साथ मित्रता की भावना आगे बढ़ाता आ रहा है। लेकिन एल.टी.टी.ई. के सर्वोच्च नायक वेलूपिल्ले प्रभाकरन की हत्या के बाद श्रीलंका तमिल उग्रवाद संघर्ष समाप्त हो गया। श्रीलंका सरकार ने अपने संविधान के ढाँचे में समस्या का समाधान खोजने का अटूट निर्णय लिया है।

भारत और बांग्ला देश :

बांग्लादेश पाकिस्तान का ही हिस्सा था। उसे पूर्व पाकिस्तान कहा जाता था । पूर्व पाकिस्तान 1960 में ही एक अलग राष्ट्र के रूप में उभरने के लिए संघर्ष रत रहा । शेख मुजीबुर रहमान के नेतृत्व में उनके संगठन आवामी लीग विमोचन आंदोलन किया। पूर्व पाकिस्तान में मानव अधिकारों के उल्लंघन की भूमिका पर भारत की फौज का प्रवेश अनिवार्य हो गया । 1971 के निर्णायक युद्ध पश्चिम पाकिस्तान की पराजय के साथ पूर्व में पाकिस्तान बांग्लादेश नाम से नए राष्ट्र के रूप में उभरा ।

1972 में भारत और बांग्लादेश के प्रधानियों ने ढाका सम्मेलन में मैत्री, सहयोग और शांति के लिए 25 वर्षों के समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसके परिणाम स्वरूप दोनों राष्ट्र के बीच की समस्याओं को समाधान मिला ।

चित्तगांग पर्वत प्रदेशों से भारत की ओर आ रहे चक्मा शरणार्थियों की समस्या, नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी आदि समस्याओं का समाधान अभी भी शेष है। इसके अलावा बांग्ला देश से भारत आए लाखों अवैध निर्वासियों की समस्या गंभीर हुई है। पूर्वोत्तर भारत के अनेक विद्रोही समूहों को बांग्ला आश्रय देना दुविधा का विषय बना हुआ है। फिर भी बांग्लादेश भारत का मित्र राष्ट्र बना हुआ है।

गतिविधि : बांग्लादेश के स्वतंत्र आंदोलन में भारत की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

सार्क (SAARC) :

दक्षिण एशियाई राष्ट्रों ने अपने आपसी सहयोग को प्रोत्साहित करने के पूरक प्रयास में एक प्रादेशिक संगठन की स्थापना करने का निर्णय लिया। इसके फलस्वरूप 1985 में दक्षिण एशियाई प्रादेशिक सहयोगी संस्था (South Asian Association for Regional co-operation : SAARC) 'सार्क' अस्तित्व में आया। मूलतः सार्क में सात राष्ट्र शामिल थे। फिर अफगानिस्तान को (2007 14 वे शृंगसभा, नई दिल्ली) सार्क के सदस्य राष्ट्र के रूप में जोड़ा गया। भारत, बांग्लादेश, भूटान, माल्दीव्स, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और अफगानिस्तान सार्क के आठ सदस्य राष्ट्र हैं।

शैक्षिक विषय से संबंधित सूचनाएँ बाँटने के लिए भारत ने एक अलग उपग्रह भेज कर इसका उपयोग सभी सार्क राष्ट्रों के लिए देन के रूप में दिया है।

सार्क के उद्देश्य :

- दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के बीच आपसी विश्वासों को बढ़ावा देना।
- दक्षिण एशिया लोगों के कल्याण के लिए प्रोत्साहन देना।

➤ आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में आपसी सहयोग और सहोद्यम देना ।

➤ प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ संबंध दृढ़ करना।

सार्क सदस्य राष्ट्रों ने भारत से एकमुख आशा, भारत को संदेह और भय की दृष्टि से देखना इसके विकास में बाधक हो गया है।

//// //// अभ्यास //// ////

I. उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए ।

1. कार्गिल युद्ध घटित वर्ष _____ ।
2. तिब्बत के धर्म गुरु _____ ।
3. _____ नेतृत्व में अवामी लीग ने मुक्ति आंदोलन चलाया ।
4. SAARC _____ में अस्तित्व में आया ।
5. चित्तगांग पर्वत प्रदेशों से भारत की ओर आनेवाले शरणार्थी _____ हैं ।

II. दो या तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :

6. भारत के पड़ोसी देश कौन-से हैं?
7. भारत और पाकिस्तान के बीच की सद्भावना के बाधक तत्वों की सूची तैयार कीजिए।
8. चीन और भारत के बीच संघर्ष के मुख्य कारण क्या हैं?
9. बांग्लादेश की स्वतंत्रता प्राप्ति में भारत द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण कीजिए ।

10. 1962 के चीन-भारत युद्ध का परिणाम क्या है?

11. सार्क स्थापना के उद्देश्य क्या-क्या हैं?



गतिविधियाँ :

- ♦ भारत के पड़ोसी देशों के झंडों की सचित्र जानकारी संग्रह कीजिए
- ♦ विश्व मानचित्र में भारत के पड़ोसी देशों की पहचान कीजिए ।





पाठ परिचय :

द्वितीय विश्वयुद्ध इतिहास का सबसे भयानक युद्ध था। यूरोप के देशों में लगातार छः वर्षों के दौरान (1939-1945) युद्ध हुआ। लगभग चार करोड़ जन-धन की अपार क्षति हुई।

भयंकर हिंसा से भयभीत मानव जाति स्थाई शांति के लिए तरस गई। इस दौरान 51 देशों के प्रतिनिधि अमेरिका के सेंट फ्रांसिस्को शहर में समावेश हुए। सन् 1945 अक्टूबर 24 के दिन स्थाई शांति के लिए विश्वसंस्था की स्थापना की गई।

इस पाठ में विश्व संस्था की स्थापना की पृष्ठभूमि, उसके मूल उद्देश्य, सहयोगी संस्थाएँ, विशेष सेवा-संगठन और उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया गया है। विश्व संस्था में भारत की भूमिका को भी संबोधित किया गया है।

सामर्थ्य:

1. विश्व संस्था के उद्देश्य और आदर्शों को समझना।
2. विश्व संस्था के सहयोगी संस्थाओं की प्रक्रियाओं को समझना।
3. दुनिया भर के देशों के बीच शांति और सद्भावन हासिल करने के लिए विश्व संस्था की सराहना करना।
4. वैश्विक शांति की स्थापना के लिए संयुक्त राष्ट्र में भारत की सक्रिय भूमिका की सराहना करना।

यहाँ दिए गए प्रतीक चिह्न पर ध्यान दें। प्रतीक चिह्न के केंद्र में महाद्वीपों को दिखाया गया है। प्रतीक चिह्न के दोनों ओर जैतून की शाखाएँ हैं। यह क्या दर्शाती है ?

प्रतीक चिह्न पर दिखाए गए महाद्वीप :

प्रतीक चिह्न पर दिखाए गए महाद्वीप दुनिया के सभी देशों के और जैतून की शाखाएँ दोस्ती और शांति का संकेत हैं। यह विश्व संस्था के मूल आदर्शों को दर्शाने वाला प्रतीक चिह्न है।



विश्व संस्था का प्रतीक चिह्न

विश्व संस्था का उदय:

विश्व संस्था क्या है? क्या आप जानते हैं कि इसे क्यों स्थापित किया गया था?

लगभग 70 पहले यूरोप के देशों के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया था। कुछ ही समय में अन्य महाद्वीपों के देश भी शामिल हो गए। यही द्वितीय विश्वयुद्ध कहलाया। युद्ध के परिणामस्वरूप अनगिनत जीव और संपत्ति नष्ट हो गए। युद्ध की आग से तपी मानव जाति स्थायी शांति और चैन के लिए तरस गई थी। ऐसे में अमेरिका के राष्ट्रपति रूसवेल्ट, ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल और रूसी तानाशाह स्टॉलिन के साथ मिलकर दुनिया में स्थायी शांति स्थापित करने के लिए 51 देशों के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाई गई। संयुक्त राष्ट्र या विश्व संस्था(U.N.O) की स्थापना 24 अक्टूबर 1945 को इसे लागू करने के इरादे से की गई थी।

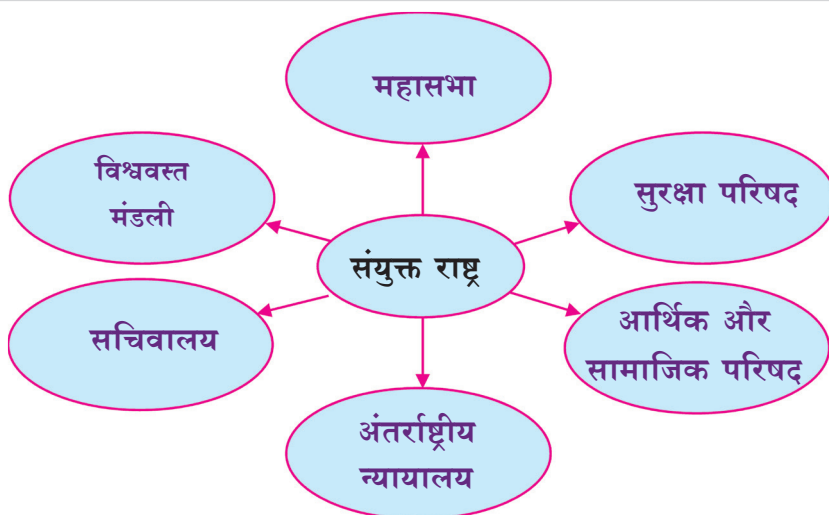
अतीत में जो U.N.O हुआ करता था, उसे संघ के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह एक संगठन नहीं है। यह विश्व राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है। U.N का मतलब है यूनाइटेड नेशन्स।

विश्व संस्था के मूल उद्देश्य:

- युद्ध रोककर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति और सुरक्षा का पालन करना।
- राष्ट्रों के बीच स्नेह भाव बढ़ाना।
- मानव के आधारभूत अधिकारों के बारे में विश्वास बढ़ाना।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं के समाधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग देना।
- मानवीय अधिकारों का आदर करना।
- उपर्युक्त लक्ष्यों की साधना के समन्वय केंद्रों के रूप में कार्य करना।

विश्व संस्था के सहयोगी संस्थाएँ:

विश्व संस्था के उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए किन सहयोगी संस्थाओं की रचना की गई है ?



1. महासभा:

साल में एक बार सितंबर में समावेश होता है। सदस्य राष्ट्र महासभा में भाग लेते हैं। प्रत्येक सदस्य राष्ट्र को एक वोट डालने का अधिकार है भले ही उसके 5 प्रतिनिधि हो। महासभा विश्व संस्था संसद के रूप में कार्य करती है। वर्तमान में (2022) विश्व के 193 देश विश्व संस्था के सदस्य हैं। सूडान विश्व संस्था का 193 वाँ सदस्य राष्ट्र है।

2. सुरक्षा परिषद:

सुरक्षा परिषद, विश्व संस्था की कार्यकारिणी के समान है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य महासभा द्वारा लिए गए प्रस्तावों और निर्णयों पर सलाह देना और वैश्विक शांति और सुरक्षा को बनाए रखना है।

सुरक्षा परिषद में 15 सदस्य देश होते हैं। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन स्थाई सदस्य देश है। शेष 10 सदस्य राष्ट्रों को महासभा द्वारा दो सालों के कार्यकाल के लिए अस्थायी सदस्यों के रूप में चुना जाता है।

सुरक्षा परिषद द्वारा किसी भी प्रस्ताव को पारित करने के लिए 9 सदस्य देशों की सहमति आवश्यक है। यदि किसी भी स्थाई सदस्य राष्ट्रों में से एक भी प्रस्ताव का विरोध करते हैं तो उन प्रस्तावों को पारित नहीं किया जाता। स्थाई सदस्य राष्ट्र का विरोध करने की शक्ति 'वीटो' कहलाती है।

गतिविधि : महासभा का निर्णय अंतिम है? या सुरक्षा परिषद का वीटो अधिकार अंतिम है? चर्चा कीजिए।

3. **आर्थिक एवं सामाजिक परिषद:** ऐसी कई समस्याएँ हैं जिनका सामना दुनिया के सभी देश आमतौर पर करते हैं। यह वर्ण, धर्म, और सीमाओं के सामने होने वाले मानव अधिकारों के उल्लंघन का हल करने की जिम्मेदार है।
आर्थिक एवं सामाजिक परिषद असुरक्षा, गरीबी, भूख, शरणार्थी पुनर्वास, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, बच्चों की देखभाल, मादक द्रव्यों के सेवन और अन्य समस्याओं जैसे मामलों में पारस्परिक समर्थन और सहायता प्रदान करता है।
4. **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय:** अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय नीदरलैंड के हैग नगर में है। न्यायालय में 15 न्यायाधीश होते हैं। वे सुरक्षा परिषद और महासभा द्वारा चुने जाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय का कार्य सदस्य राष्ट्रों के बीच विवादों को हल करना है।
5. **सचिवालय:** विश्व संस्था का स्थायी मुख्यालय न्यूयॉर्क के लेक सक्सेस नगर में है। महासचिव इसके प्रशासन का प्रभारी कार्यकारी भी होता है। यदि कोई भी वैश्विक शांति को भंग करता है तो विश्व संस्था के महासचिव के ध्यान में तुरंत लाने पर महासचिव समाधान खोजने के लिए जिम्मेदार है।



विश्व संस्था मुख्यालय

विश्व संस्था के वर्तमान महासचिव अंटनियो गुटेरस (पुर्तगाल) महासभा में चयनित उम्मीदवार को सुरक्षा परिषद के अनुमोदन के अधीन विश्व संस्था में नियुक्त किया जाता है।

6. विश्वस्त परिषद:

विश्व संस्था की स्थापना के समय 11 क्षेत्रों में कोई स्वायत्तता नहीं थी इनके हित में विश्वा संस्था के सहयोगी के रूप में 5 सदस्यों का राष्ट्र बनाया गया था। यही विश्वस्त परिषद है । 1994 मे सभी क्षेत्र स्वतंत्र हो गए।



अंटनियो गुटेरस (पुर्तगाल)

विश्व संस्था का ध्वज और प्रशासनिक भाषा:



विश्वसंस्था का ध्वज

विश्व संस्था का अपना ध्वज है, जो हल्के नीले रंग का है। बीच में विश्व संस्था का प्रतीक चिह्न है। हर साल 24 अक्टूबर को दुनियाभर विश्व संस्था दिवस मनाया जाता है। अंग्रेजी, रूसी, स्पेनिश, फ्रेंच, रवि विश्व संस्था की प्रमुख भाषाएँ हैं। आमतौर पर अंग्रेजी का इस्तेमाल किया जाता है।

विशेष सेवा संस्थाएँ:

विश्व संस्था के आश्रय में कुछ विशेष सेवा संस्थाएँ जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए काम कर रही हैं। कुछ प्रमुख सेवा संस्थाएँ हैं -

- संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (NATIONS EDUCATIONL, SCIENTIFIC AND CULTURAL ORGANISATION - UNESCO)
-इसका मुख्यालय फ्रांस के पेरिस में है।
- खाद्य और कृषि संगठन (FOOD AND AGRICULTURAL ORGANISATION -FAO)
-इसका मुख्यालय इटली के रोम नगर में है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WORLD HEALTH ORGANISATON-WHO)
-इसका मुख्यालय स्विजरलैंड के जिनेवा में है।
- अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन निधि (UNITED NATIONS INTERNATIONAL CHILDREN'S EMERGENCY FUND-UNICEF)
-इसका मुख्यालय अमेरिका के न्यूयॉर्क में है।

विश्व संस्था की उपलब्धि और सीमाएँ:

- **वित्तीय योगदान:** विश्व संस्था ने स्वास्थ्य, परिवहन, संचार, खाद्य विज्ञान, और शिक्षा के क्षेत्र में भारी वित्तीय सहायता प्रदान की है।
- **सामाजिक योगदान:** विश्व संस्था ने करोड़ों शरणार्थियों को सहायता प्रदान की है। यह छोटे बच्चे, माताओं और वंचितों की विशेष जरूरतों को पूरा करने के लिए कार्य करता है।
- **मानव अधिकारों की घोषणा:** मानव अधिकारों की घोषणा विशेष संस्था द्वारा एक विशेष उपलब्धि है (दिसंबर 10 1948)

- **नए राष्ट्रों के उदय में सहायता:** विश्व संस्था ने यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की है कि विदेशी शासन तहत कई उपनिवेश स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरे हैं।
- **शांति स्थापना:** विश्व संस्था ने दो विश्व युद्धों से पीड़ित विश्व को शांति का वादा कर के एक और विश्वयुद्ध रोक दिया है। 1945 के बाद परमाणु हथियारों का इस्तेमाल ना करने का श्रेय विश्व संस्था को जाता है हालांकि दुनिया में कई लड़ाइयाँ हुई है लेकिन विश्व संस्था ने उन्हें नियंत्रित करने के लिए हर संभव उपाय किए हैं।

सीमाएँ:

- सोवियत रूस टूटने के बाद शीत युद्ध समाप्त हो गया। इस बदले परिदृश्य में अमेरिका स्वयं को दुनिया के सभी देशों के नेता के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। यह बहु आयामी सांस्कृतिक जीवन के लिए घातक है।
- विश्व संस्था के कई प्रस्तावों को लागू नहीं किया जा सका। ऐसा संकट तब उत्पन्न होता है जब सदस्य राष्ट्र अपनी सेना शक्ति देने से इनकार कर देते हैं तब संघर्षों से जूझने की बारी आती है क्योंकि विश्व संस्था का अपना सेना नहीं है।

भारत और विश्व संस्था:

भारत उन देशों में एक था जिसने 1945 में विश्व संस्था के संविधान पर हस्ताक्षर किया था। स्वतंत्रता के बाद भारत ने वैश्विक मामलों में सक्रिय भूमिका निभाई है।

- भारत शुरू से ही रंगभेद का विरोध करता रहा है।
- अपने उपनिवेशवाद को मिटाने के लिए एक ठोस प्रयास किया है।

- भारत उन देशों में पहला है जिसने इन बात पर जोर दिया कि परमाणु परीक्षण रोक दिया जाना चाहिए। इसके अलावा भारत ने लगातार हथियार नियंत्रण और विश्वशांति की वकालत की है।
- भारत ने देशों के बीच लड़ाई के दौरान शांति की स्थापना के लिए अपने सैनिकों को विश्व संस्था में भेजा है।

- श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित विश्व संस्था महासभा की पहली महिला अध्यक्ष हैं।
- बेनेगल नरसिंह राव ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में और डॉक्टर नागेंद्र सिंह ने मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया है।
- जनरल के एस और अन्य भारतीय सेना कमांडरों ने विश्व संस्था शांति वाहिनी में काफी सेवा की है।

स्थायी सदस्यता अब स्वार्थ के ध्यान में रखते हुए सुरक्षा परिषद के 5 सदस्यों तक सीमित है। यह विडंबना ही है कि भारत जैसे विकासशील देशों के पास स्थायी सदस्यता नहीं है।

////// अभ्यास //////////////////////////////////

I उचित उत्तरों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. विश्व संस्था का मुख्यालय _____ शहर में है।
2. वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखना _____ का कार्य है।
3. सुरक्षा परिषद की कुल सदस्य संख्या _____ है।
4. नीदरलैंड का अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय _____ शहर में है।

II एक शब्द या वाक्य में उत्तर दें :

5. विश्व संस्था की शुरुआत कब हुई ?
6. विश्व संस्था की स्थापना के लिए कौन जिम्मेदार था ?

7. 'विश्व संसद' किसे कहा जाता है ?
8. सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य राष्ट्र कौन - कौन से हैं ?
9. दो भारतीय सज्जनों के नाम बताइए जिन्होंने विश्व संस्था में सेवा की है।
10. विश्व संस्था के मानव अधिकारों की घोषणा का एक कारण बताइए।

III दो तीन वाक्य में उत्तर दीजिए :

11. विश्व संस्था के मूल उद्देश्य क्या है ?
12. विश्व संस्था सुरक्षा परिषद के कार्यों का वर्णन कीजिए।
13. विश्व संस्था की चार उपलब्धियों की सूची बनाइए।
14. विश्व संस्था के विशेष सेवा संगठनों का नाम बताइए।
15. वीटो क्या है ?
16. विश्व संस्था की दो सीमाओं के बारे में बताइए।



गतिविधि:

- ♦ विवरण के साथ विश्व संस्था के शेष सेवा संगठनों के प्रतीक चिह्न एकत्रित कीजिए।
- ♦ विश्व संस्था के विभिन्न संगठनों में सेवा करने वाले भारतीयों का छवि चित्र एकत्रित कीजिए।



भूगोल शास्त्र

अध्याय

26

ऑस्ट्रेलिया



पाठ परिचय :

इस पाठ में ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप की स्थिति और परिवेश, उसके प्राकृतिक विभाग और नदियों का विवरण जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, पशु-पालन, खनिज तथा उद्योग, जनसंख्या - विकास, वितरण तथा घनत्व के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

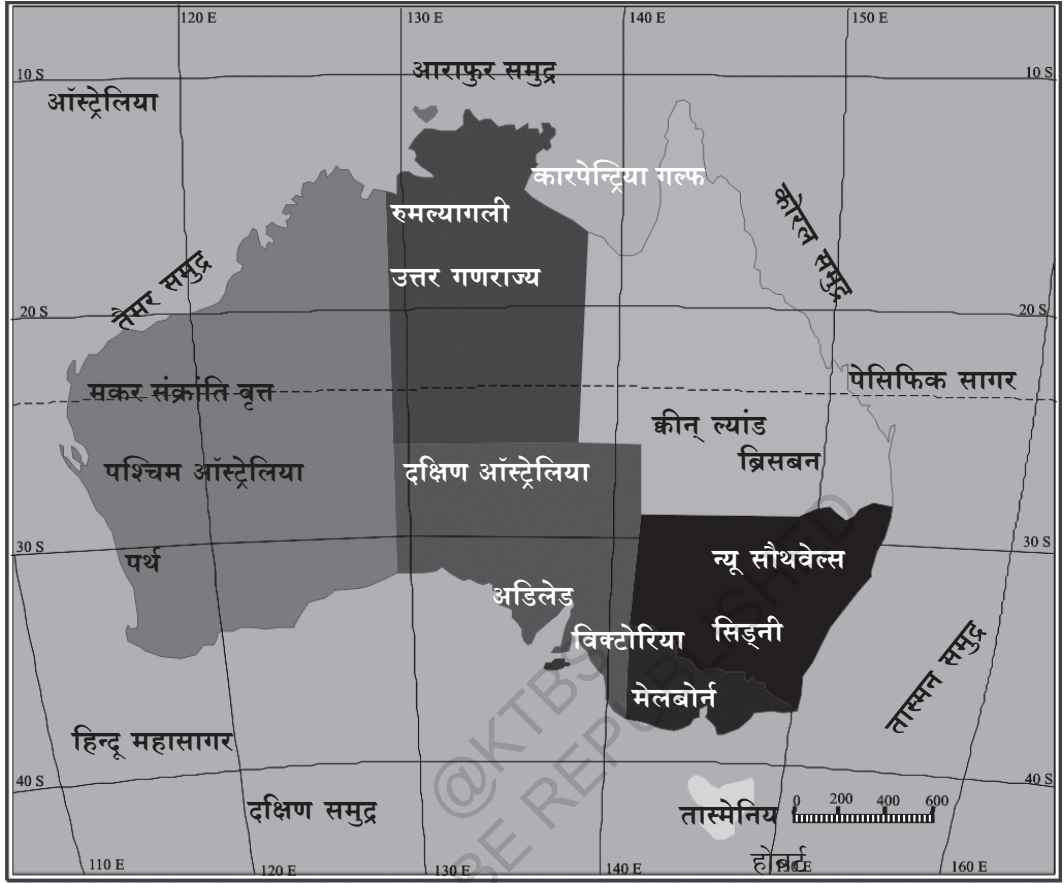
सामर्थ्य :

1. विश्व में ऑस्ट्रेलिया की स्थिति, परिवेश के बारे में जानेंगे।
2. ऑस्ट्रेलिया का सतही लक्षण, नदियों का जाल, जलवायु तथा वनस्पतियों के बारे में जानेंगे।
3. इस भू-भाग की कृषि और पशु-पालन के बारे में जानेंगे।
4. विविध प्रकार के खनिजों तथा उद्योगों का परिचय प्राप्त करेंगे।
5. जनसंख्या - आकार, वृद्धि, वितरण तथा घनत्व के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

स्थिति विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश

स्थिति : ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप पूर्णतया दक्षिण और पूर्वी गोलार्ध में है। यह $10^{\circ} 45'$ दक्षिण से $43^{\circ} 39'$ दक्षिणी अक्षांश तथा $113^{\circ} 9'$ पूर्व से $153^{\circ} 39'$ पूर्व देशांतर तक विस्तृत है। मकर संक्रांति रेखा लगभग इस महाद्वीप के मध्यभाग से होकर गुजरती है।

विस्तार : विस्तार तथा जनसंख्या दोनों की दृष्टि से ऑस्ट्रेलिया विश्व का छोटा भू-भाग है। तस्मानिया द्वीप सहित ऑस्ट्रेलिया 76.82 लाख कि.मी. क्षेत्रफल में विस्तृत है। संयुक्त राज्य अमेरिका से यह महाद्वीप थोड़ा छोटा है और भारत से दुगुना बड़ा है। यह विश्व का सातवाँ महाद्वीप है जो दक्षिणोत्तर में 3,940 कि.मी. लम्बा और पूर्व-पश्चिमी भाग में 4,350 कि.मी. चौड़ा है। 19.310 कि.मी. तटीय प्रदेश है।



ऑस्ट्रेलिया - राजनैतिक

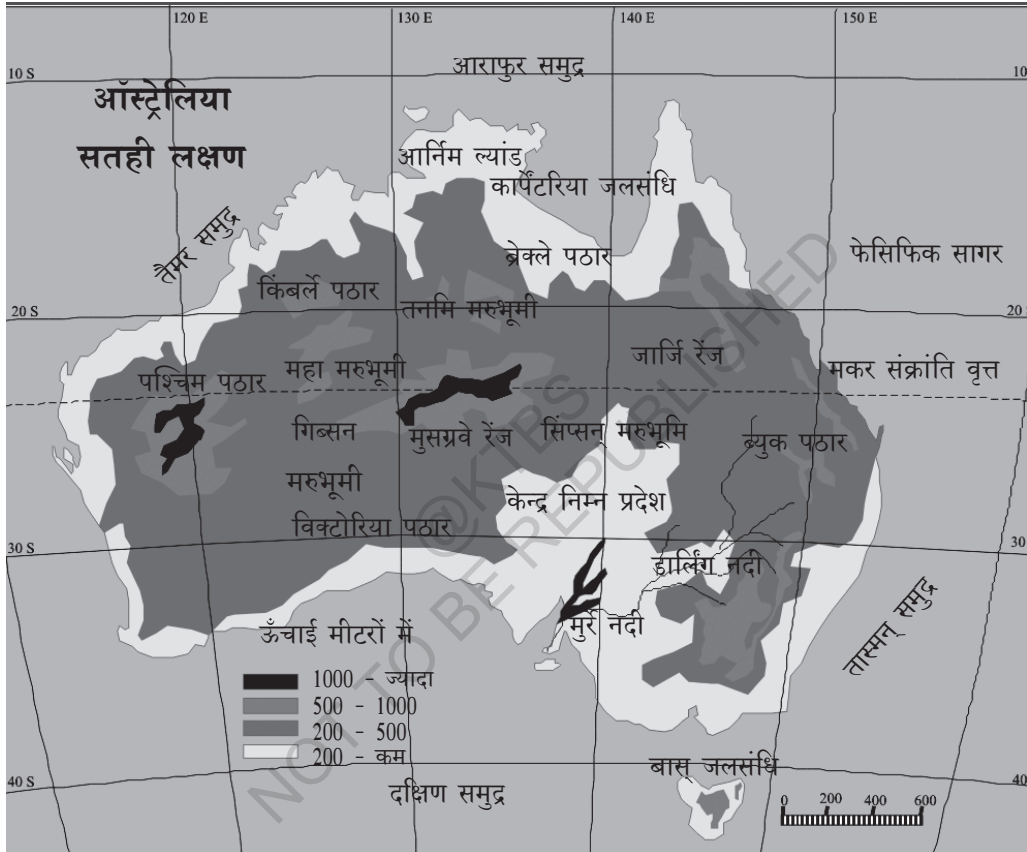
ऑस्ट्रेलिया नामक शब्द 'दक्षिण' शब्द के अर्थ में आस्ट्राल (लैटिन शब्द) शब्द से लिया गया है ।

मध्य तथा दक्षिण पेसिफिक सागर में 10,000 द्वीप समूह हैं । जिन्हें 'ओसीनिया' कहा जाता है । इनमें ऑस्ट्रेलिया प्रमुख महाद्वीप है ।

भौगोलिक परिवेश : ऑस्ट्रेलिया हिन्द महासागर तथा पेसिफिक (प्रशांत) महासागर के मध्य स्थित द्वीप है । इस महाद्वीप के उत्तर पश्चिम की ओर तैमूर आराफुर समुद्र है, उत्तर पूर्व में टोरेस जल डमरुमध्य तथा दक्षिण - पूर्व में तास्मान समुद्र दक्षिण में महान ऑस्ट्रेलियन बाइट है ।

प्राकृतिक भू-भाग और नदियों का जाल

प्राकृतिक भू-भाग : ऑस्ट्रेलिया के कुल विस्तार का लगभग 94% भाग समुद्र तल से 600 मीटर से भी निम्न भाग में समतल रूप में है। इससे इसे 'अत्यंत समतल महाद्वीप' कहा जाता है। इस भू-भाग का अधिकतम भाग मरुस्थल होने के कारण इसे 'मरुस्थलीय महाद्वीप' कहते हैं।



ऑस्ट्रेलिया - प्राकृतिक

ऑस्ट्रेलिया मूलतः गोंडवाना भू-भाग का एक हिस्सा है जो अत्यंत प्राचीन है। इसे भू स्वरूप के आधार पर तीन प्राकृतिक विभागों में बांटा गया है -

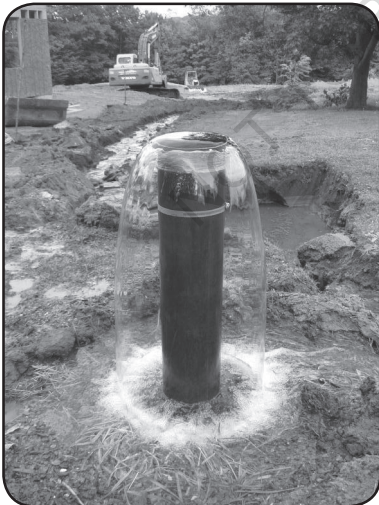
- 1 पूर्वी उन्नत प्रदेश
- 2 मध्य तराई प्रदेश
- 3 पश्चिमी पठार

17 वीं शताब्दी में यूरोपीय व्यक्ति जेम्स कुक द्वारा अन्वेषित 'ऑस्ट्रेलिया' को नया महाद्वीप माना जाता है।

1. **पूर्वी उन्नत प्रदेश :** यह महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी भाग में स्थित है, जो उत्तर के यार्कशिखर से दक्षिण में तास्मिया बास जलडमरूमध्य तक विस्तृत है। लगभग पूर्वी समुद्र तट तक विस्तृत यह पर्वत श्रेणी पूर्वी भाग में निचले तथा पश्चिमी भाग में ढलाऊ हैं। पहले पूर्वी समुद्र की ओर प्रवेश बड़ा दुर्गम था, इसलिए इसे “ग्रेट डिवाइडिंग श्रेणी” कहा जाता था। यह श्रेणी न्यूसाउथ वेल्स में काफी ऊँची होकर गहरे ढलान से पूर्ण है। इन्हें “ऑस्ट्रेलिया का आल्प्स” तथा ‘न्यू इंग्लैण्ड श्रेणी’ कहा जाता है। ऊँचे शिखर शीतकाल में हिमाच्छादित हो जाते हैं। यह भाग कोसियुक्सो (2230 मीटर) महाद्वीप का अत्यंत उच्च शिखर है।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के बाहर दक्षिणोत्तर में “ग्रेट बैरियर रीफ” नामक मूँगे की शैलभित्ति (2000 की.मी) फैली हुई है।

2. **मध्य तराई प्रदेश :** उत्तर में कार्पेटेरिया की खाड़ी से दक्षिण के मर्रे के मैदान तक यह तराई प्रदेश विस्तृत है। पूर्वी उन्नत भाग से पश्चिम की ओर आंतरिक जल व्यवस्था है। इसके मध्य भाग में स्थित आयर झील की ओर नदियाँ बहती हैं। विश्व का प्रसिद्ध ‘आर्टीसियन पानी के कुएँ’ यहाँ स्थित है।



आर्टीसियन पानी के कुएँ

इस निम्न मैदानी भाग को तीन भागों में विभक्त किया गया है :

1. मर्रे - डार्लिंग नदी का मैदान ।
2. आयर झील का मैदान ।
3. कार्पेटरिया का मैदान ।



मर्रे नदी

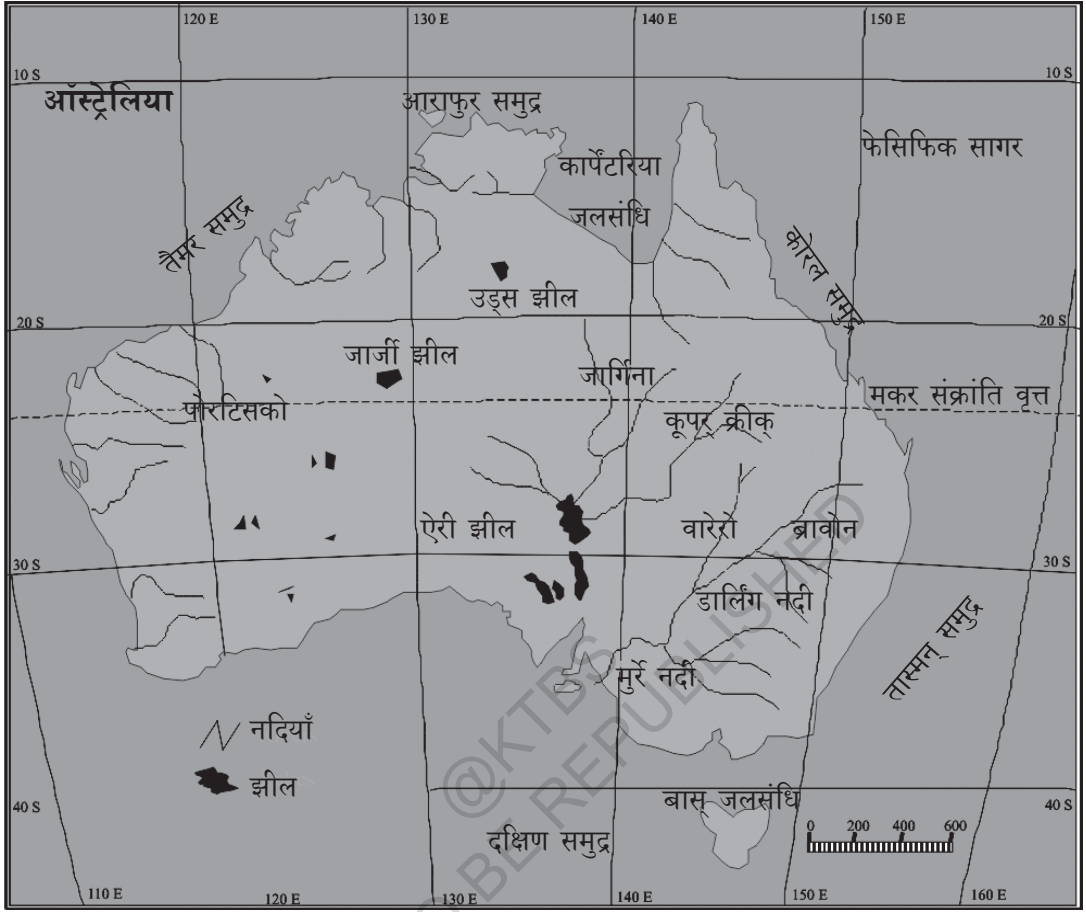


डार्लिंग नदी

मर्रे और डार्लिंग नदियों का मैदान, उत्तर में स्थित आयर झील से अलग होता है। इन नदियों से जल आपूर्ति होने के कारण यह ऑस्ट्रेलिया का समृद्ध कृषि भाग है। इससे उत्तर की ओर स्थित आयर झील का मैदान विशाल थाल के आकार में फैला है। यहाँ कई नमकीन झीलें भी हैं। इसका कॉफी - भाग रेगिस्तानी प्रदेश होने के कारण अत्यंत कम जनसंख्या है। कार्पेटरिया का मैदान समतल है, यहाँ फ्लिंडर तथा मिचेल नदियाँ बहती हैं। इसे आयर झील के मैदान से बरक्ले पठार अलग करता है।

3. पश्चिमी पठार : यह कार्पेटरिया की खाड़ी से ऑनस्लो पर्थ तथा आल्बेनिया तक विस्तृत भाग है। यह ऑस्ट्रेलिया के $\frac{2}{3}$ भाग के उच्च तथा निम्न पठारी भाग हैं। 'ग्रेट बालू का टीला', गिब्वन (सिंपसन) तथा विक्टोरिया मरुस्थल के साथ साथ यह भाग भारत के दक्कन के पठार के समान ही प्राचीन भी है। यहाँ कई बालू के टीले तथा छोटी - छोटी पहाड़ियाँ भी हैं। उनमें महाद्वीप केन्द्र भाग में स्थित मेकडोनल और मसग्रेव श्रेणियाँ ऊँची हैं।

4. नदियों का जल : अत्यंत गर्म और शुष्कता के कारण ऑस्ट्रेलिया का काफी भाग रेगिस्तानी है। इससे नदियों की व्यवस्था कम होने पर भी कुछ नदियाँ छोटी तो कुछ अकालिक हैं। समुद्र में मिलने वाली नदियों से अधिक झीलों में मिलनेवाली अन्तर्देशी नदियाँ ही अधिक हैं। कई नदियाँ पूर्व के उन्नत प्रदेश में उत्पन्न होकर पूर्व की ओर ही बहती हैं।

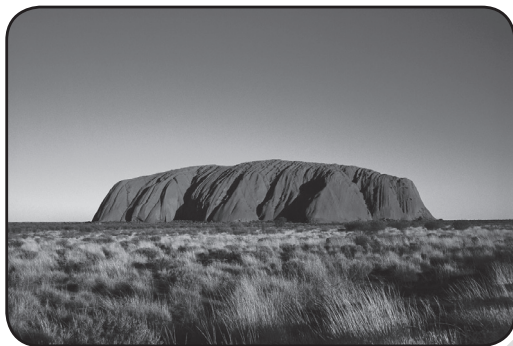


ऑस्ट्रेलिया की नदियाँ

मुर्रे ऑस्ट्रेलिया का अत्यंत प्रमुख नदी है। यह न्यू साउथवेल्स के दक्षिणी पूर्व की ओर स्थित कोसियुस्को शिखर के पास उत्पन्न होकर पूर्व और दक्षिणी पश्चिम की ओर बहती हुई (2,590) एनकाउन्टर की खाड़ी में जाकर मिलती है। डार्लिंग, लाचलन, मुरंबीच इसके उपनदियाँ हैं। वर्ष की कुछ ऋतुओं में मात्र इस नदियों में नौकायान संभव है। पूर्व की ओर बहनेवाली नदियाँ छोटी हैं तथा तेजी से बहती हैं। पूर्व की ओर बहनेवाली नदियाँ छोटी और तेजी से बहती हैं। वे हंटर, फिल्ट्रायज्य और बेलैडो, पूर्वी-उत्तरी भाग में मिचेल, गिल्बर्ट और फ्लिडसे नदियाँ पश्चिमोत्तर के ओर बहकर कार्पेटरिया खाड़ी को जा मिलती हैं। डाली, विक्टोरिया, पश्चिम फिट्टजेराय और अन्य उत्तर की ओर पश्चिमोत्तर की ओर बहकर टिमोर समुद्र को जा मिलती हैं।

कूपर क्रीक, डायमंटिन और मुकंभा नदियाँ ऐर सरोवर से मिलती है। मर्चिसन, एवन ब्ल्याकवुड, आदि नदियाँ हिंदू महासागर की ओर बहती है।

ऑस्ट्रेलिया में कुछ झीलें भी हैं। जो छोटी है और खारे पानी की झीलें हैं। उदाहरण के लिए ऐर, टारैन्स, गेर्डनर आदि। इनमें आयर झील अत्यन्त बड़ी और इस महाद्वीप के तराई भाग में है। इसके पश्चिम की ओर विश्व का सबसे बड़ा 'एकशिला' आयर (उलू) है।



आयर (उलू) शिलाभाग



ऐरी झील

जलवायु तथा प्राकृतिक वनस्पति

जलवायु : ऑस्ट्रेलिया के मध्य भाग से मकर रेखा होकर गुजराती है जिससे यह उष्ण तथा उप उष्ण जलवायु वाला प्रदेश है। इस महाद्वीप के काफी हिस्से में वर्षापूर्ण अत्यधिक गर्मी होती है। पश्चिमी तट पर शीत सागर की ठंडी धारा बहती है जिससे ऑस्ट्रेलिया का पश्चिमी भाग रेगिस्तानी तथा शुष्क जलवायु वाला है। उत्तरी भाग में मानसूनी तथा दक्षिणी तटीय प्रदेशों में भूमध्य सागरीय आदर्श जलवायु होती है।

शीत ऋतु : ऑस्ट्रेलिया के दक्षिणी गोलार्ध में स्थित होने के कारण यहाँ काल तथा ऋतुएँ उत्तरी गोलार्ध के विपरीत होती हैं। अर्थात् उत्तरी गोलार्ध में ग्रीष्मऋतु होने पर यहाँ शीत ऋतु होती है। उदा : जून से अगस्त की अवधि में यहाँ गर्मी कम होती है। वह उत्तर से दक्षिण की ओर कम होती जाती है। किंतु दबाव बढ़ता जाता है। हवाएँ अन्तर्देश से समुद्र की ओर बहती (चलती) हैं। ये अधिक वर्षा नहीं लाती। शुष्क तथा गर्म जलवायु होती है। तस्मानिया में अलग जलवायु होती है।

ग्रीष्म ऋतु : यह दिसंबर से फरवरी तक होती है । इस अवधि में गर्मी अधिक होती है । ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के पूर्वी भाग से पश्चिमी रेगिस्तानी भाग में तापमान अधिक होता है । दक्षिण पूर्व भाग तथा तस्मानिया द्वीपों में साधारण गर्मी होती है। देश के अन्दरूनी भागों में दबाव कम होता है । हवाएँ समुद्र की ओर से चलती हैं जिससे थोड़ी वर्षा होती है । इस महाद्वीप के दक्षिणी और दक्षिण पूर्वी भागों में वर्षा अधिक होती है ।

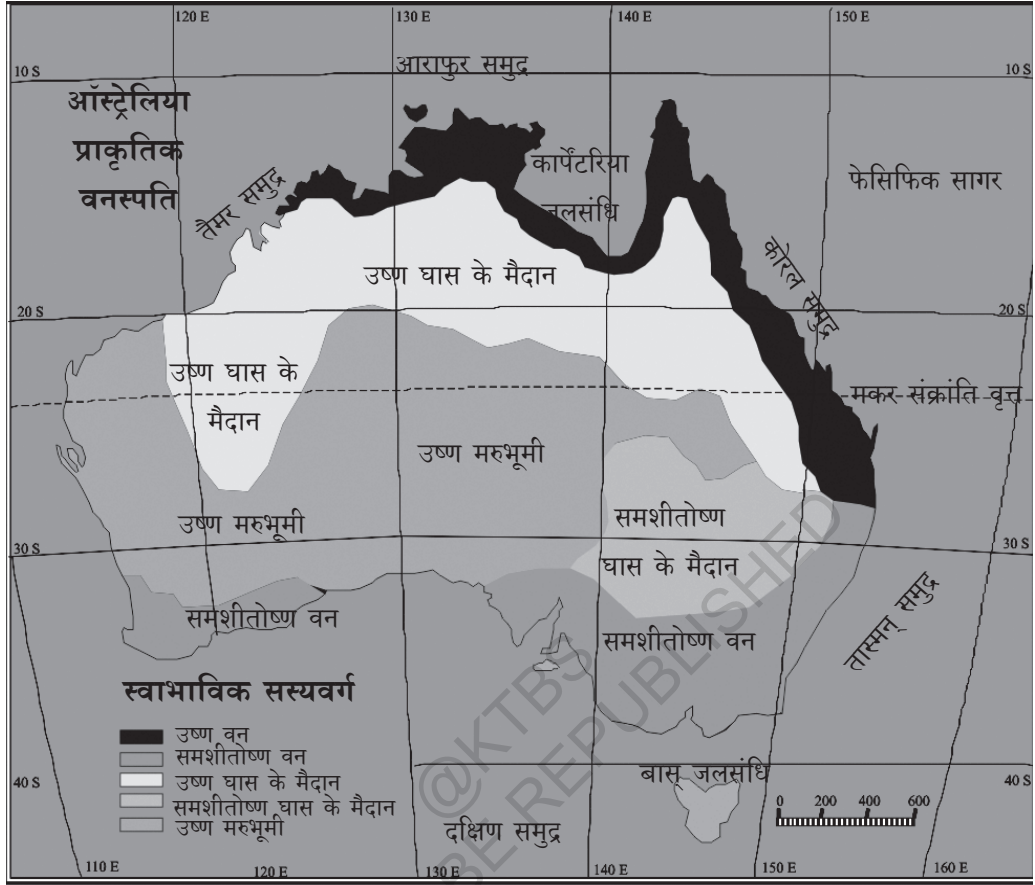
ऑस्ट्रेलिया में चक्रवात को 'विल्लि विल्लिस' कहते हैं। सामान्यतः वर्षा ऑस्ट्रेलिया में मानसून की तरह है। यह समय और स्थान में अविश्वसनीय पूर्व दक्षिण में उत्तर और पश्चिम दक्षिण तटीय प्रदेशों में वार्षिक वर्षा 75 से.मी. है। यह ऑस्ट्रेलिया के बहुत बड़ा आंतरिक रेगिस्थान में 25 से.मी. से कम है।

प्राकृतिक वनस्पति और जीव संपदा

प्राकृतिक वनस्पति : ऑस्ट्रेलिया में घने जंगलों की कमी प्रमुख लक्षण है । इस महाद्वीप का काफी हिस्सा घास का मैदान, छोटे - छोटे वनस्पति (पौधों) तथा खुले खुले कम पेड़ों से युक्त है । जो यहाँ की जलवायु को प्रतिबिंबित करता है । ऑस्ट्रेलिया के विविध प्राकृतिक वनस्पतियाँ इस प्रकार हैं -

1. उष्ण क्षेत्रों के वन : अधिक वर्षा वाले उत्तरी और उत्तर पूर्वी तटीय प्रदेशों में ऐसे वन देखे जा सकते हैं । यहाँ-वहाँ बिखरे हुए बहुत कम क्षेत्र में ये वन फैले हुए हैं । यहाँ उगाये जाने वाली प्रमुख पेड़ों में ऐश, सिडार, बीच, ताड़ आदि प्रमुख हैं।

2. सम शीतोष्ण क्षेत्र के वन : ऐसे जंगल पर्वतों तथा पहाड़ी टीलों पर पाए जाते हैं । इस कारण इन्हें पहाड़ी क्षेत्रों के वन भी कहा जाता है । ये अधिकतर क्वीन्सलैंड, न्यूसाउथ वेल्स, विक्टोरिया और तस्मानिया प्रदेशों में पाये जाते हैं । यहाँ के प्रमुख वृक्षों में - नीलगिरी, पैन, चीड़, आदि हैं । जो तेल तथा कागज बनाने के लिए अधिक उपयुक्त हैं ।



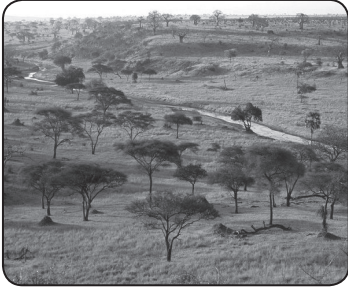
ऑस्ट्रेलिया की प्राकृतिक वनस्पति

3. घास के मैदान : ऑस्ट्रेलियाई घास के मैदान दो प्रकार के हैं -

(1) उष्णक्षेत्रों के घास के मैदान (सवाना)

(2) समशीतोष्ण क्षेत्र के घास के मैदान अथवा डाउन्स। (ढलवा मैदान)

- (i) उष्ण क्षेत्रों के घास के मैदान पूर्व के उन्नत प्रदेशों से पश्चिमी भाग के क्वीन्सलैंड, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया के मध्य तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग में फैले हुए हैं।
- (ii) समशीतोष्ण क्षेत्र के मैदानों में मर्रे डार्लिंग नदियों के मैदान विस्तृत प्रदेश में फैले हैं। ये पशु-पालन के लिए काफी उपयुक्त हैं। इस क्षेत्र में झाड़ियों (भेड़ पालन के लिए उपयोगी), मिचेल तथा अत्रेबेल घास के प्रकार देखे जा सकते हैं।



सवाना घास के मैदान



डाउन्स घास के मैदान

4. छोटी झाड़ियाँ : ये पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण तथा पश्चिमी भागों, दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया और क्वीन्सलैंड के कुछ भागों में देखी जा सकती हैं। वर्षा की कमी के कारण छोटी - झाड़ियाँ मात्र उगती हैं। बबूल के वृक्ष ही यहाँ बहुत होते हैं। यहाँ-वहाँ नीलगिरि के वृक्ष, नागफनी तथा काँटेदार पौधे पाये जाते हैं।



ऐश



सिडार



ताड़



नीलगिरी

5. रेगिस्तानी वनस्पतियाँ : पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के केन्द्र तथा पूर्वी भागों में ऐसी वनस्पतियाँ पायी जाती हैं। यहाँ कैकटस, जाति के पेड़ साल्ट बुश के वृक्ष, नाटे

घास और विविध प्रकार के काँटेदार पौधे उगते हैं । ये वनस्पतियाँ अकाल का सामना कर सकती हैं । अर्थात् अकाल में भी इन पर कोई असर नहीं पड़ता ।

6. प्राणी वर्ग : ऑस्ट्रेलिया में पाये जानेवाले जीव जन्तु पक्षी अन्य कहीं भी नहीं पाये जाते । ये विचित्र जीव जन्तु भी हैं । प्लाटिपस नामक स्तनीय जीव अंडे देती है और बच्चों को दूध भी पिलाती है । इसके पूरे शरीर में ऊनी फर युक्त चमड़े की खाल है । यह अपने बच्चों को अपने पेट के बाह्य थैले में विकसित करती है । “एमू” ऑस्ट्रेलिया का अत्यंत बड़ा पक्षी है । यहाँ मोर की जाति का एक सुंदर पक्षी “लैर” है । कूकुरी नामक जीव जिसकी बोली मानो हँसने का स्वर हो, काला हंस, आदि पक्षी यहाँ पाये जाते हैं । “कांगरू” यहाँ का राष्ट्रीय प्राणी (जीव) है । ‘डिंगो’ नामक भेड़िए जैसा जंगली कुत्ता यहाँ पाया जाता है । वाल्गुभी, मक्की खानेवाले एकड़ना, पेड पर चढ़नेवाले छोटे छोटे कोला, भालू आदि यहाँ पाए जाते हैं । सरीसृप तथा विषैले साँप सर्वत्र सामान्य रूप में पाये जाते हैं ।



कांगरू



वल्गुभी



डिंगो



कोला भालू



एमु



काला हंस

ऑस्ट्रेलिया “अनोखे तथा अन्यत्र न पाए जानेवाले जीव जन्तुओं का देश” है। लगभग 60% पक्षी और जीवजन्तु विश्व में अन्यत्र नहीं पाए जाते हैं । कांगरू ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय प्रतीक है।

कृषि और पशु - पालन

कृषि : ऑस्ट्रेलिया की वृत्ति में कृषि भी एक है । किंतु यहाँ कृषि योग्य भूमि कम है । इस महाद्वीप का विस्तार की दृष्टि से केवल 4% भाग मात्र कृषि योग्य है। जो समुद्री तट तथा नदी के मैदानी भाग में पाया जाता है । कुल जनसंख्या के केवल 44% लोग कृषि में संलग्न हैं । गोरों (श्वेत) का इस वृत्ति में लगना ही एक विशेष बात है ।

वर्षा की कमी तथा वर्षा का अकालिक वितरण, अनुपजाऊ रेगिस्तानी मिट्टी, कृषि योग्य भूमि की कमी तथा सिंचाई की कमी के कारण कृषि क्षेत्र कम हैं । फिर भी ऑस्ट्रेलिया अपनी माँगे स्वयं पूर्ण करते योग्य कृषि का उत्पादन करता है ।

ऑस्ट्रेलिया व्यापक (विस्तृत) कृषि पद्धति का पालन करता है । यहाँ भूमि स्वामित्व का आकार बड़ा है, आधुनिक कृषि क्रम का उपयोग किया जाता है, निर्यात के उद्देश्य से वाणिज्यिक फसलों की उपज को प्रमुखता दी जाती है और विविध फसलों को उगाया जाता है । उदा: गेहूँ, गन्ना, कपास, तंबाकू, मक्का आदि तथा फल, सब्जियाँ भी उगाये जाते हैं ।



गेहूँ



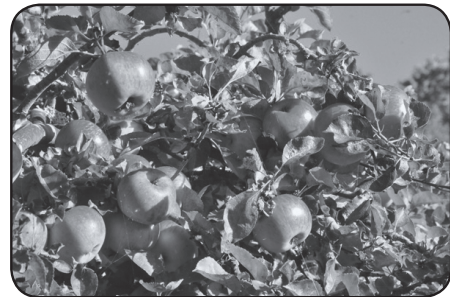
गन्ना



तंबाकू



कपास की खेती



सेब की फसल

गेहूँ : ऑस्ट्रेलिया का अत्यंत प्रमुख खाद्य पदार्थ है । इसे दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया क्वीन्सलैंड, न्यूसाउथ वेल्स तथा विक्टोरिया में उगाया जाता है । मर्रे तथा डार्लिंग

नदियों के मैदानी भाग गेहूँ के लिए प्रख्यात हैं। ऑस्ट्रेलिया अपने गेहूँ उत्पादन का लगभग 70% निर्यात करता है।

यहाँ मक्का एक अन्य खाद्य पदार्थ है। इसे जानवरों के खाद्य तैयार करने के लिए उगाया जाता है। इसे क्वीन्सलैंड तथा न्यूसाउथ वेल्स में अत्यधिक उगाया जाता है। मर्रे - डार्लिंग नदियों के मैदानी क्षेत्र में थोड़ा बहुत धान उगाया जाता है।

गन्ना : ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख वाणिज्यिक फसल है। इसे अधिकतर पूर्वी तटीय क्षेत्र से जुड़े न्यूसाउथ वेल्स से क्वीन्सलैंड तक के प्रदेश में उगाया जाते हैं। एक अन्य वाणिज्यिक फसल “तंबाकू” क्वीन्सलैंड में अत्यधिक उगायी जाती है। विविध प्रकार के फल तथा सब्जियाँ तस्मानिया, विक्टोरिया और -न्यू - साउथवेल्स में उगाए जाते हैं। सेब, अंगूर, अमरुद और नारंगी आदि अधिक मात्रा में उगाये जाते हैं।

पशु-पालन : यह ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख वृत्ति है। ऑस्ट्रेलिया “पशुपालन देश” के नाम से ही प्रसिद्ध है। दुग्ध उत्पादन, मांस, ऊन तथा चमड़ा वस्तुओं के लिए भेड़ तथा गायों का पालन किया जाता है।



भेड़ पालन

भेड़ पालन ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख आर्थिक पेशावृत्ति है। यहाँ अधिक संख्या में भेड़ों का पालन उन उत्पादन तथा कच्चा ऊन निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। विस्तृत घास के मैदान, ऑस्ट्रेलिया के कुँओं द्वारा जल प्राप्ति, ठंडी और शुष्कजलवायु आदि आधुनिक तरीके से भेड़ पालन, विशाल बाजार की सुविधा भेड़ पालन के लिए प्रेरक सामग्री है। यहाँ पाले जानेवाले भेड़ों में लगभग 75% भाग ‘मरिनो’ जाति की भेड़े हैं। जो उत्तम स्तर के ऊन प्रदान करती हैं। विस्तृत भेड़ पालन क्षेत्र को “भेड़ का मैदान” कहा जाता है।

गाय - बछड़ों को मुख्यतः गाय के माँस तथा दुग्ध उत्पादन के लिए पाला जाता है । सवाना प्रदेशों में गाय के माँस के लिए तथा समशीतोष्ण प्रदेश के डाउन्स (निम्न प्रदेश) घास के मैदानी प्रदेशों में दुग्ध उत्पादन के लिए गाय - बछड़ों का पालन किया जाता है ।

खनिज तथा उद्योग धन्धे

खनिज : ऑस्ट्रेलिया में काफी खनिज सम्पदा है । लौह खनिज, बाक्साइट, जस्ता, तिक्कल, ताँबा, मैंगनीज, स्वर्ण, सीसा, यूरेनियम, रांगा (टिन) यहाँ की प्रमुख खनिज हैं । साथ ही इंधन उपयोगी खनिज में कोयला, पेट्रोलियम, तथा प्राकृतिक गैसों भी यहाँ उपलब्ध हैं । इनमें से अनेक खनिजों का निर्यात किया जाता है ।

ऑस्ट्रेलिया लौहे खनिज उत्पादन करनेवाला प्रमुख देश है। यहाँ से अत्याधिक मात्रा में लौहे के खनिज का जापान के लिए निर्यात किया जाता है। विश्व का सर्वाधिक बाक्साइट निक्षेप ऑस्ट्रेलिया में है । पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के कूलगार्डी और कूलगाली प्रसिद्ध स्वर्ण उत्पादक केन्द्र हैं । विक्टोरिया न्यूसाउथ वेल्स तथा क्वीन्सलैंड के कुछ भागों में भी स्वर्ण प्राप्त होता है । सीसा, जस्ता और चाँदी साथ-साथ प्राप्त होते हैं ।

न्यूसाउथ वेल्स ताँबे का अत्यधिक उत्पादन होता है । इसी प्रकार कार्पेटरिया की खाड़ी प्रदेश में मैंगनीज उत्पादन अधिक होता है । ऑस्ट्रेलिया में यूरेनियम (उत्पाद के) निक्षेप अधिक मात्रा में हैं । जो आधिकतर उत्तरी प्रांतो (60%) में पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिण ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं ।

उद्योग धंधे : वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया उद्योग धंधों की प्रगति के क्षेत्र में प्रमुख स्थान रखता है । खनिज सम्पदा, कृषि विकास विज्ञान एवं तकनीकी प्रगति, विदेशी सम्पत्ति विनिमय और विशाल बाजार उद्योग धंधों के लिए अनुकूल रही है । प्रारंभ से ही ऑस्ट्रेलिया का उद्योग विदेशी छत्र छाया पर अवलंबित है । उसपर जापान की देन अधिक है । प्रमुख उद्योग धंधो तथा उत्पादन केन्द्र इस प्रकार है ।

- ✱ लोह - इस्पात उद्योग
- ✱ स्वचालित वाहन उद्योग
- ✱ जहाज निर्माण
- ✱ विद्युत उपकरण

- ✱ कपड़े उद्योग
- ✱ कागज, गत्ता और लकड़ी का गूदा
- ✱ तेल शुद्धीकरण



सिडनी - औद्योगिक नगर

अन्य उद्योग धंधे में विमान निर्माण (सिडनी, मेलबोर्न) आटे की चक्की, मछली तथा फल संस्करण (सफाई) रासायनिक वस्तु निर्माण आदि प्रमुख हैं ।

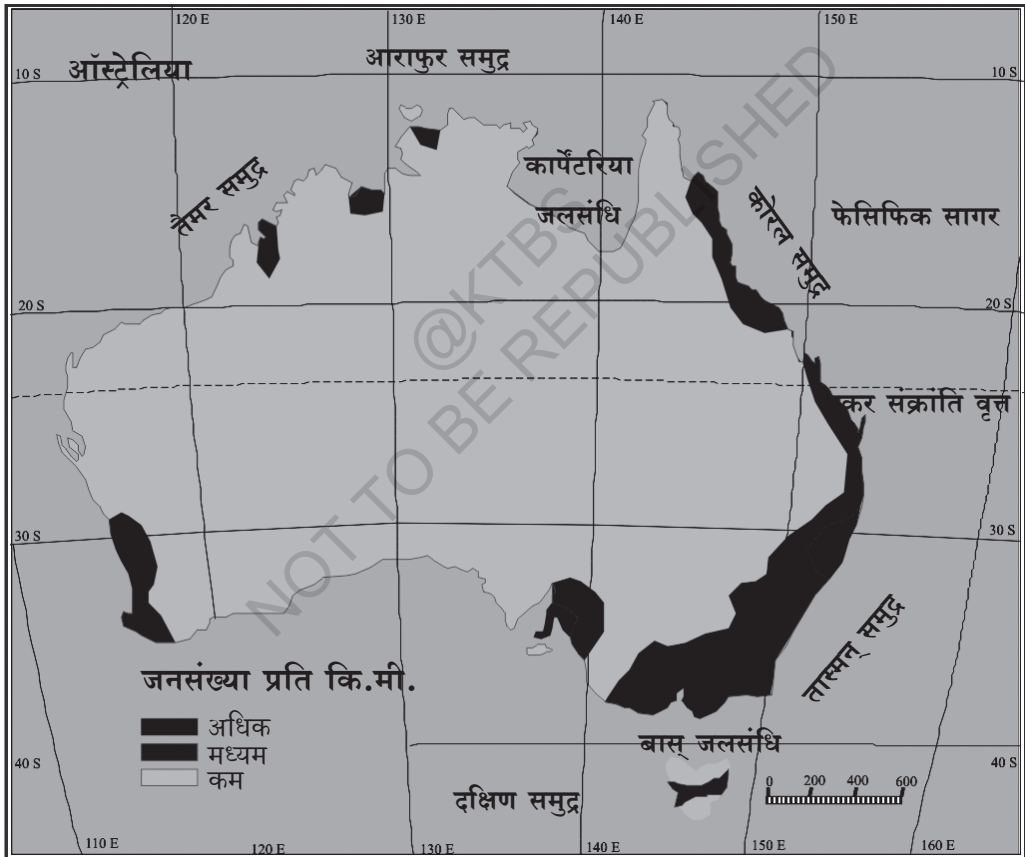
जनसंख्या

विकास/वृद्धि : जैसा कि पूर्व में ही बताया जा चुका है, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप विस्तार में ही नहीं जनसंख्या की दृष्टि से भी छोटा देश है। इसकी कुल जनसंख्या 20.0 मिलियन (2012) है । यह विश्व की कुल जनसंख्या का 0.31% भाग मात्र है । इस महाद्वीप की जनसंख्या 1860 में 1.15 मिलियन थी 1960 में 10 मिलियन, 1980 में 14.8 मिलियन, 1998 में 18.7 मिलियन था। पिछले शतक के अंत में इस महाद्वीप की जनसंख्या की वृद्धि देखी जा सकती है ।

वितरण : ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या के वितरण में दुर्लभता और असमानता है कभी अन्तर्देशीय भाग का अधिकतम भाग निर्जन प्रदेश है । न्यूसाउथ वेल्स अधिकतम जनसंख्या ($\frac{1}{3}$)वाला प्रांत है । विक्टोरिया का स्थान ($\frac{1}{4}$) दूसरा है । इसके बाद क्वीन्सलैंड, दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया और तस्मानिया को स्थान मिलता है । इसके विपरीत साथ ही उत्तरी प्रांत अत्यंत कम जनसंख्या वाला प्रदेश है । देश की जनसंख्या का आधे से अधिक भाग छः नगरों में घनत्व वाला है । उदा : सिडनी, मेलबोर्न, ब्रिस्बेन, एडिलेड, पर्थ तथा न्यूक्यासल ।

जन घनत्व : विश्व की सबसे कम जनसंख्या घनत्ववाले देशों में ऑस्ट्रेलिया भी एक है । इसका कुल जनघनत्व प्रति कि.मी. क्षेत्रफल में तीन जन मात्र हैं । यह एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में भिन्न है । सभी नगर प्रदेश, राजधानी तथा उद्योग धन्धों के केन्द्रीय प्रदेशों में जनघनत्व अधिक है । उदा : विक्टोरिया, न्यूसाउथ वेल्स, तस्मानिया, क्वीन्सलैंड इत्यादि । इस भाग के दक्षिणी पूर्वी भाग में साधारण जनघनत्व है । किन्तु रेगिस्तानी और अर्ध रेगिस्तानी भू-भाग में लगभग 80% भाग में जनघनत्व अत्यंत कम है ।

ऑस्ट्रेलिया में ग्रामीण जनसंख्या (15%) से अधिक नगर की जनसंख्या (85%) की मात्रा है ।



ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या घनत्व

नवीन शब्द :

महाद्वीप, गोंडवाना, थाल आकार, एकशिला, मूंगे का शैलभित्ति, कांगारू, लैर, डिंगो, कूकुबुरा, वल्लभी, और कोलाभालू, जन घनत्व ।

અભ્યાસ

I उचित उत्तरों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. मर्रे और डार्लिंग नदियों का समतल ————— झील से अलग हुई है ।
2. ऑस्ट्रेलिया के चक्रवातों को ————— नाम से जाना जाता है ।
3. ऑस्ट्रेलिया के उष्णकटिबंधीय घास का मैदान को ————— कहा जाता है ।
4. ऑस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा पक्षी ————— ।
5. अंडे देनेवाला एकमात्र स्तनपायी ————— है ।

II दो अथवा तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

6. ऑस्ट्रेलिया को 'अत्यंत समतल महाद्वीप' कहा जाता है । क्यों ?
7. ऑस्ट्रेलिया की स्थिति और परिवेश को समझाइए ।
8. ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख प्राकृतिक विभाग कौन कौन से हैं ?
9. ऑस्ट्रेलिया के नदी जाल के बारे में लिखिए ।
10. ऑस्ट्रेलिया की प्रमुख फसलें कौन कौन सी हैं ?
11. ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख खनिज कौन कौन से हैं ?
12. ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख उद्योग-धन्धों के बारे में लिखिए ।
13. ऑस्ट्रेलिया से निर्यात होने वाले पदार्थों का विवरण दीजिए ।
14. ऑस्ट्रेलिया में जनघनत्व कम क्यों है ?
15. ऑस्ट्रेलिया घास के मैदान के बारे में लिखिए ।



कार्य कलाप

- ♦ एट्लस की सहायता से ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख पर्वत, नदी, झील का नामांकन कीजिए । इसकी एक सूची बनाइए और अस्ट्रेलिया के मानचित्र में पहचानिए।
- ♦ अपने आवासीय स्थल का निरीक्षण कर वहाँ का उपज, वनस्पति, जीवजंतु, पर्वत आदि के बारे में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।





पाठ परिचय

इस पाठ में अंटार्कटिका की स्थिति, विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश, सतही विशेषता, प्राकृतिक वनस्पति, जीव जन्तु, अन्वेषण, अंटार्कटिका समझौता तथा प्रमुख संशोधन केंद्रों के बारे में जानेंगे ।

सामर्थ्य

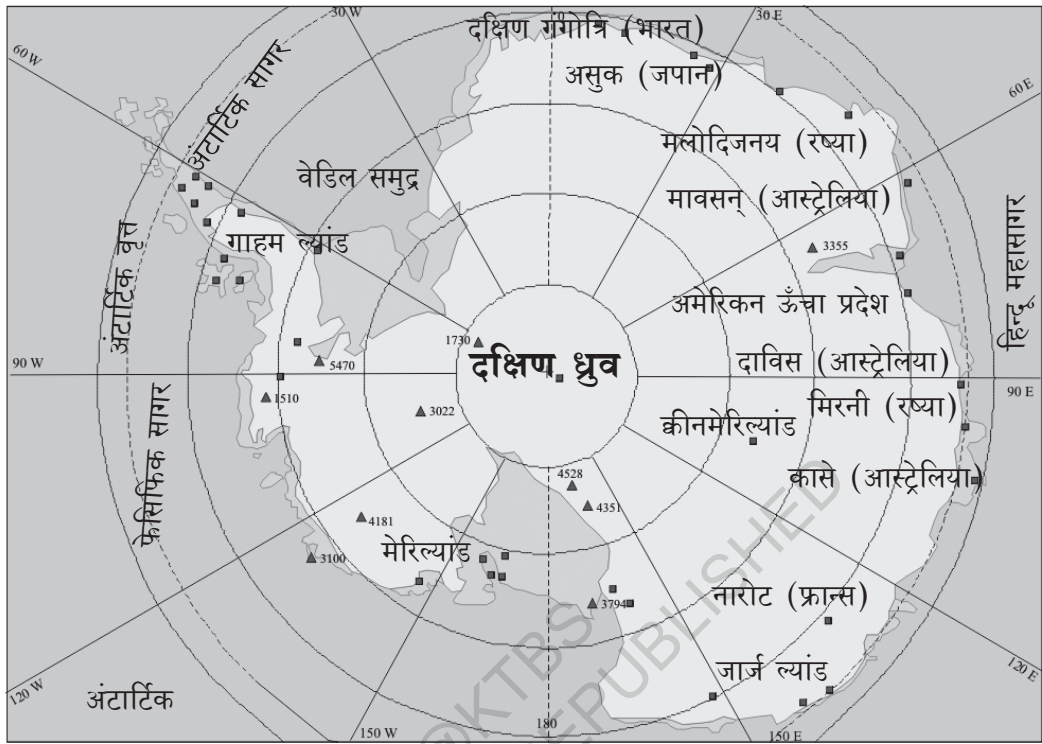
1. अंटार्कटिका की स्थिति विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश जानेंगे ।
2. अंटार्कटिका का सतही लक्षण, भूमि तथा जल भाग के बारे में जानेंगे ।
3. प्राकृतिक वनस्पति और जीव जन्तुओं के बारे में जानेंगे ।
4. अंटार्कटिका की खोज, समझौता तथा संशोधन केंद्रों के बारे में जानेंगे ।

स्थिति, विस्तार तथा भौगोलिक परिवेश

स्थिति : दक्षिण ध्रुव के चारों ओर फैला हुआ भू-भाग अंटार्कटिका है अथवा $66^{\circ}30'$ दक्षिणी अक्षांश में विस्तृत भाग ही अंटार्कटिका है । उत्तरी ध्रुव में स्थित आर्कटिक सागर के विपरीत होना ही इस भाग की विशिष्टता है ।

विस्तार : अंटार्कटिका विश्व का पाँचवाँ बड़ा भू-भाग है । इसका कुल विस्तार 14.2 मिलियन कि.मी. क्षेत्रफल है । यह भारत तथा चीन देश के विस्तार से बड़ा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के विस्तार का डेढ़ गुना है यह अंटार्कटिका भू-भाग ।

भौगोलिक परिवेश : अंटार्कटिका भू-भाग चारों ओर से विशाल जलराशि से आवृत है । यह जलराशी दक्षिणी सागर के नाम से ही जानी जाती है। किन्तु यह अलग नहीं है, हिन्द महासागर तथा पेसिफिक महासागर के मिलने से बनी जलराशी है । लैटिन अमेरिका के दक्षिणी छोर पर स्थित केप हार्न इस भू-भाग के निकट का भू-भाग है । यह 990 कि.मी. की दूरी पर है । इस भाग के पूर्व में हिन्द महासागर, पश्चिम में पेसिफिक महासागर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर अटलांटिक महासागर है।



अंटार्कटिका विभाग

सतही लक्षण

अंटार्कटिका भाग 98% प्रतिशत हिमाच्छादित है। इसके सतही लक्षण अधिकतम बर्फीले ढाकों से परत रूप में ढक (जम) गया है। ऊँचे पर्वत शिखर तथा पठारी भूमि दिखाई पड़ते हैं। बर्फ के ढाकों की परत लगभग 2200 मीटर से भी अधिक मोटी है, जो सर्वत्र श्वेत वर्ण की लगती है। इस प्रकार यह भाग श्वेत खंड, हिम बर्फ का रेगीस्तान भी कहा जाता है तथा अत्यंत शीत (ठंडा) होने के कारण शीतल खंड भी कहा जाता है।

अंटार्कटिका भाग में पर्वत, पठार, घाटी, गुफाओं जैसे भू-स्वरूप हैं। समुद्री तल से कुल 2,300 मीटर ऊँचा अंटार्कटिका भाग भूगोल का सर्वाधिक ऊँचा भू-भाग है। ट्रांस अंटार्कटिका पर्वत श्रेणी इस भाग को दो भौगोलिक भागों में विभक्त करती है।



बर्फीली चट्टानें

1. पूर्व अंटार्कटिका
2. पश्चिम अंटार्कटिका ।

1. पूर्व अंटार्कटिका अटलांटिक तथा हिन्द महासागर की ओर मुख करता है। यह इस भू-भाग का आधे से अधिक भाग ढके हुए हैं। इसलिए इसे 'ग्रेटर अंटार्कटिका' भी कहते हैं। इसके तटीय क्षेत्र में पर्वत घाटी और हिमनदियाँ हैं। इस भाग के मध्य भाग में पठारी भाग है। जहाँ दक्षिणी ध्रुव स्थित है।

2. पश्चिमी अंटार्कटिका यह पेरिफिक सागर की ओर है। इसका कॉफी हिस्सा समुद्र तल से नीचे है। इस भौगोलिक विभाग का अंटार्कटिका प्रायः द्वीप भाग पर्वतों से युक्त है। इसके 'S' आकार का छोर दक्षिण अमेरिका की ओर नुकीला है। इसके निकट कई द्वीप हैं। साथ ही पर्वत शिखर और ज्वालामुखी भी हैं। इस भाग के एल्सवर्थपर्वत श्रेणी में स्थित विन्सन म्यासिफ (5140 मीटर) शिखर ही अंटार्कटिका भाग का ऊँचा शिखर है। 'रॉस' द्वीप में स्थित माउन्ट एरेबस अंटार्कटिका शिखर का अत्यंत प्रमुख जागृत ज्वालामुखी है। यह रास ऐल्यांड में है। प्रिंस चार्ल्स नामक एक अन्य पर्वत यहाँ है।

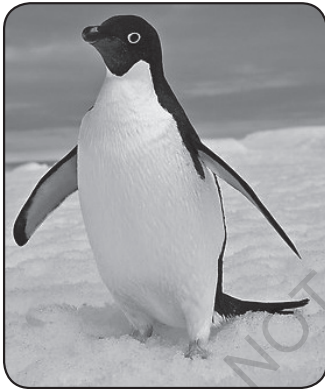
ट्रांस अंटार्कटिका पर्वत श्रेणी के विपरीत छोर पर दो बड़े खाड़ियाँ हैं। वे हैं - रास समुद्र तथा वेडेल समुद्र की खाड़ियाँ।

वनस्पति और जीव-जंतु

जैसा की पूर्व ही बताया जा चुका है, अंटार्कटिका भाग हिमाच्छादित है। प्रतिकूल शीत वातावरण से युक्त है। यहाँ साल में छः मास अंधेरा तथा छः महीने उजाला

होता है। यहाँ जीव जन्तु का जीवन कठिण है। कई शिलावल्क तथा शैवाल यहाँ की प्रमुख वनस्पतियाँ हैं। वे खुले भाग के चट्टानों पर देखे जा सकते हैं। यहाँ के प्रतिकूल जलवायु को झेलनेवाले कुछ जानवर बसते हैं। किंतु चारों ओर के जल भाग में कई प्रकार के जीवजन्तु देखे जा सकते हैं। उदा : पेंग्विन, ह्वेल, सील, क्रील मछलियाँ तथा विविध प्रकार के पक्षी झींगे (छोटी मछली) और इंचाक जैसे क्रील प्राणियों की संख्या काफी है। वे जीव जन्तु समूह में तैरते हुए जीवन बिताते हैं। ऐसे सूक्ष्म जीव समुद्र के बड़े प्राणी तथा मछलियाँ का मुख्य आहार बनते हैं।

समुद्री तट पर असंख्य पेंग्विनों का वास होता है। ये नहीं उड़ने वाले पक्षी हैं। अदिले, एंपरर पेंग्विन तथा चिनस्ट्राप यहाँ के प्रमुख पेंग्विनों की प्रजातियाँ हैं। हिमाच्छादित इस भाग को आनेवाले जहाजों का सर्वप्रथम स्वागत करनेवाले 'अदिले' पेंग्विन ही हैं। इस भाग के निकट के द्वीप तथा समुद्री तट पर सीलों की संख्या अधिक है। 6 प्रकार के सील की पहचान की गयी है। लगातार शिकार के कारण सील खतरे में हैं।



पेंग्विन



सील

- पेंग्विन अपनी संतान अभिवृद्धि के लिए प्रस्तर गुफा का निर्माण करते हैं। उनके घोंसलों को 'रूकरी' कहा जाता है।
- दक्षिण ध्रुव के निकट स्थित इस भाग का 'वोस्टाक' विश्व का अत्यंत कम तापमान का क्षेत्र है। (-89° सेंटीग्रेड)

अंटार्कटिका यान - अंटार्कटिका समझौता

18 वीं शताब्दी के अंतिम काल से ही अंटार्कटिका भू - भाग से संबंधित संशोधन कार्य चल रहा है । कई समुद्री यान इस भाग के शोधन के लिए साहस यान भी कर चुके हैं । संयुक्त राज्य अमेरिकी के नौ सेना प्रमुख चार्ल्स विल्स ने इस महाद्वीप की खोज की। ऐसे में ब्रिटेन के परिशोधक जेम्स क्लार्क रॉस ने (सन् 1841 में) इस भाग के रास समुद्र की खोज की। (इन्हीं के नाम से समुद्री भाग को रॉस समुद्र कहा गया है)

इंग्लैण्ड के राबर्ट फाल्कनस्कॉट इस समुद्र को पार करने में सफल रहे। ये अन्वेषक ग्रीष्म ऋतु के अंतिम अवधि में समुद्र द्वारा इस भू-भाग में प्रवेश किया करते थे । तत्पश्चात अपने शीत कालीन शिबिर (वास) के लिए स्थान बनाते थे ।



स्कॉट



तथा अमुंडसन

अंटार्कटिका भाग को समग्र अन्वेषण 20 वीं शताब्दी के आरंभ में प्रारंभ हुआ। सन् 1909 में इंग्लैण्ड के षाकल्पन ने दक्षिण के 'कांता ध्रुव' की खोज की । नार्वे के रोल्ड अमुंडसन सन् 1911 में 'दक्षिणी ध्रुव' पहुँचे । सा.श 1912 में राबर्ट फाल्कन स्कॉट भी उसी ध्रुव पर पहुँचकर वापस आते समय उनका निधन हो गया। उनकी दिनचर्या (डायरी) से प्राप्त सूचनाएँ आगामी वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए काफी सहायक रहीं। अमेरिका की नौसेना के अमिरल रिचर्ड बैर्ड इस भाग के अन्वेषण के लिए हवाई जहाज के द्वारा सर्वप्रथम (सन् 1929) में पहुँचे। तत्पश्चात इस भाग के अध्ययन के लिए अनेक देश आगे आए ।



आधुनिक संशोधना केंद्र

अंटार्कटिका समझौता:

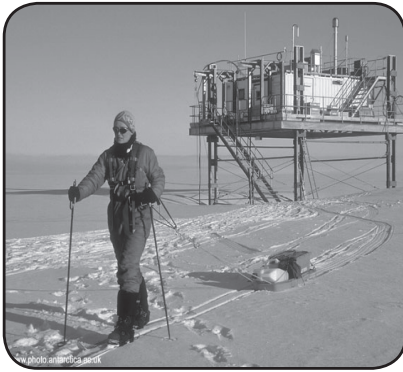
यह अंटार्कटिका को सिर्फ एक वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए देशों के बीच का समझौता है। इसलिए इसे बाद में 'विज्ञान का महाद्वीप' कहा गया। 12 राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने वाशिंगटन डी.सी. (यू.एस.ए) में 1 दिसंबर 1959 अंटार्कटिका समझौते के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किया और इसे 23 जून 1961 में पारित किया गया।

यह समझौता 60° अक्षांश के दक्षिण क्षेत्र के लिए लागू होती है।

सदस्य राष्ट्र: अर्जेंटीना, अस्ट्रेलिया, बेल्जियम, चीली, फ्रांस, जापान, न्यूज़ीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, रूस, इंग्लैंड और अमेरिका सदस्य राष्ट्र हैं।

समझौते के उद्देश्य:

इस समझौते के अनुसार यह भाग वैज्ञानिक अन्वेषण तक ही सीमित है। इस प्रकार इस भू-भाग को 'विज्ञान -भू-भाग' भी कहा गया। वहाँ परमाणु शस्त्रास्त्रों का परीक्षण अपरिहार्य है। कोई भी देश वहाँ की भूमि, जल पर अपना स्वामित्व नहीं पा सकता। यहाँ का पर्यावरण प्रदूषण नहीं किया जाना चाहिए यहाँ आने वाले संशोधक बाहर के जीवियों को लाना मना हैं। साथ ही हवेल (तिमिंगल) मछलियों के शिकार पर भी निषेध है। वैज्ञानिक सूचनाओं के मुक्त विनिमय की स्वच्छंदता है। यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की जानी चाहिए। कुल मिलाकर यह भू-भाग मात्र शांति के उद्देश्यों के लिए सीमित है।



हिमावृत खंड में संशोधन

अंटार्कटिका भू भाग पर विश्व का 90% प्रतिशत भाग का जल मीठा जल बर्फ के रूप में है।

प्रमुख अनुसंधान केंद्र

कई दृष्टियों से अंटार्कटिका भाग सार्वभौमिक अनुसंधान के लिए वैज्ञानिक अभिरुचि उत्पन्न करता है। इस भाग का उद्यम तथा भू-रचना, जलवायु स्थिति, जन जीवन व्यवस्था, जैविक विविधता तथा संरक्षण वहाँ के पर्यावरण प्रदूषण तथा निवारण, त्याज्य पदार्थों का विक्रय और निर्वाहक, तेल के रिसाव से होने वाली दुर्घटनाएँ और इसके लिए किए जाने वाले उपाय का सही तरीका आदि प्रमुख विषय हैं। इसके बारे में संशोधन करने के लिए विश्व के तीस से भी अधिक राष्ट्रों ने अपने संशोधन केन्द्र यहाँ स्थापित किए हैं।

भारत ने भी अपने संशोधन केन्द्र को इस भू-भाग पर स्थापित किया है। सर्व प्रथम स्थान 1981 दिसंबर 6 को एस जेड. कासिम के नेतृत्व में वैज्ञानिकों का दल का गोवा से प्रस्थान हुआ। इस दल को लेकर पोलार (ध्रुवीय वृत्त) सर्कल नौका सन् 1982 जनवरी 9 को अंटार्कटिका भू-भाग पर पदार्पण किया गया। भारतीय दल द्वारा स्थापित प्रथम संशोधन केंद्र “दक्षिण गंगोत्री” के नाम से जाना जाता है। यह सन् 1983 में निर्मित किया गया तथा इसका नामांकन सन् 1989 में हुआ। आज यह मानव रहित तथा भंडारण के लिए मात्र प्रयोग किया जा रहा है।



‘मैत्री’ भारत का संशोधन केन्द्र



‘भारती’ भारत का एक अन्य केन्द्र

दक्षिण गंगोत्री : प्रथम यान के सफलता के बाद अब तक लगभग 50 बार भारत का संशोधन दल अंटार्कटिका भाग पर पहुँच चुका है । “मैत्री” दूसरा संशोधन केंद्र है। यह शिर्माचर ओयासिस पर निर्मित है । (1988-89) यह सर्वक्रतु केंद्र है तथा 26 लोगों के रहने के लिए सुविधाजनक है । यहाँ से 255 मीटर की दूरी पर मीठे पानी की आपूर्ति के लिए ‘प्रियदर्शिनी’ नामक झील का निर्माण भारत ने किया है । मैत्री केंद्र में भू-विज्ञान भूगोल शास्त्र तथा औषधि के बारे में संशोधन कार्य होता है ।

अंटार्कटिका भू-भाग पर 'भारती' नामक एक और संशोधन केंद्र की स्थापना के बारे में भारत विचार कर रहा है। यह विशेषकर सागर के अध्ययन तथा खोज के उद्देश्य की पूर्ति करेगा। आवश्यक सर्वे (निरीक्षण) का कार्य भी अबतक पूर्ण हो चुका है।

नवीन शब्द :

श्वेत खण्ड, शीतल खंड, विन्सन म्यासिफ, एरेबस, हावसे पेंग्विन, हवेल (तिमिंगल) सील, झींगे, अदिले, चिनस्क्राप, क्रिल, भू-भौत, दक्षिण गंगोत्री, मैत्री, भारती।



अभ्यास



I उचित उत्तरों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. अंटार्कटिका महाद्वीप के सबसे निकट का भूभाग _____ ।
2. अंटार्कटिका महाद्वीप की खोज _____ की ।
3. दक्षिण के कांता ध्रुव के खोजकर्ता _____ ।
4. अंटार्कटिका में भारतीय दल द्वारा स्थापित पहल अनुसंधान केंद्र _____ है ।

II दो अथवा तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

5. अंटार्कटिका भू भाग की स्थिति एवं विस्तार को बताइए ।
6. अंटार्कटिका का भौगोलिक परिवेश समझाइए ।
7. अंटार्कटिका भू-भाग के प्रमुख पर्वतों और शिखरों को बताइए ।
8. अंटार्कटिका भू-भाग की वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं का विवरण दीजिए।
9. अंटार्कटिका में भारत के अनुसंधान केन्द्रों का नाम बताइए ।



गतिविधियाँ :

- ♦ अंटार्कटिका भू-भाग में स्थापित विविध देशों के अनुसंधान केंद्रों के चित्र संग्रह कर उनकी तालिका तैयार कीजिए।
- ♦ अंटार्कटिका भू-भाग के विविध वनस्पतियों तथा जीव जन्तुओं की सूची बनाकर उनका चित्र संग्रह कीजिए ।



@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED